★ कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वनवासी सांस्कृतिक समिति, वेदव्यासस्य,
मासिकं मुखपत्रम्

वनवासी संदेश

संस्थापक :—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

यते महि स्वराज्ये

19-2-77

संपादक	सह संपादक
आत्मानन्द शास्त्री	पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति

इमां भूमि पृथिवीं ब्रह्मचारी भिक्षामाजभार प्रथमो दिवं च :-

उड़ीसा के एकमात्र आदर्श शिक्षा केन्द्र :—

गुरुकुल वैदिकाश्रम, वेदव्यास

का

षोडश वार्षिक महोत्सव

दि० १६, १७, १८ फरवरी १९७७ तक त्रय दिवसीय धार्मिक मेला।

धर्म प्रेमी सज्जनों !

आपको जानकर अपार हर्ष होगा कि हिंदुओं के पावन तीर्थधाम वेदव्यास में महा शिवरात्रि तथा बोधोत्सव के अवसर पर आपके प्यारे गुरुकुल वैदिकाश्रम, वेदव्यास का प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी १६ वां वार्षिक महोत्सव फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावास्या सं० २०३३ वि० तदनुसार १६, १७, १८ फरवरी १९७७ बुधवार, गुरुवार, और शुक्रवार को गुरुकुल में मनाया जायेगा।

—: इस अवसर पर :—

वेद पारायण महायज्ञ, वनवासी सांस्कृतिक सम्मेलन, शुद्धि समारोह, ब्रह्मचरियों के द्वारा आसन, व्यायाम, लाठी चालन वेदपाठ, श्लोकान्तक्षरी आदि कार्यक्रम होगा।

३ दिन तक ऋषि लंगर खुला रहेगा

अतः धनीमानी सज्जनों से नम्र निवेदन है कि इस समारोह को सफल बनाने के लिये मुक्त हस्त से तन, मन, धन से सहयोग दें साथ ही सपरिवार आश्रम भूमि में पधारने की कृपा करें।

—: निवेदक :—

पं० देवव्रत
अधिष्ठाता

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती
संस्थापक

पन्नालाल अग्रवाल
प्रधान

छत्तर सिंह बोथरा
मंत्री

वनवासी–सन्देश

उत्कल जनता संस्कृति रक्षा वद्धकटिस्तमः स्तोमहतिदेशः
गुरुकुल सुपानपोषादुदयति वनवासी संदेशः ॥
यो भ्रष्ट खीष्टमत दीक्षित मज्ञलोकम्
संस्कृतय दूरयति तद्धृदयांधकारम् ॥
श्री वेदव्यास सुगुरो कुल सन्निवेशः
सम्पूर्वादेरुदयते वनवासी सन्देशः ॥

वर्ष ११ अंक १	जनवरी १९७७	वार्षिक मूल्य ५ रु एक प्रति ५० पैसे

वेदोपदेश

गणतन्त्र दिवस पर वेदमाता की संदेश

★ उन्नति के खुले मार्गों वाली मातृभूमि ★

ओ३म् यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु ॥

अथर्व १२।१।४

अर्थ :

(यस्या) जिस (पृथिव्याः) हमारी मातृभूमि की (चतस्रः) चार (प्रदिश) विस्तीर्ण दिशायें हैं । (यस्याम्) जिस में (अन्नम्) अन्न होते हैं (कृष्टयः) खेतियें (संबभूवु) होती हैं अथवा (कृष्टयः) मनुष्य (संबभूवुः) मिल कर रहते हैं, मिल कर उन्नति करते हैं (या) जो (प्राणत्) प्राणधारी और (एजत्) चेष्टाशील प्राणि जगत को (बहुधा) अनेक प्रकार से (बिभर्ति) भरणपोषण करती है । (सा) वह (भूमिः) हमारी मातृभूमि (नः) हमें (गोषु) गौवों में (अपि) और (अन्ने) भांति-भांति के अन्नों में (दधातु) धारण करें इनका प्रदान करें ।

हे मातृभूमे ! तेरी चारों दिशायें बड़ी विस्तीर्ण है । वे खूब लम्बी-चौड़ी दूर-दूर तक फैली हुई है । इस प्रकार तेरा भौतिक विस्तार बहुत विशाल है । एक और दृष्टि से भी तेरी दिशायें बड़ी विस्तर्ण हैं । तेरे निवासियों के लिये लम्बे -चौडे मार्ग खुले पडे हैं । उन्नति करने के लिये उनके आगे अनेक क्षेत्र खुले हुए हैं । वे जिस दिशा में चाहें उन्नति कर सकते हैं और जितनी चाहें उतनी उन्नति कर सकते हैं । उनके उन्नति-मार्ग में किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं हैं । हरेक राष्ट्र-निवासी को अपनी उन्नति करने की भर-पूर सुविधायें प्राप्त हैं । प्रत्येक नर-नारी उन्नति करते-करते जो कुछ बनना चाहे वह बन सकता है ।

हे मां ! तेरे निवासी हम सब नर-नारी परस्पर प्रेम से मिल कर रहते हैं, परस्पर मिल कर उन्नति करते हैं । परस्पर मिल कर खेतियें करते हैं, जिनसे हम सब के खाने के लिये भांति-भांति के यथेष्ट अन्न उत्पन्न होते हैं और अनेक व्यापारिक वस्तुओं के निर्माण की सामग्री प्राप्त होती है तथा पशुओं के लिये पर्याप्त मात्रा में चारा उपलब्ध होता है ।

हे मां ! इस प्रकार तू हमारे राष्ट्र के प्राणशील और क्रियाशील प्राणियों का अनेक प्रकार से भरण पोषण करती है। हमारे राष्ट्र के प्राणशील, बलवान, स्वस्थ, शक्तिसम्पन्न और क्रियाशील नर-नारी तो अपने पुरुषार्थ द्वारा तुझ से अनेक प्रकार का भरण पोषण प्राप्त करते ही हैं । हमारे राष्ट्र के अन्य प्राणी भी तुझ से भांति-भांति के सुख-साधन प्राप्त करते हैं ।

जिस में सब के लिये उन्नति के खूब विस्तृत मार्ग खुले हुए हैं । जिस में रहने वाले नर-नारी परस्पर की सहायता करके भांति-भांति की खेतियें करते हैं, जो और भी अनेक प्रकार से अपने ऊपर रहने वाले प्राणियों का भरण पोषण करती हैं । ऐसी महिमा वाली हे मातृभूमि ! तू हमें गौवें प्रदान कर। इन गौवों के दूध, दही और घी के सेवन से हमारे शरीर और मस्तिष्क परिपुष्ट हो जायेंगे । हमारे और हमारी इन गौवों के खाने के लिये भांति-भांति के अन्न तथा चारे भी हे मातृभूमि ! तू यथेष्ट परिमाण में हमें प्रदान कर ।

मातृभूमि की महिमा के इस गान द्वारा वेद ने यह उपदेश दिया है कि राष्ट्र में प्रत्येक व्यक्ति के लिये उन्नति के मार्ग और साधन खुले रहने चाहिये । राष्ट्र के लोगों को परस्पर प्रेम से मिल कर रहना चाहिये और सब को मिल कर कृषि आदि की उन्नति करनी चहिये। सब को बलवान, स्वस्थ और क्रियाशील रहना चहिये । तभी राष्ट्र समुन्नत हो सकेगा । राष्ट्र निवासियों के घर-घर में गौवें रहनी चाहिये और इस प्रकार राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को गौ का दूध, दही, मक्खन और घी खुली मात्रा में पीने और खाने को मिलना चहिये । राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को खाने के लिये यथेष्ट अन्न और गौ आदि पशुओं को खाने के लिये भरपूर चारा मिलना चाहिये ।

सं

पा

द

की

य

स्वागत गणतन्त्र दिवस

आज फिर से २६ जनवरी हमारे बीच में सजधज के आ रही है। २६ जनवरी हमारे गणतन्त्र वर्ष गांठ का पवित्र दिन है।

गणतन्त्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है। हमें अपने इस पर्व दिवस पर यही ध्यान रखना आवश्यक है कि राष्ट्र पुरी तरह सुदृढ़ रहें।

राष्ट्र के हम समस्त नागरिकों को इस पवित्र पर्व पर इन बातों पर विचार करना अत्यावश्यक है कि हम सम्प्रदाय जात-पांत और वर्गभेद के परे रखकर राष्ट्र की सुरक्षा में परस्पर पूर्ण योग देवें।

अत्यन्त हर्ष और उल्लास के विषय है कि प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धीजी ने देश को हर प्रकार से सुदृढ़ बनाने के लिये तथा अमीर-गरीब जातपांत, आदिवासी तथा हरिजन आदि निम्न वर्गों के कल्याणार्थक २० सूत्री कार्य क्रम चालू किया है एवं युवा नेता श्री संजय गान्धी ने देश से कुसंस्कार, कुरीति, अराजकता आदि को दूर करने के लिये ५ सूत्री कार्य क्रम चालू किये है। उसे हम स्वागत करते हैं।

आज चारों ओर गरीबी मिटाओ और समाजवाद लाओ के नारे बडे ही जोर पकड़ रहा है। परन्तु इस से पूर्व "बेईमानी मिटाओ और ईमानदार बनाओ" आन्दोलन का सूत्रपात करना होगा। सरकारी-बेसरकारी प्रत्येक अनुष्ठानों में यह रोग फैलता जा रहा है एवं देश को खोखला कर रहा है सरकार का योजना इसी रोग के चलते फैल मार रहा है।

आदिवासी तथा हरिजनों के उन्नति के लिये केन्द्रियस्तर योजना बन रही है एवं आदिवासीयों को शोषण मुक्त करने के लिये हमारी प्रधान मन्त्री कदम उठा रही है। तदर्थ हम "वनवासी-परिवार" की ओर से कृतज्ञता ज्ञापन करते है।

आशा करते हैं कि आदिवासी क्षेत्रों में अधिकाधिक शिक्षा स्वास्थ्य तथा औद्योगिक कार्य होंगे।

आज संसार में धन का अभाव ही दुःख का कारण नहीं हैं। धनवान भी बडे दुःखी हैं, असन्तुष्ट है।

निर्धन खाने के लिये मरता, धनमानों की मृत्यु अभाव से से नहीं, दुषित स्वभाव से होता है।

स्वभाव पवित्रता के लिये हृदय का पवित्रता होना अनिवार्य है। प्रत्येक नागरिक को प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि वह हर प्रकार के अपराधों से वचता ही रहे। रिश्वत लेना और देना, कम नापना और कम तोलना, खाने, पीने की चीजों और दवाइयों में सिलावट करना, खोटे सिक्के का प्रयोग, चोर बाजारी सम्बन्धी अपराधों से बचे रहने का प्रतिज्ञा करनी होगी।

महर्षि दयानन्द ने अछूतपन के कलंक को मिटाने के लिये बड़ा प्रचार किया औश उसका प्रभाव यह हुआ की महात्मा गान्धी जी ने भी उसे अपनाया और उनके प्रभाव से कांग्रेस का कार्यक्रम बना। बडी सफलता मिली। हमारी प्रधान मन्त्री जी इसे खुब जोर सोर से चलानी चाहती है।

अतः प्रत्येक देश-वासियों को कन्धे से कन्धे मिला कर भारत भर से अछूत पन मिटाने में लग जाना चहिये, तभी राष्ट्र सम्पूर्ण रुप से गणतन्त्र राष्ट्र कहलायेगा।

इस गणतन्त्र के पवित्र दिवस पर प्रत्येक राष्ट्र के नागरिक को राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक उन्नति के लिये कटिबद्ध होकर कार्य करना चाहिये।
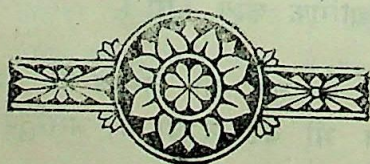
२ दिसम्बर जिनका बलिदान दिवस था

★ अमर शहीद शालिग्राम शुक्ल ★

श्री शालिग्राम को कानपुर की पुलिस हर समय देखती रहती थी। पुलिस ने उन्हें पकड़ने के लिये दिन रात एक कर रखे थे। एक दिन २ दिसम्बर १६३० को पुलिस को पता चला कि श्री शालिग्राम इस समय D. A. V. College में हैं।

कालेज में घूमती हुई पुलिस की आप से भेंट हुई। देखते ही पुलिस इन्सपेक्टर शम्भूनाथ ने आपको ललकारते हुए पकड़ने का यत्न किया। भागते हुए श्री शुक्ल ने पिस्तौल निकाल कर पुलिस पर तीन गोलियां चलाई, जो कि तीन व्यक्तियों को लगी। अन्त में दोनों और से गोलियां चलने लगी तथा मि० हन्ट की एक गोलि श्री शालिग्राम के लगे। इस गोलि के लगने से शुक्ल जी का स्वर्गवास हो गया।

१७ दिसम्बर जिनका बलिदान दिवस था

काकोरी काण्ड के शहीद

★ श्री राजेन्द्रनाथ लाहरी ★

काकेरी षड्यन्त्र के अभियोग में फांसी पाये हुए चार व्यक्तियों में राजेन्द्र बाबू भी एक थे। सम्भवतः १६२२ या १६२३ में आप क्रान्तिकारी आन्दोलन में सम्मिलित हुए।

इनका जन्म सन् १६०१ ई० में पवना जिले के भर्ंगा ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम क्षितिमोहन लाहड़ी था। जो बडे ही उदार विचार के थे। वंग भंग के समय उन्होंने उसमें काफी भाग लिया। राजेन्द्र की प्रारम्भिक शिक्षा गांव में हुई। सन् १६०६ में आप बनारस आये और हिन्दू यूनिवर्सिटी की एन्ट्रान्स परीक्षा पास कर के कालिज में पढने लगे और एम० ए० की परीक्षा पास की। इन्हें अपनी मातृभाषा से भी बड़ा प्रेम था। आपने माताजी की स्मृति में एक पुस्तकालय खोल रखा था। आप एक "अग्रदूत" नामक पत्र के संचालको में से थे। आपका जीवन एक क्रिया शीलता का जीवन था। बाल्यकाल में ही राजेन्द्र ने अपना जीवन देश सेवा में अर्पित करने की प्रतिज्ञा की थी।

आप कभी भी अपने काम का ढिंढोरा नहीं पिटते थे। आप कुछ दिन बाद क्रान्तिकारी दल की प्रान्तीय कौंसिल के सदस्य बन गये। राजेन्द्र बाबू को हमेशा नेता बनने की धून सवार रहती थी।

जिस समय काकोरी में डाका पडा उसी समय आप दक्षिणेश्वर वम्ब केस के सम्बन्ध में गिरफतार किये गये और आपको खुफिया पुलिस ने काकोरी केस में भी शामिल कर लिया। आपसे जबाव तलब किये गये। मुकदमा कायम हुआ और अन्त में कालापानी और फांसी की सजा दी गई।

इसके बाद वीर राजेन्द्र लखनऊ से बाराबंकी लाया गया और ११ अक्टूवर १६२७ का दिन फांसी के लिये तय हुआ। कुछ दिन आप बाराबंकी जेल में रखे गये और बाद में फिर गोंण्डा जेल भेज दिये गये। राजेन्द्र नाथ भी जेल में खूब प्रसन्न रहते हुए गाना गाया करते थे। वे क्षण भर के लिये कभी चिन्तित नहीं हुए।

अन्त में १७ दिसम्बर १९२७ को गोण्डा जेल में फांसी दे दी गई। राजेन्द्र बाबू का बलिदान अभूतपूर्व था। २६ वर्ष की आयु में वह वीर राजेन्द्रनाथ लाहडी अपनी सुनहरी झलक दिखाकर इस लोक से सदा के लिये चले गये।

फांसी पर जाते समय राजेन्द्रनाथ 'लाहरी' का गान

हम सरे दार बसर शौक जो घर करते हैं,
ऊँचा सर कौम का हो नजर यह सर कहते हैं।
सुख जाये न कहीं पौदा यह आजादी का,
खून से अपने इसे इसलिये तर करते हैं।
इस गुलामी में तो कोई न खुशी आई नजर,
खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं।
सर तन से जुदा कर दो ये हैं हाथ तुम्हारे,
पर रुह से जजबाते जुदा कर नहीं सकते।

—: स्वदेश प्रेम :—

जो भरा नहीं हैं भावों से, बहती जिस में रस धार नहीं।
वह हृदय नहीं पत्थर है, जिस में स्वदेश का प्यार नहीं।

मैथिली शरण गुप्त

जिसको न निज गौरव तथा, निज देशका अभिमान है।
वह नर नहीं पशु है निरा, और मृतक समान है।

२३ जनवरी को जिनका ८० वां ज़न्म दिवस है

क्रान्ति के अग्रदूतः श्री सुभास चन्द्र बोष

● श्री कुशलदेव शास्त्री

एक दिन एक नौजवान चद्दर ओढे, कन्धे पर दुपट्टा ड़ाले, नेत्रोंपर उपनेत्र लगाये, कलकत्ते की लम्बी-चौड़ी सड़कों पर लम्बे-चौडे डग भरता हुआ चला जा रहा था कि अचानक उसकी दृष्टि एक सुन्दर नवयुवती पर पड़ी जो कि अट्टालिका पर बैठी अपने सुन्दर बालों को संवार रही थी। नवयुवक उसकी ओर देखता ही रह गया। नव युवक को इस प्रकार देखते हुए देखकर नवयुवती ने कहा—

जो आबरू की तेगे अलम देखते हैं,
वो पहले सर अपना कलम देखते हैं।
जो होते हैं गैरों की सूरत पै शैदा,
हमेशा रूजो अलम देखते हैं।

क्या आप जानते हैं नारी के इस प्रकार कहने पर नवयुवक ने क्या कहा था ?

हरशै में देखा प्रभु नजर आया,
उसी को हम अपना बलम देखते हैं।
न ख्वाईश है तेरी न सूरत पै शैदा,
मुसव्विर की हम तो कलम देखते हैं।

यही नवयुवती अन्त में जाकर आजाद हिन्द सेना की केप्तीन बनी, जिनका नाम श्रीमती लक्ष्मी था और यही नवयुवक सुभासचन्द्र "बोष" था जो कि अन्तिम दम तक देश के लिये जिया व मरा।

प्रिय पाठको ! क्रान्ति के अग्रदूत सुभाषचन्द्र का जन्म १८९७ ई० २३ जनवरी को कटक में हुआ था। बाल्यकाल से ही सुभास की बुद्धि अति प्रखर थी। उन्होंने स्कूल की पढाई यथाशीघ्र समाप्त करके प्रेसिडेन्सी कालेज में प्रवेश लिया। इसी समय डा० सुरेश मिर्जापुर स्ट्रीट के मेड़िकाल मैदान में एक नये आश्रम की स्थापना हुई। जिसके द्वारा देश सेवक नव जवान कार्यकर्त्ताओं का निर्माण होता था। जब सुभास को इस आश्रम का पता चला तो अपने भाई शरद् चन्द्र "बोष" सहित अपना योगदान आश्रम को देते हुए यह प्रतिज्ञा की कि—आजन्म ब्रह्मचारी रह कर देश-सेवा करूंगा।

भाइयों ! विद्यार्थी वर्ग ही नहीं अपितु भारतीय जन जन भी भारत मां की आँसूओं को हृदयरक्त जल से धोने वाले श्री सुभास बाबू को नहीं भुला सकेगा जिन्होंने कि सी० एफ्० ओटन नामक एक अंग्रेज प्रो० के "You Black monkey" अर्थात् 'तुम काले बन्दर हो' इस अपमान जनक वाक्य का प्रतिशोध उसके गौर वर्ण गाल पर पांचो अंगुलियों की मोहर लगाते हुए या यूँ कहिये कि गालों को तमाचों का रसास्वादन कराते हुए दिया था। इस प्रकार भारत की शान पर किंचित मात्र भी आंच न आने देते हुए एफ० ए० और बी० ए० परीक्षा पास कर कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से लन्दन में आई० सी० एस० परीक्षा भी उत्तीर्ण की और कुछ समय बाद स्वदेश आने से पहिले ही भारत मन्त्री के हाथो में गुलामी की नौकरी का त्याग पत्र देते हुए मन में सोचा और प्रतिज्ञा कि की— "हम आजादी हासिल करके रहेंगे या मर जायेंगे।"

जैसे ही सुभास स्वदेश आये तो उन्हें अपनी इच्छा के अनुकूल वातावरण प्राप्त हुआ । गान्धी जी के नेतृत्व में असहयोग की दुन्दुभि बज चुकी थी। सुभास बाबू ने भी दिग्गज नेता देशबंधु चितरञ्जन दास से भेंट कर असहयोग आन्दोलन के इस पहिले मोर्चे में अपनी अन्तः करण में छिपी हुई क्रान्ति की चिन्गारियों को ऐसा चमकना शुरु किया कि शीघ्र ही राह में काटें बन गये और देश भक्ति के फल स्वरुप छः मास की सजा प्राप्त की । सजा सुनने के उपरान्त तीक्ष्ण व्यंग कसते हुए सुभास ने कहा कि :- 'केवल छ मास ? क्या मैंने मुर्गी चुराने का अपराध किया है? ऐसे था वह वीर साहसी सुभास ।

जेल से छूटने के बाद फिर सुभास बाबू को सरकार ने २४ अक्टूबर १९२४ को गोपीनाथ नामक एक तरुण क्रान्तिकारी के हाथों मि० डे० नामक एक अंग्रेज हत्या की आड़ में गिरफ्तार कर वर्मा की राजधानी "माण्डले' भेज दिया । सुभास जी की गिरफ्तारी का करुण समाचार सुन स्व० श्री देशबन्धु जी भी कह उठे थे कि—

"यदि मातृभूमि का प्रेम एक अपराध है तो मैं भी अपराधी हूँ । अगर सुभास बोष अपराधी घोषित किया जाता तो मैं भी उतना अपराधी हूँ, जितना कि सुभास चन्द्र बोष"

मई मास १९२६ में जेल छूटने के बाद फिर दो बार सुभास बाबू को ब्रिटिश सरकार ने जेल के सीखचों में बन्द कर दिये परन्तु देशभक्त की भारत मां की पारतन्त्र्य रुपी बेड़ियों को मुक्त करने की भावना को जेल की दीवारें न दबा सकी । जैसे ही सुभास बाबू जेल से छूटे तो उन्होंने मथुरा में होने वाली नौजवान भारत सभा के अधिवेशन में एक ऐसा भाषण दिया जिसका नवयुवकों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा । फल स्वरूप सुभास अनिश्चित काल के लिये जेल में डाल दिये गये । सुभास का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरने लगा ।

सारा देश तिलमिला उठा । अन्त में सरकार ने उन्हें विवश होकर जेल से छूटते ही विदेश चले जाने की शर्त पर छोड़ दिया । सुभाष बाबू विदेश चले गये । इसी बीच बोस के पिताजी अत्यधिक बीमार हो गये । सुभाष जी को भी दर्शन करने की उत्कट लालसा थी, लेकिन दुःख है कि उनके आने से पहले ही उनके पिताजी के देहान्त हो गया और उन्हें सरकार के आदेशानुसार पुनः विदेश लौट जाना पड़ा । अब और अधिक सुभाष बाबू मातृभूमि की गोद से बाहर रहना सहन न कर सके और वे एक इटालियन जहाज से स्वदेश आ गये । स्वदेश आते ही सुभाष बाबू को गिरफ्तार कर मार्च १६३७ में मुक्त कर दिया गया ।

कुछ समय बीत जाने पर कलकत्ते में हालवेल स्मारक के विरुद्ध आन्दोलन शुरु हुआ । नेताजी ने इसमें अपनी पूरी शक्ति का परिचय दिया । फल स्वरुप नेताजी को कारावास का मेहमान बन जाना पड़ा । देश भक्त ने कृष्ण मन्दिर में अनशन कर दिया और सोचा कि—"या तो मैं अनशन के फलस्वरुप शहीद हो जाऊंगा या क्रान्ति का ईन्धन बन जाऊंगा अगर सरकार छोड़ देती है तो छूठते ही फरार हो जाऊंगा ।" अन्ततोगत्वा सरकार ने उन्हें कारावास से मुक्त कर उन्हीं के कलकत्ते वाले मकान में नजरबन्द कर दिया । कूटनीतिज्ञ सुभाष ने २६ जनवरी १६४१ में ६२ के लगभग खुफिया पुलिस वालों की आंखों में धूल झोंक, नजरबन्दी का चक्रव्यूह तोड़, मौलाना पठान का बेश बना काबुल होते हुए जर्मनी में जाकर हिटलर से हाथ मिलाया । इस भेंट में सुभाष को हिटलर के द्वारा "डिप्टी फ्युहार" की उपाधि के साथ एक शक्तिशाली वायुयान तथा सन्देश प्रसारण के लिये ट्रान्समीटर भी प्राप्त हुंआ ।

"इसके बाद सुभाष जापान पहुंचे, वहां १६४१ में ११ अक्टूबर को आजाद हिन्द सेना की स्थापना हुई । तदन्तर

सिंगापुर में रासविहारी बोस ने नेताजी का स्वागत करते हुए कहा—पिछले २० सालों से मैं अपनी माँ की गोद से दूर हूँ कितनी बार भारत माँ ने हाथ बढाकर मुझ जैसे जिद्दी शिशु को अपनी गोद में घसीटना चाहा मगर माता के हाथ में हथकड़ियां जकडी हुई थी, इसलिये मैं नहीं गया। पर आज मेरा दूसरा भाई उम्र में छोटा मगर लड़ाई में मुझ से आगे सुभाष मसीहा बनकर इन्सानियत के घावों को आजादी के साए से ठीक करने आया है। हम २० लाख नंगे-भूखे प्रवासी भारतीय स्वतन्त्रता के दूत का स्वागत करते हैं और हम चाहते हैं कि वे हमारा नेतृत्व करें। रासविहारी "बोस" के बाद सुभाष मंच पर खडे हुए और उन्होंने कहा :—

"मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा

आजादी का इतिहास नहीं कालि स्याहि से लिख पाती।
उसके लिखने के लिये खून की जरुरत होती है॥"

"मुझे इस में रत्ती भर भी संदेहनहीं कि जब हम हिंदुस्तानी सीमा के अन्दर प्रवेश करेंगे उस वक्त हिंदुस्तान के अन्दर एक विशाल क्रांति होगी। जिस में एक भी ब्रिटीश सत्ताधारी टिक न सकेगा। मैं भगवान को साक्षी कर यह पवित्र शपथ ग्रहण करता हूँ कि भारत को आजाद करने के लिये अन्तिम दम तक लडता रहूंगा। स्वतंत्रता मिल जाने के उपरांत भी जब कभी आजादी की रक्षा के लिये मेरी जरुरत होगी तो अपने रक्त की अन्तिम बूँद भी माँ के दिव्य चरणों पर चढ़ा दूंगा।

तदनंतर भारत के हरेक सिपाही व अधिकारी ने तिरंगे झण्डे के नीचे खडे होकर देश पर मर मिटने की प्रतिज्ञा की और "कदम-कदम बढ़ाये जा" इस प्रयाण गीत के साथ

"जय हिंद" व "चलो-दिल्ली" का नारा लगाते हुए क्रांति की गाड़ी अग्रसर हुई । सुभाष ब्रिगेड के रंगून पहुंचने से पूर्व आजाद हिंद सरकार ने ब्रिटेन व आमेरिका के विरुद्ध युद्ध का नागडा बजा दिया । इसके बाद एक फौज भारतीय सीमा की ओर रवाना हुई और मई १६४२ में भारतीय स्थल "माऊडेक" में प्रवेश कर "शुभ सुख चैन की वर्षा बरसे गाने के साथ तिरंगा ध्वज बडी शान के साथ लहरा दिया गया । लेकिन कुछ काल बाद ऐसी परिस्थिति हुई की जापानी और जर्मन सेना ने घुटने टेक दिये । जय की आशा पराजय में बदल गई, फिर भी आजाद हिंद सेना ने लडकर प्राण देने का निश्चय किया । तदनुसार बहुत से सिपाही आगे बढ़ कर लडे, गिरफतार हुये और शहीद हो गये ।

इसके बाद रणांगन में बरसते बमों के नीचे निर्भयता पूर्वक खडे वाले सुभाष कई बार भारतीय स्थिति पर रेंगून रेडियो से बोलते रहे और अगस्त १६४५ में कर्नल हबीबुर्रहमान के साथ टोकियो के लिये रवाना हो गये ।

हबीबुर्रहमन के अनुसार दुर्भाग्य से मार्ग में हवाई दुर्घटना हो गई । नेताजी के सिर में चोट आई और हस्पताल में छः घन्टे बाद देहावसान हो गया । उनका कहना है कि नेताजी जिस समय चिता पर चढाये गये उस समय मैं भी मौजूद था । बहुत से लोग नेताजी को अब भी जीवित मानते हैं । यदि नेताजी जीवित होता तो भारत की दशा को देखकर अवश्य ही भारतीय सम्मान की रक्षा के लिये अज्ञातवास करने की अपेक्षा अपने पवित्र रक्त की अन्तिम बूंद को भी भारत माँ के दिव्य चरणों पर चढ़ा देते । सुभाष ने जो भी कुछ किया जन हित और भारत माँ की रक्षार्थ किया । उन्होंने एक बार कहा था कि -जनता जो नहीं चाहती वह सुभाष भी नहीं चाहेगा पर यदि आप डूबना चाहेंगे तो सुभाष अपने प्राण दे कर भी आपकी रक्षा करेगा ।

क्रांति के अग्रदूत सुभाष चन्द्र बोस ने अपना सर्वस्व भारत माँ की बलि वेदी पर नौछावर करके भारत के नवयुवकों में स्वतंत्रता के लिये मर-मिटने की अभीलाषा पैदा की, जो कि भावी संतति के दिलों में सदा के लिये बनी रहेगी ।

●

नव वर्ष—मंगलम्

प्रिय पाठक वर्ग,

हम इस शुभ अवसर पर आप एवं आपके सभी इष्ट मित्रों तथा "वनवासी-सन्देश" के ग्राहकों तथा गुरुकुल प्रेमियों के प्रति हार्दिक शुभ कामनायें समर्पित करते हैं :—

सर्वे सु सुखिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥
होवें सुखभागी सभी, सभी रहें निरोग ।
होय भला सबका घना, रहे दुःखी मत लोग ॥

Happy new year

May Happiness come to all
With Freedom from Disease!
May all see the Best of life
and from Mis' Ry Release ! !

●

आजादी हल मांग रही है

बचपन मुरझा रहा, बुढ़ापा दर्द डुबोया है,
यौवन नाच और गाने में खोया-खोया है।
करनी की कथनी से बहुत पुरानी अनबन है,
...कैसे हो साकार स्वप्न जो गाया संजोया है?

आजादी हल मांग रही है रोजी रोटी का,
रेशम से झगड़ा जारी है फटी लंगोटी का।
मालाओं को तोड़ कौन फांसी को चुमेंगा—
लगा रहे हों स्वार्थ जोर जब एड़ी-चोटी का?

इस काबिल तो बनो कि भावी पीढ़ी यह माने—
हर कलंक का दाग लहू से हम ने धोया है।
कैसे हो साकार स्वप्न जो गया संजोया है?

राजकुमार चतुर्वेदी चंचल

मैं समझता हूँ—दिल और दिमाग को बन्द कर लेना अन्धेरा है, सर्वदा मैं—मेरा के परकोटे में ही घिरे रहना अन्धेरा है, शुभ में अनास्था और अशुभ का आँकत अन्धेरा है, आस्थान में निहीत श्रद्धा और सत्य निरपेक्ष तर्क अन्धेरा है, अपने प्रति अति मृदुता और दूसरों के प्रति अतिकठोरता अन्धेरा है, न हंसना और न मुस्कराना अन्धेरा है, सुन्दर असुन्दर, सुरीला-बेसुरीला में अन्तर न कर पाना अन्धेरा हैं, उद्यम- अभय मैत्री -आनन्द के चतुवर्ग से विमुख होना अन्धेरा हैं, जी लगाकर न जीना अन्धेरा है, मुरझा कर मरना अन्धेरा है। सोचता हूँ शायद अन्धेरें की यह मोती पहचान मुझे समय आने पर प्रकाश को चीन्हने की शक्ति दे।

—: दत्तोपंत :—

नारायण दत्त

क्या आप जानते है

१—कि ओड़ीसा में वैदिक धर्म प्रचारार्थ योग्य प्रचारक प्रचारिका तथा वैदिक संस्कृत के पठन-पाठनार्थ उड़ीसा के वनवासी तथा हरिजन छात्र-छात्राओं को उत्तर-भारत के उपदेशक दयानंद ब्राह्म महाविद्यालय हिसार, दयानंद उपदेशक विद्यालय यमुना नगर, गुरुकुल किरठल (मेरठ), गुरुकुल ततारपुर, गुरुकुल गदपुरी (गुड़गांवा), गुरुकुल सिकंदरावाद, दयानंद मठ दीना नगर, गुरुकुल खेड़ाखूर्द, गुरुकुल महाविद्यालय भैंसवाल, गुरुकुल विश्व विदालय कांगडी, कन्या गुरुकुल हाथरस, कन्या गुरुकुल देहरादून, कन्या गुरुकुल बडौदा, आदि स्थानों में भेजा गया है। ये लोग उड़ीसा में आकर ऋषि का संदेश गुंजायेंगे।

२—कि ओड़ीसा में स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती द्वारा निम्न लिखित गुरुकुल स्थापित किया गया है :- १— गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास, (सुन्दरगड़), २— गुरुकुल आमसेना (कलाहांड़ी), ३—आर्य कन्या गुरुकुल तनरडा (गंजाम) ४ —गुरुकुल संस्कृत विद्यापीठ भजपुर, (सुन्दरगढ़), ५—गुरुकुल करुणाकर वेद विद्यालय, दशरथपुर (कटक), ६—गुरुकुल पिंछा वणिया (वालेश्वर), ७—गुरुकुल धामनगर (वालेश्वर)—इन सभी गुरुकुलों में जात-पांत तोड़कर अस्पृश्य कहे जाने वाले पान, चमार आदि बच्चों के साथ तथा धृण्य ओराम, मुंडा आदि बनबासी बच्चों के साथ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि कुलीन बच्चे एक साथ रह कर संस्कृत, इंगलिस, गणित आदि आधुनिक विषय पढाने के साथ-साथ वैदिक साहित्य का भी ज्ञान कराया जाता है। प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय कराया जाता है। साथ ही इन्हें कर्मठ देशभक्त, समाज सेवी तथा कर्मी तयार किया जाता है।

३—कि ओड़ीसा एक पिछड़ा हुआ प्रदेश है । साथ ही इस प्रदेश में प्रतिवर्ष वाढ़ तथा अकाल पड़ता है । यहांपर ६० फिसदी वनबासी तथा हरिजन लोग रहते है । उस समय गरीब अनाथ, असहाय बच्चों को ईसाई मिशनरी लालन पालन करते हुए ईसाई बना लेता हैं । अतः इस षड़यन्त्र से इन गरीब मासुम बच्चों को उद्धार करके वैदिक धर्म की शरण में लाने के लिये गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास में "दयानंद—शिशु-भवन" का स्थापना किया गया है । जहां पर अनाथ, असहाय बच्चों को रखा जाता है । अभीतक इस अनाथाश्रम में १०० बच्चे अध्ययन कर रहे है । इन बच्चों के प्रत्येक खर्च आश्रम ही वहन कर रहा है । इसी प्रकार वालेश्वर तथा फुलवाणी जिला में भी अनाथाश्रम खोलने का विचार है ।

४—कि गरीब वनवासी तथा हरिजनों भाइयों को ईसाई मिशनरीयों के सिकंजो से छुडाने के लिये निम्न लिखित दातव्य औषधालय चल रहें हैं । १-महर्षि दयानंद दातव्य औषधालय पानपोस, २-महर्षि दयानंद दातव्य औषधालय गुढ़ीयाली, ३-महर्षि दातव्य औषधालय चट्टा, ४—महर्षि दातव्य औषधालय पिछा-वणिया, ५—महर्षि दातव्य औषधालय केल्मेमाहा,

५—कि ओड़ीसा के फुलवाणी जिला जंगलों से परिपूर्ण है । यहां पर सरकार की और से रोगियों के लिये कोई प्रबंध नहीं है । इसी कारण यहां पर ८० प्रतिशत ईसाई हो गये । अतः यहां पर ६ शय्या विशिष्ट एक एलोपेथिक हेल्थ सेन्ट्री खोला गया है ।

६—कि गरीब बनवासी और हरिजन भाइयों को शुद्ध जंगली जड़ीबुटी से निर्मित आयुर्वेदिक औषधी सुलभ मूल्य से वितरण करने के लिये "गुरुकुल आयुर्वेदिक फार्मेसी" खोला गया है ।

७—कि ओड़ीसा में ईसाईयत क्षेत्र में स्वामी ब्रह्मानन्द द्वारा संस्थापित निम्न लिखित हाईस्कूल चल रही हैं । १- एस्. टी. डी. ए. वी.

हाईस्कूल गुनुपेई, २- डी. ए. वी. हाईस्कूल राउरकेला, ३- महर्षि दयानंद हाईस्कूल पावुरिया (फुलवाणी), ४-महर्षि दयानंद हाईस्कूल कार्टिंगिया (फुलवाणी)

८—कि १०दयानन्द मिडिल स्कूल, २० रात्री पाठशाला चल रहे है।

९—कि उड़ीसा में वैदिक धर्म प्रचारार्थ निम्न लिखित मासिक पत्रिका स्वामी ब्रह्मानंद जी के देखरेख में प्रकाशित होती है। १- वनवासी-संदेश (हिन्दी मासिक), २- आश्रम-ज्योती (ओड़ीआ मासिक), 3- Voice of Vedic Cultur (इंगलिस त्रैमासिक) ४- उत्कलोदय (संस्कृत) १९७९ दिसम्बर से प्रारम्भ हुई।

१०—कि भारतीय संस्कृति की प्राण स्वरुप राष्ट्र की आत्मा गौ है। अतः उन के रक्षा करना प्रत्येक हिन्दुओं (आर्यों) का परम कर्त्तव्य। इसी उद्देश्य से स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी के द्वारा गुरुकुल बेदव्यास गोशाला तथा श्रीवत्स गोरक्षाश्रम संचालित हो रहा है। इस में लंगडे, लुल्हे, अपाहिज गोंवों की रक्षणा वेक्षण होती हैं।

११—कि गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यस ही वह संस्था है, जिसने अपनी प्रांतीय भाषा उड़ीआ में महर्षि दयानंद सरस्वती कृत प्रत्येक ग्रन्थ तथा वैदिक साहित्यके प्रकाशनार्थ "उत्कल वैदिक साहित्य संस्थान" स्थापित करके संस्कार विधि, पञ्च महायज्ञ विधि, महामंन्त्र गायत्री, आश्रम भजनावली, व्यवहार भानु, गो करुणा निधि, आर्य समाजर परिचय, महान् दयानन्द आदि ग्रंथ तथा अराष्ट्रिय प्रचार निरोध साहित्य प्रकाशन करके वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार कर रहा है।

१२—कि वैदिक धर्म प्रचारार्थ "शान्ति आश्रम प्रेस" चल रहा है।

गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास में —

वेद भगवान स्थापनार्थ
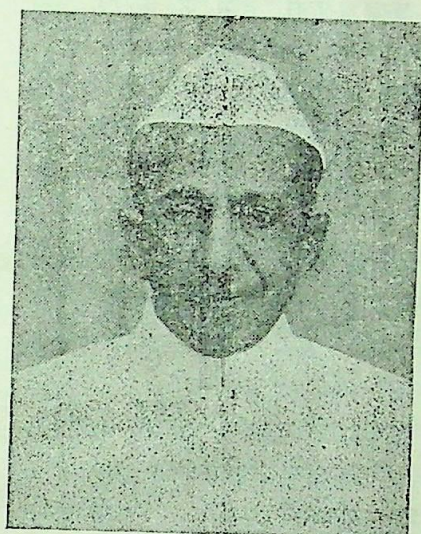
वेद मंदिर
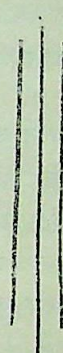
महा महिम मान्यवर

उप-राष्ट्रपति श्रीयुत बी. ड़ी. जत्ती द्वारा उद्घाटन

आपके प्रिय गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता का रक्षार्थ अहर्निश सतत प्रयत्न शील है। हर समय समाज से अत्याचारित, प्रपीडित घृणित, निष्पेशित, निःसहाय, वन्य, पार्वत्य इलाका में असभ्य, अर्धनग्न मानवों के प्रति सेवा तथा शिक्षा का प्रचार करते हुए "समानों मंत्रः समिति........का पाठ पढाता आ रहा है। जिस जाति के प्रति शताब्दी तक सवर्ण जाति घृणा करते हुए उन्हें समाज से दूर रखा। आज उसी जाति के बालकों के मुख से प्रातः और सायं वेद मंत्रों का सुमधुर ध्वनि सुनाई देता है। इस ध्वनि को सुन कर मानव आश्चर्य हो जाता है। इस दृश्य को देखने के लिये अनेक सरकारी वेसरकारी आफिसर

तथा बुद्धिजीवी वर्ग हर समय इस पवित्र भूमि में पदार्पण करते ही रहते हैं। इस आश्रम की सुगन्धी दिनो दिन फैलता जा रहा है।

महर्षि वेदव्यासजी की जन्म स्थली होने के कारण उस महर्षि की स्मृति में यहाँ वेदों का अध्ययन, अनुसन्धान, अनुशीलन, होना चाहिये, क्यों की महर्षि वेदव्यास जी ने यहीं पर बैठ कर लुप्त प्राय वेदों की रक्षा के लिये वेद शाखा का प्रणयन किया था।

उसी स्मृति का पुनर्जागरण के लिये उत्कल के एक पूण्यमयी मातृ शक्ति के कोख से उत्पन्न हुये कर्म योगी पूज्य पाद स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती हैं। जिन्हों ने १९५० से इस पवित्र भूमि में आकर उस ऋषि के अमूल्य संदेश को उत्कल के कोने कोने में पहुँचाया। आज पूज्य स्वामी जी का परिश्रम मूर्त्त रूप धारण किया है, तथा वह इस आश्रम के जीवन में एक इति बन गया है। वह दिन था १३ जनवरी १९७७। जिस दिन स्वामी जी महाराज के अथक परिश्रम से गुरुकुल वैदिक आश्रम के विशाल प्रांगण में एक सुरुचि पूर्ण वेद भवन निर्माण हुआ है। उस में चारों चान्द तब लगा कि जब उस भवन का उद्घाटन तथा वेद स्थापना करने भारतीय संस्कृति के पृष्ठ-पोषक भारत के महामान्य उप-राष्ट्रपति **श्रीयुत बी. डी. जत्ति** जी ने इस पवित्र भूमि पर पधारे, तथा बड़ी श्रद्धा से इस कार्य का सम्पन्न किया।

चतुर्धाम वेद भवन न्यास के मंत्री श्रीयुत पूज्य सत्यदेव जी ब्रह्मचारी के अत्यन्त आभारी हैं कि जिन के सतत सत्प्रयत्नों से "महामण्डलेश्वर पूज्य स्वामी गंगेश्वरानंद जी का संपादित **"वेद भगवान्"** को हमने प्राप्त किया। (यह चारों वेदो का एक ही जिल्द में एकत्र किया गया विशाल ग्रन्थरत्न है)

इस विशाल समारोह में सम्मिलित होने के लिये, भारत के विभिन्न प्रान्तों से यथा :—दिल्ली, कलकत्ता, टाटानगर, कटक, बालेश्वर, पुरी, सम्बलपुर, गंजाम, राजगांगपुर से सहस्राधिक नर-नारियों का आगमन हुआ था ।

वेद भगवान का जलूस

दि० १२-१-७७ को गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास से वेद भगवान् का विशाल जलूस विख्यात लौह नगरी राउरकेला में बड़े ही शानदार के साथ प्रारम्भ हुआ । जिस में गुरुकुल वैदिकाश्रम के अध्यापक तथा ब्रह्मचारी गण, S. T. D. A. V. High School लुर्गेई, D. A. V. High School बिसरा रोड़, राजगांगपुर राष्ट्रीय विद्यालय, खालसा हाईस्कूल राउरकेला के छात्रों तथा नगर वासी योग दिये थे । ब्रह्मचारियों के द्वारा सुमधुर वेद गान तथा भजन कीर्तन और जयध्वनि से समस्त नगर गुंज उठा, उस समय का दृश्य दिखने ही लायक था ।

वेद मंदिर का उद्घाटन

१३ जनवरी प्रातः ठीक १० बजे का समय । सूर्य भगवान प्राची दिग् वलय से उठते हुए प्राणीमात्र को उत्तिष्ठत जाग्रत :—का संदेश देते हुए अपने सहस्र रश्मी से तमसाच्छन्न गगनाकाश को चिरते हुए ज्योति प्रदान कर रहे थे, मन्द-मन्द समीर आश्रम में बह रहा था । उपवन में भ्रमर रसास्वादन कर रहा था । पक्षीगण अपनी मीठी बोली बोल रही थी । ऐसे ही शुभावसर पर भारत के उप-राष्ट्रपति मान्यवर महामहीम श्रीयुत वासप्पा दानप्पा जत्ति महाराज ने ओड़ीसा के मुख्य मंत्री श्रीयुत विनायक आचार्य महोदय जी के साथ गुरुकुल वैदिकाश्रम, वेदव्यास में पदार्पण करते ही पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद

सरस्वती जी के नेतृत्व में कलकत्ता, दिल्ली, राउरकेला, टाटानगर आदि के आर्य नेता तथा विद्वान एवं ओड़ीसा के कटक, पुरी, वालेश्वर, सम्वलपुर, सुन्दरगढ़ आदि स्थानों से आये हुये हजारों संख्या में नर-नारी मान्यवर महा महीम उप-राष्ट्रपति जी का स्वागत किया। भारतीय चतुर्धाम वेद भवन के अध्यापक तथा छात्रों के चारों वेदों के सस्वर वेदपाठ के साथ उप-राष्ट्रपति महोदय जी के करकमलो से आश्रम भूमि कें शान्त वातावरण में "वेद मन्दिर" का उद्घाटन तथा वेद स्थापन सम्पन्न हुआ।

तत्पश्चाद् गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने पूज्य राष्ट्रपति महोदय जी तथा मुख्य मंत्री महोदय को संस्कृत श्लोक के द्वारा स्वागत किया एवं ओड़ीसा के मुख्य मंत्री श्रीयुत विनायक आचार्य महोदय जी के अध्यक्षता में विशाल पन्ड़ाल में सभा हुई एवं संस्कृत भाषा में अभिनन्दन पत्र पाठ किया गया।

विज्ञान और आध्यात्मिकता के समन्वय द्वारा ही विश्व कल्याण का वास्तविक रुप प्रकाश प्राप्त होगा। उद्घाटन उत्सव के अवसर पर उप-राष्ट्रपति श्रीयुत बी. डी. जत्ति जी के अभिभाषण-

उप-राष्ट्रपति उपस्थित जनता को उद्बोधन देते हुए कहा कि हमारे जीवन में कायमनोवाक्य में नैतिकता और आध्यात्मिकता का मूल्य बोध प्रकाशित होना चाहिये। आधुनिक विज्ञान के आविष्कार द्वारा मानव जीवन में विराट परिवर्तन हुआ है। किन्तु उनके साथ-साथ ही विभिन्न प्रकार मारणास्त्र के निर्माण और क्षुधा जनित अशान्त विश्व को एक आतंक और अनिश्चितता की ओर ढ़केल दिया है।

इस प्रकार के अवस्था के प्रतिकार केवल मात् वैज्ञानिक चिन्ता धारा द्वारा ही सम्भव नहीं है । इसके लिये शान्ति और एकता की दृष्टिकोण की आवश्यकता है । इसी दृष्टिकोण को आध्यात्मिक क्षेत्रों में प्रयोग करने पर मनुष्य के मन और हृदयों में परिवर्त्तन आयेगा एवं वे अच्छे रूप से विश्व कल्याण की और अग्रसर हो सकेगा ।

भारत के विराट आध्यात्मिक परम्परा को उल्लेख करते हुए श्रीयुत उप-राष्ट्रपति महोदय जी ने कहा कि हम-लोगों का मूल धर्म शास्त्र वेद, हमें विश्वभातृत्व के प्रतिष्ठा और मानव जाति के कल्याण तथा मानव जाति को स्नेह, श्रद्धा एवं प्रेम करने को शिक्षा देता आ रहा हैं, हमारे ऋषि मुनियों ने हमें महान् शिक्षा दिये हैं । उस में शृखंलित एवं जो नैष्ठिक जीवन व्यतीत करने के लिये एवं मानव समाज के कल्याण के लिये आध्यत्मिकता के ऊपर गुरुत्व प्रदान किया गया है

कुसस्कार, शोषण मुक्त, तथा न्याय पूर्ण स्वस्थ समाज गठन के लिये वर्त्तमान हमलोग कार्य कर रहे है । समग्र मानव समाज के कल्याण के लिये एवं विश्व में शान्ति प्रतिष्ठा के लिये वेद की अमूल्य वाणी और हमारे महान् साधु, सन्तों के उपदेश अनुसार कार्य हो रहा है । चतुर्धाम वेद भवन शिलान्यास के प्रधान श्री विश्वनाथ दास जी वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिये प्रयत्नशील हैं । एतदर्थ उप-राष्ट्रपति महोदय जी ने श्रीयुत दास जी की प्रसंशा की थी ।

वैदिक संस्कृति और प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा के पुनरुत्थान तथा पिछड़े वर्गों के अन्दर सेवाभाव बडे ही लगन के साथ श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी कर रहें हैं । तदर्थं उप-राष्ट्रपति महोदयनें आन्तरिकता के साथ धन्यवाद दिये थे ।

ओड़ीशा के मुख्य मंत्री श्रीयुत विनायक आचार्य महोदयने अपने अध्यक्षीय भाषण प्रारम्भ करते हुए आश्रम के शान्त वातावरण को देखते हुए अत्यन्त भावविभोर हो कर

बोले कि मैं इस आश्रम के सम्बन्ध में बहुत [illegible] से सुनता रहा हूँ, किन्तु अपने आखों से देखा नहीं था। आज यहाँ पर पहुंचते ही मुझे इतनी शान्ति मिल रही है कि मैं इसे अपनी भाषा में वर्णन भी नहीं कर पा रहा हूँ। समाज के अवहेलित दुःस्थ तथा आदिवासी बच्चों को संस्कृत जैसे भाषाओं की शिक्षा देने में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी जो अक्लान्त परिश्रम कर रहे हैं, उनका कार्य भूयसी प्रसंशनीय है। युवा नेता श्रीयुत संजय गान्धी जी के ५ सूत्री कार्यक्रम में आदिवासी और हरिजनों को शिक्षा देना और उनको सुसंस्कृत कर के उनके जीवनस्तर को ऊँचा उठाना भी एक अन्यत्तम कार्य हैं। गुरुकुल वैदिकाश्रम, वेदव्यास के लिये उन्नत रास्ता निर्माण तथा पानीय जल अभाव दूरीकरण शीघ्र व्यवस्था किया जायेगा। यही आश्वसना दिये थे। जाति भेद दूर करने के लिये तथा वैदिक संस्कृति की प्रचार प्रसार के लिये स्वामीजी महोदयने जो अक्लान्त उद्यम कर रहे हैं। अतः एक दिन यह अनुष्ठान देशवासियों के प्रति सहानूभूति का केन्द्र बनेगा एवं प्रत्येक बुद्धिजीवी देशवासियों को आकर्षण करेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं।

अन्त में श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी ने उप-राष्ट्रपति श्रीयुत बी. डी. जत्ति, मुख्यमंत्री श्रीयुत बिनायक आचार्य महोदय जी को तथा उपस्थित अन्य विशिष्ट भद्रव्यक्तियों को धन्यवाद दयें थे।

—8 आमसेना गुरुकुल में महोत्सव सम्पन्न 8—

गुरुकुल आमसेना का नवम महोत्सव अति समारोह के साथ १२ से १४ जनवरी तक सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ श्री स्वामी दिव्यानंद जी की अध्यक्षता में बहिन प्रमोदा देवी एवं उनके पति श्री अनन्त राम जी आर्य रायपुर ने अपने व्यय से कराया ।

महोत्सव पर श्री स्वामी दिव्यानन्द जी, श्री स्वामी भूमानंद जी, श्री पं० देशपाल जी दीक्षित, श्री आचार्य विशिकेसन जी, माता कौशल्या देवी प्रधान आर्य प्र० सभा म० प्र०, बहिन प्रमोदा देवी रायपुर, श्री पं० हरिसिंह भजनोपदेशक बिजनौर आदि उपस्थित थे ।

गुरुकुल सम्मेलन में नये स्नातकों को प्रमाण पत्र श्री स्वामी दिव्यानंद सरस्वती जी दिये । ब्र० देवकेतु, गुरुकुल कांगड़ी का व्यायाम प्रदर्शन, कार रोकना, छाती पर पत्थर तोड़ना, लोहे की जंजीर तोड़ना, थाली चीरना आदि अति प्राभावशाली रहा ।

अग्निमित्र मेधार्थी

आर्य समाज जमशेदपुर में श्रद्धानन्द अर्ध- शताब्दी पालन

आर्य समाज जमसेदपुर में २३-१२-७६ को हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज का अर्ध-शताब्दी बलिदान दिवस प्रधान श्री राजपाल जी की अध्यक्षता में बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया । जिस में आर्य समाज के कर्मकर्त्ताओं ने शिक्षक, शिक्षिकाओं, विद्यार्थियों ने अपनी अपनीं श्रद्धाञ्जली अर्पित की तथा बच्चों को प्रसाद वितरण किया गया ।

उपमंत्री

डा० ओम प्रकाश आर्य

—: सूचना :—

आर्य समाज, आर्य परिवार तथा आश्रम के शुभ चिन्तकों को अनुरोध है कि वे पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी को व्यक्तिगत रुप से पत्र न लिखकर आनुष्ठानिक रुप से अधिष्ठाता गुरुकुल वैदिकाश्रम, वेदव्यास के नाम पर पत्र देने से प्रत्युत्तर प्राप्त करने में सुविधा होगा क्यों कि स्वामी जी महाराज हर समय आश्रम में नहीं रहते है । इसलिये ठीक समय पर प्रत्युत्तर दे नहीं सकते हैं ।

—: संस्थापक : —

गुरुकुल वैदिकाश्रम, वेदव्यास

राउरकेला-४, (उत्कल)

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम

का
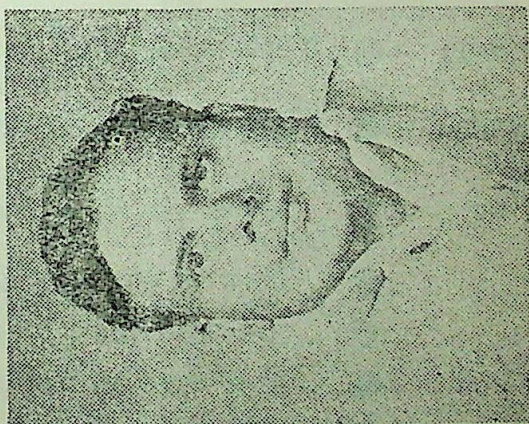
श्री गजानन्द जी आर्य
सभा - प्रधान
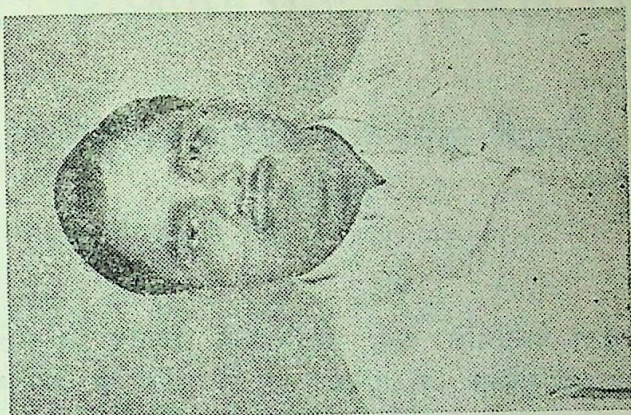
श्री सोमदेव जी गुप्त (एडवोकेट)
सभा - मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम
का
अधिकारी वर्गों तथा अन्तरंग सदस्यों का निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के दिनांक ६-१-७७ के त्रैवार्षिक-अधिवेशन के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारी-गण सर्व सम्मति से चुने गये ।

संरक्षक : ● श्री मिहिर चन्द्र जी धीमान
● ,, शान्ति स्वरुप जी गुप्त
● ,, लालमनि जी आर्य
● ,, रघुवीर प्रसाद जी गुप्त
● ,, जंगीलाल जी आर्य

सभा प्रधान :– ● श्री गजानन्द जी आर्य

कार्यकर्त्ता ,, ● ,, बटकृष्ण जी बर्मन (एडवोकेट)

उप ,, ● ,, राजेन्द्र जी पोद्दार, एम. पी.
,, ● ,, दिनेश जी गुप्त, (एडवोकेट)
,, ● ,, राम लखन सिंह (एम. ए. बी.टी.)
,, ● ,, मोहन लाल जी आर्य
,, ● ,, छबील दास जी सैनी

सभा मन्त्री ● श्री सोमदेव जी गुप्त (एडवोकेट)

संयुक्त ,, ● ,, जगदीश प्रसाद शुक्ल (इंजिनियर)

उप ,, ● ,, दयाशंकर जायसवाल, बी. एस्सी, एल एल् बी

,, ● ,, श्यामल कुमार मण्डल, (एडवोकेट)

,, ● ,, सुशील कुमार गुप्त

कोषाध्यक्ष ● ,, ओ३म प्रकाश अग्रवाल

पुस्तकाध्यक्ष ● ,, पुष्कर लाल जी आर्य

अधिष्ठाता ● ,, सोमनाथ आर्य
आर्य वीर दल

अंतरग सदस्य ● ,, पं० शिवाकान्त जी उपाध्याय

● ,, गणेश प्रसाद जायसवाल (बी. काम.)

● ,, फूल चन्द्र जी आर्य

● ,, ओ३म् प्रकाश जी बहलवाला

● ,, चन्द्रबली जी गुप्त

● ,, गिरधारी लाल जी साव

● ,, जनक लाल जी गुप्त

● ,, विजय प्रसाद ठाकुर

● ,, भगवान दास जी (बी. ए.)

● ,, लाल बहादुर सिंह (एम. ए.)

● ,, रतिराम जी शर्मा

● ,, देशराज जी चौधरी

● ,, चन्द्रिका सिंह जी (एम. ए. बी. टी.)

● ,, श्रीचैतन्य जी शास्त्री

- ,, दिलीप कुमार बर्मन (बी. ए.)
- ,, पं सुरेन्द्रनाथ जी (सिद्धान्त विशारद)
- ,, द्विजेन्द्रनाथ देव शर्मा
- श्रीमती शान्ति देवी जी लूथरा
- श्री निमाई चन्द्र जी पाल, बी. ए. बी. एड.

भवदीय

सोमदेव गुप्त

सभा मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम

४२, शंकर घोष लेन, कलकत्ता-६

हमारी बिशेष औषधियाँ

आप की सेवा में प्रस्तुत हैं

अष्टवर्ग युक्त रसायनः—

च्यवनप्राश-अवलेह

यह उत्तम पौष्टिक रसायन है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक, तथा सभी हृदय रोगों की उत्तम औषध है। स्वप्न दोष, प्रमेह, धातुक्षिणता तथा सब प्रकार की निर्वलता और बुढ़ापे को दूर करता है। दैनिक नास्ते में सेवन करीये। शरीर को बलवान बनायेगा।

विभिन्न जडी बुटिओं से युक्त

आयुर्वेदिक चाय

प्रचलित चाय की भांति यह नींद और भुख को मारता नहीं तथा खाँसी, जुकाम, नजला, सिरदर्द, खुश्की, अजीर्ण, थकान आदि को दूर करके शरीर को ताजा रखता है।

शुद्ध ब्राह्मी आँवला तेल

यह मिस्तष्क के लिये उत्तम तथा लाभ दायक है। इस तेल के प्रतिदिन उपयोग से, मस्तिष्क शीतल रहता, तथा बाल काले रहते हैं।

इस प्रकार हम अन्य विभिन्न रोगों के लिये, विभिन्न चूर्ण आदि औषध निर्माण करते है।

आप अपने को पूर्ण स्वस्थ रखने के लिये शीघ्र सम्पर्क करें।

व्यवस्थापक

गुरुकुल आयुर्वेदिक फ़ार्मेसी

पो॰ वेदव्यास, राउरकेला-४

With best Compliments from

ORISSA INDUSTRIES LIMITED

Latkata Works
ROURKELA-4

(Regd. Office : P. O. BARANG, Cuttack)

BANAWASI SANDESH January 1977 Regd. No. 618

प्रकाशक— स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा शान्ति आश्रम प्रेस, गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास, राउरकेला - ४ में मुद्रित ॥
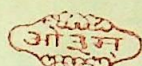
★ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ★

वनवासी सांस्कृतिक समिति, वेदव्यासस्य,
मासिकं मुखपत्रम्

वनवासी संदेश

संस्थापक :—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

अमर शहीद आर्य मुसाफिर पं० लेखराम

संपादक	सह- संपादक
पं० आत्मानन्द शास्त्री	पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति

उडीसा में :-

स्वामी श्रद्धानन्द उपदेशक वेद विद्यालय

अत्यन्त हर्ष और उल्लास का विषय है कि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के सतत प्रयत्नों से उड़ीसा तथा वनवासी क्षेत्रों में वैदिक धर्म प्रचार प्रसारार्थ प्रचारक तथा पुरोहित एवं कर्मठ त्यागी तपस्वी कार्यकर्त्ता निर्माणार्थ स्वामी श्रद्धानन्द अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर महा विषुव संक्रान्ति को सुन्दरगढ़ जिला भोजपुर में श्रद्धानन्द उपदेशक वेद विद्यालय का उद्घाटन होगा।

उक्त उपदेशक विद्यालय में ऋषि दयानन्द के मन्तव्य व आदर्शों का जो वेदों के आधार पर ऋषि ने एक नया दृष्टिकोण विश्व को दिया है। उसके प्रचार प्रसार हेतु उपदेशक प्रशिक्षण दिया जायेगा। भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अन्य अंग्रेजी भाषाओं में अपने सिद्धान्तों का प्रचार कर अपने विचार धारा को तत् भाषा भाषियों के मध्य प्रसारित कर सके। ऐसे मिशनरीयो को तैयार किया जायेगा। पूर्व भारत में सर्व प्रथम यह उपदेशक वेद विद्यालय खोला जा रहा है।

इस महान उद्देश्य की प्राप्ति आपके हार्दिक सहयोग, सहानुभूति से ही हो सकता है।

अतः सभी धनी मानी आर्यसमाजी, ऋषि भक्तों से नम्र निवेदन है कि इस पुनित कार्य की प्रतिष्ठा हेतु अपने तन, मन, धन से अवश्य ही सहयोग प्रदान करेंगे।

निवेदक

गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास

राउरकेला, पिन्- ७६९००४

सुन्दरगढ़

वनवासी-सन्देश

उत्कल जनता संस्कृति रक्षा वद्धकटिस्तमः स्तोमहतिदेशः
गुरुकुल सुपानपोषादुदयति वनवासी संदेशः ॥
यो भ्रष्ट ख्रीष्टमत दीक्षित मज्ञलोकम्
संस्कृत्य दूरयति तद्धृदयांधकारम् ॥
श्री वेदव्यास सुगुरो कुल सन्निवेशः
सम्पूर्वादेरुदयते वनवासी संदेशः ॥

वर्ष ११ अंक ३	मार्च १९७७	वार्षिक मूल्य ५ रु एक प्रति ५० पैसे

पूर्ववर्त्ती श्रेष्ठ का अनुसरण

ओ३म् यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान् द्विता च सत्ता स्वधया च शम्भुः
तस्यानु धर्म्म प्र यजा चिकित्वोऽथा नो धा अध्वरं देववीतौ ।
ऋग्वेद ३ । १७ । ५

अर्थ :— हे (अग्ने) ज्ञानिन्! (यः) जो (होता) होता (त्वत्) तुझसे (पूर्वः) पूर्व और (स्वधया) अपनी शक्ति से, स्वभाव से (शम्भुः) कल्याण स्वरुप है । हे (चिकित्वः) समझदार! (तस्य) उसके (अनु) अनुसार (धर्म्मा धर्म का कर्त्तव्य का (प्र+यज) उत्तम रीति से पालन कर (अथ)

और (नः) हमारे (अध्वरम्) यज्ञ को, हिंसारहित व्यवहार को, मार्ग प्रदर्शन कार्य को (देववीतौ) देवकामना के निमित्त (धाः) धारण कर।

आज संसार में बुद्धिवाद का शोर है। सभी कहते हैं हम अपनी बुद्धि के पीछे चलते हैं। कहते तो सभी ठीक् हैं, किन्तु उस में थोड़ा सा विचारने की आवश्यकता है। बुद्धि बालक में भीं होती है। उसे अनुकरण करना पड़ता है। माता पिता, भ्राता, स्वसा आदि का। जैसे वे चलते है, वैसे वह चलने का यत्न करता है। जैसा वे बोलते हैं, वैसा वह भी बोलता है। बुद्धि का प्रयोग वह भी करता है। क्योंकि बुद्धि के बिना अनुकरण संभव ही नहीं। कहावत है, नकल के लिये भी अक्ल चाहिये। एक महा विद्वान् को ले लो। बड़ा ज्ञानी है, तत्व दर्शन, भौतिक विज्ञान, रसायन, गणित आदि का महा पण्डित है। क्या उसे वह सब कुछ अनुकरण किये बिना आ गया है? अरे! उसके पास बहुत कुछ दूसरों का है, अपना थोड़ा है। सार यह कि संसार में अनुकरण करना पड़ता है। वेद अनुकरण की एक शर्त बताता है:—
"यस्त्वद्धोता पूर्वो यजीयान्" जो होता तुझ से पूर्व और अधिक याज्ञिक हो।

जिसका अनुकरण करेंगे, उसके समानकालीन होने पर उसका अनुकर्त्तव्य कर्म तो हम से पूर्व विद्यमान है और साथ ही वह हम से अधिक गुणवान् है। कोई मनुष्य अपने समान गुण कर्म वालों का अनुकरण नहीं करता। जिसका अनुकरण करने लगे हो, वह अधिक आज्ञिक हो। यज्ञ परोपकार कर्म को कहते है। ऐसा मनुष्य स्वभाव से शम्भु कल्याण स्वरुप होना चाहिये। अन्यथा उसका परोपकार प्रहार का रूप धारण कर लेगा। गुरुकुल से शिस्य को विसृष्ट (विदा) करते समय गुरु कहा करते थे: -

अथ यदि ते कर्मविचित्सा वा वृत्तविचित्सा वा स्यात् ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः, युक्ता अयुक्ताः, अलूक्षा धर्मकामाः स्युः, यथा ते तत्र वर्त्तेरन् तथा तत्र बर्त्तेथाः। (तैत्तिरीयों १।११)

यदि तुझे कभी अपने किसी कार्य्यों की युक्ता में सन्देह हो जाये अथवा आचार के औचित्य में संशय हो जाय तो देख, वहां जो कोई सबको एक समान देखने वाले, धर्म युक्त पाप रहित, मधुर स्वभाव वाले धर्माभिलाषी ब्रह्मनिष्ठ मनुष्य हों, जैसे वे करें, वैसा तू करना ।

अनुकरणीय पुरुषों के गुण संक्षेप में बड़े सुन्दर रुप से सुझा दिये हैं । प्रकृत मंत्र के पूर्वार्ध की व्याख्या यही है :- लोभी, लालची, कठोर स्वभाव, अधार्मिक, भेद बुद्धिवाले अनुकरण के योग्य नहीं हैं । इस मंत्र के अन्त में यज्ञ का उद्देश्य भी थोडे से शब्दों में कहा हैं :- अथा नो धा अध्वरं देववीतौ और हमारा अध्वर दिव्य कामनाओं के निमित्त धारण कर । सर्वथा कामना रहित होना असम्भव है, जैसा कि मनु महाराज कहते हैं :-

कामत्मता न प्रशास्ता न चैवेहास्त्यकामता ।
काम्यो हि वेदाधिगमो कर्मयोगश्च वैदिकः ॥२।२॥

कामनाओं से आक्रान्त रहना अच्छा नहीं है और न ही इस संसार में कामनारहित होना संभव है, क्योंकि वेदाध्ययन तथा वैदिक कर्मयोग कामना करने की वस्तु है । यज्ञ कर्मं योग है, वैदिक है, अतः यह कामना का विषय है । किन्तु यह किस कामना को लक्ष्य करके किया जाये ? वेद स्वयं इसका उत्तर देता है :- "अथा नो धा अध्वरं देववीतौ" हमारे अध्वर को दिव्यकामना के निमित्त अथवा देव=भगवान् की कामना के निमित्त धारण करो । भगवान् की कामना तव होतीहै, जब ससार की कामनाये मिट जायें । जैसा मुण्डक ऋषिने कहा है :- उपासते पुरुषं ये ह्यकामास्ते शुक्रमेतदति वर्तन्ति धीराः ॥ १ ॥ कामान् यः कामयते मन्यमानः स काम-भिर्जायते तत्र तत्र । पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इहैव सर्वे प्रवि-लीयन्ति कामाः ॥ २ । ३ । २ ॥

जो लौकिक कामनाओं को त्याग करके पुरुष की उपासना करते हैं, वे ध्यानि इस संसार से तर जाते है । जो लौकिक कामनाओं को ही सब कुछ मानता हुआ कामनाएं करता रहता है, उन कमनाओं के कारण उसका बार बार जन्म होता है । जिसकी सब कामना पूरी हो चुकी है, वह कृतार्थ है, सफल है, उसकी सभी कामनाएं इसी जन्म में मिट जाती है। बार बार जन्मना, मातृगर्भ की अन्धेरे कुटिया में कैद होंना, नाना क्लेश सहना !!! कामना छोड़ संसार से मुख मोड़ । जगत से स्नेह नाता तोड़ । भगवान से सम्बन्ध तोड । फिर ये सब बन्धन कट जायेंगे ।

सम्पादकीय
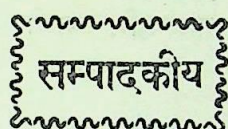
गुरुकुल वैदिकाश्रम के
१६ वें
महोत्सव सम्पन्न

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास का षोड़श वार्षिक महोत्सव दि० १६,१७, १८ फ़रवरी तदनुसार फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावास्या वि० सं २०३२ बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार को पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के तत्वावधान में बडी धूमधाम के साथ उत्साह, उल्लास एवं उमंग के वातावरण में सानन्द निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

वार्षिकोत्सव में उड़ीसा के सुन्दरगढ़, सम्बलपुर, वालेश्वर कटक, गजांम, कोरापुट, मयुरभंज आदि के नरनारी तथा विहार, मध्यप्रदेश, वंगाल, उत्तर-प्रदेश आदि से हजारों नर

नारी पधारे थे। बाहर से पधारे हुए विद्वानों में पं. श्री शिवा
उपाध्याय (कलकत्ता), पं. आत्मानन्द शास्त्री, पं. ईश्वरी
एम. ए. (मथुरा) पं देशपाल जी दीक्षित (सिमड़ेगा,) पं वा
जी शर्मा (वोकारो) जैमिनी कुमार जी, ओम् प्रकाश
की अमूल्य सेवायें प्राप्त हुई। इनके अतिरिक्त स्थानीय वि
में प्रो० उमेश प्रसाद पत्री, एम. ए., पं. विशिकेसन शास्त्री,
सत्यानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी ओंक
नन्द सरस्वती का बहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ।

वेद पारायण महायज्ञ

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी बार्षिकोत्सव के
वसर पर वेद पारायण यज्ञ प्रतिदिन प्रातः ७ से ६ बजे
अति शान्त वातावरण में आयोजित हुआ। जिस के
पं. शिवाकान्त जी उपाध्याय तथा ऋत्विज पं ईश्वरी
एम. ए., स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पं. बलदेव वेदवागीश
विशिकेशन शास्त्री, पं. जैमिनी कुमार जी थे। यज्ञ में
महिलायें भी प्रतिदिन बड़े श्रद्धा एवं उत्साह पूर्वक भाग लि

प्रतिदिन नये-नये यजमान सपत्नीक यथा समय उ
पूर्वक सम्मिलित होते थे। जिसकी पूर्णाहुति शुक्रबार
फ़रवरी ७७ को १२ बजे सुसम्पन्न हुई।

झण्डोत्तलन

दिनांक १६ फरवरी प्रातः ७ बजे हजारों नरना
के बीच में हमारा ओ३म् झण्डोत्तलन उत्कल आर्य सं
वानप्रस्थ मंड़ल के उपाध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्व
करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। पश्चात् उनका झण्डे
सम्बन्धित एक प्रेरणा प्रद संक्षिप्त भाषण हुआ।

प्रभात फेरी

प्रतिदिन १६ से १८ तारिख तक प्रातः काल ४ बजे गुरुकुल वैदिकाश्रम से हमारा प्रभात फेरी की शोभायात्रा बडे सजधज के साथ प्रारम्भ होकर वेदव्यास मेला होते हुए ६ बजे आश्रम में पहुँच कर समाप्त होता था। शोभायात्रा में गुरुकुल के ब्रह्मचारी तथा बाहर से आये हुए सभी आर्य समाजी नरनारी, छात्रछात्रीओं ने बहुत अधिक संख्या में सम्मिलित होकर हमारे प्रभात फेरी का गौरव बढ़ाया। भजन, कीर्त्तन, वेदमन्त्रों के रिकार्ड आदि के वादन साथ-साथ आर्य बन्धुओं के वैदिक घोष के उच्च स्वर को गुंजाते हुए हमारा प्रभात फेरी समाप्त होता था।

विभिन्न सम्मेलन

उत्कल आर्य परिवार सम्मेलन :- ३ रोज प्रतिदिन १० बजे से ११ बजे तक ईश्वरीप्रसाद प्रेम, एम. ए. के अध्यक्षता में आर्य परिवार सम्मेलन का आयोजन हुआ था। जिसका संचालन पं. विशिकेसन जी शास्त्री के निर्देशन में बडे ही आकर्षक ढ़ग से प्रस्तुत किया गया था। जिस में पं. शिवाकान्त उपाध्याय, पं. आतमानंद शास्त्री, श्री उमेश प्रसाद पत्री आदि विद्वानों ने आर्य परिवार के संगठन, महत्व पर अपने अपने विचार प्रकट किये।

इस समारोह में उड़ीसा के आर्य परिवार संघ के अधिकारी तथा सदस्यों ने भाग लिया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास के ब्रह्मचारीयों के द्वारा आसन व्यायाम, लाठी चालन, श्लोकान्तक्षरी, संस्कृत भाषण-संभाषण

भजन, कीर्तन, सस्वर वेदपाठ, संस्कृत गीतिनाट्य, एकांकिका का आंयोजन हुआ था। जनता पर अत्यन्त ही मनोरंजन तथा चित्ताकर्षक हुआ था।

दि० १८ फरवरी को योगसाधना शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें स्वामी योगानन्द जी महाराज ने अनेक योगजिज्ञासुओं को यौगिक आसन प्राणायाम और ध्यान समाधि की प्रक्रियाओं का प्रशिक्षण दिया।

इसके साथ ही साथ ऋषिबोध उत्सव, वेद सम्मेलन, वनवासी सांस्कृतिक सम्मेलन, शुद्धि समारोहों का आयोजन किया गया।

इस सम्मेलनों के मान्य प्रमुख अतिथि हिन्दुस्तान स्टिल लिमिटेड कम्पनी राउरकेला के जेनेराल म्यानेजर डा० प्रभुदयाल जी अग्रवाल थे। मञ्च पर पधारने पर श्रीयुत अग्रवाल जी का भव्य स्वागत किया गया। गुरुकुल के संस्थापक स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, अध्यापक एवं ब्रह्मचारियों ने भी मान्य अतिथि का विशेष स्वागत किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री अग्रवाल जी ने कहा कि मुझे इस गुरुकुल में इस शुभावसर पर आकर अपार हर्ष हुआ है। यह संस्था भारतीय संस्कृति, सभ्यता, आध्यात्मिकता एवं धर्म का परिपोषण करने वाली है एवं वनवासियों के अन्दर शिक्षा दीक्षा क्षेत्र में अपना प्रसंशनीय योगदान कर रही है। इन शब्दों के साथ भारत में वनबासी तथा अनुसूचीत जातियों का शिक्षा-दीक्षा तथा मानवीयता गुणों का विकास को महत्व दर्शाते हुए श्रीयुत अग्रवाल जी ने प्रत्येक दानी महानुभावों को इस अनुष्ठान को सहयोग देने का आह्वान किया तथा इस अनुष्ठान का पानीय जल का दुरी करणार्थ आस्वासन प्रदान किया।

शुद्धि समारोह

गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास अपने जन्म काल से ही अराष्ट्रीय प्रचार निरोध कार्य में बढ़ चढ़ कर कार्य करता आ रहा है। इस शुभावसर पर अपने अज्ञानता तथा गरीवी के कारण निरीह वनवासी अपने पुराने धर्म को छोड ईसाई हो गये थे। वे पुनः वेद पारायण के पूर्णाहुति दिवस दि० १६-२-७७ को ५० ईसाई नर-नारियों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

इस प्रकार उपरोक्त कार्यक्रमानुसार, धर्मप्रेमी सज्जनों की शुभ कामनाओं से तथा सर्वशक्तिमान परमात्मा की असीम कृपाशीर्वाद से हमारा त्रय दिवसीय कार्यक्रम सफल हुआ। विभिन्न असुविधा को झेलते हुए इस में आकर भाग लेते रहे अतिथि महानुभावों का हम बहुत आभारी हैं और हम आशा करते हैं कि इसी प्रकार उन लोगों का स्नेह हमें प्रतिवर्ष मिलता रहेगा। और उनकी शुभ कामना से यह संस्था आगे तीव्र गति से अग्रसर होता ही रहेगा।

— ओ३म् —

शुद्धि आन्दोलन

उद्दिष्ट एवं बाधाएं तथा उनका निराकरण

● ब्रह्मचारी विश्वनाथ जी
सम्पादक, मसुराश्रम पत्रिका
बम्बई-६३

राष्ट्रकी एकात्मता, सनातन हिंदु धर्म तथा भारत की प्राचीन वैभवशाली संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन का शांतिपूर्ण और सबके सहयोग से संपन्न यदि कोई रास्ता है तो वह है शुद्धि आन्दोलन।

वस्तुतः भारत के सभी मुसलमान एवं ईसाई हिंदु वंश के ही है। किन्तु यह वास्तवता मुस्लिम तथा ईसाई धर्मान्तरकारियों ने इनसे जानबूझकर छिपा रखीं। ताकि उनमें शेष भारतीयों से अलगपन की तथा अरबों एवं यूरोप के ईसाईयों से अपनेपन की भावना प्रबल हो सके। जो अंततः भारत की एकात्मता को छिन्नविच्छिन्न कर दे।

भारत में ब्रिटिशों के शासनकाल तक हमेशा इन धर्मान्तरितो को बार बार कहा गया कि हिंदु धर्म की जाति प्रथा एवं ब्राह्मण वर्ग की महत्ता के कारण अब उन्हें हिंदु धर्म में कभी भी प्रवेश न मिल सकेगा। इतना ही नहीं अपितु परंपंथियों को भी हिंदु धर्म में कोई स्थान नहीं है। इस प्रकार के प्रचार के लिये कतिपय स्वार्थान्ध एवं मतिभ्रष्ट हिंदुओं को भी प्रोत्साहित किया गया। इसीका सक्षम प्रतिकार है आजका शुद्धि आंदोलन।

स्वामी श्रद्धानन्द जी, प. पू. विनायक महाराज मसूरकर तथा स्वातंत्र्यवीर सावरकर जैसे द्रष्टा पुरुषोंने समाज का प्रबोधन करते हुए जोरदार शब्दों में कहा कि अतीत में की गई शुद्धि आंदोलन की उपेक्षा के कारण ही हिंदुओं को गंभीर परिणाम भुगतने पडे हैं। तथा पारम्परिक संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता के संवर्धन के लिये शुद्धि आंदोलन को तीव्रता से सक्रिय बनाने के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

व्यापक अज्ञान ४—

यद्यपि भारत में विगत १०० वर्षों से शुद्धि आंदोलन का कार्य चालू है फिर भी सामान्य जन ही नहीं अपितु स्वयं को सुविज्ञ माननेवालों में भी शुद्धि आंदोलन की राष्ट्रीय एकात्मता की दृष्टि से आवश्यकता के बारे में पर्याप्त अज्ञान है। गलती करना, स्खलित होना मानवी स्वभाव है। और कई लोग ज्ञानतः वा अज्ञानतः धर्म निषिद्ध मार्ग पर चलने-लगते हैं। भगवान मनु एवं अन्य क्रान्तदर्शी ऋषियोंने इस प्रकार के भ्रष्ट लोगों के लिये प्रायश्चित विधि का विधान पहले ही कर रखा है। लेकिन दुर्दैव से मुस्लिम आक्रमण के समय भगवान् मनु एवं अन्य स्मृतिकर्ता ऋषियों के वचन भुलाये गए। परिणामतः हमारे वे धर्मान्तरित बन्धु हमारे ही शत्रु वनगये, हमारे धर्म एवं देश के शत्रु बन गये। ईसाई आक्रमण के साथ भी हमारे समाज की यही दुर्दशा रही।

शुद्धि आंदोलन प्रमुख उदिष्ट है हमारे ही इन धर्मान्तरित भाई-बहनों का पुनश्च उनके अपने ही हिंदु धर्म में समाविष्ट कर लेना। लेकिन इसी के साथ जिनकी परम्परागत पैदाईस पंथपर में है, किंतु भारतीय संस्कृति एवं हिंदु धर्म की वैचारिक सांस्कृतिक, तात्विक सर्व श्रेष्ठता तथा मानव मात्र की कल्याण की भावना से प्रभावित हो जो इस धर्म में आना चाहते हैं, उनके लिये भी वैसे व्यवस्था है।

शुद्धि आन्दोलन कार्य का विस्तार :—

शुद्धि आंदोलन के प्रमुखतया दो भाग होते हैं। हिंदु धर्म इसलाम या ईसाईयत के समान छल-बल-कपट प्रलोभनादि द्वारा किसी का धर्मान्तर करने के पक्ष में न होने के कारण, अन्य पंथियों द्वारा धर्मान्तरित हमारे भाई-बहनों को पुनश्च हिंदु धर्म में लाने के लिये अपनाए जानेवाले तौर तरीके इस्लामीयां ईसाई तौर तरीकों से सर्वथा भिन्न होने चाहिये। भारत को स्वतन्त्र हुए ३० वर्ष पूरे हो रहे है। भारत का अपना संविधान है। किंतु हिंदूओं के इस्लामी करणा या ईसाई करणा पर कोई भी पाबंदी न हीं है। आज भी विदेशी एजंसियों के तथा विदेशी शासन के इशारों पर उनके द्रव्य एवं आदमियों के बल पर भारत में वडी मात्रा में हिंदुओं का ईसाई करणा खुले आम किया जा रहा है। मुस्लिम एवं ईसाई वोटों के इच्छुक कतिपय राजनैतिक नेता भी अपने अपने स्वार्थ के कारण चुप्पी साधे हुए वैठे है। यह जानते हुए भी कि हिंदुओं का यह धर्मान्तर हमारी राष्ट्रीय एकात्मता को ठेस पहुंचाने वाला है। मुस्लिम या ईसाईयों की घनी बस्ती वाले क्षेत्र अलग से मुस्लिम या ईसाई जिलों की मांग- क्या इनकी पृथक्तावादी प्रवृत्ति की द्योतक नहीं है ? क्या यह राष्ट्रीय एकात्मता पर कुठाराघात नहीं है ?

यदि भारत के सभी हिंदु मुसल्मान ईसाई केंवल अपने-अपने पन्थ का ही नहीं अपितु अपने देशका (भारत) का हित सर्व प्रथम सोचते हैं, यदि हर भारतीय बाहर के अरब, पन इस्लाम, अँग्लो अमेरीकन आदियों के निजी हित से अपने को संबध्दन करने की सोचता है और तन-मन-धन से उस दिशा में प्रयत्न करता है तो शुद्धि आंदोलन की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। भारत में एक हिंदु ही ऐसी जाती है जैसे भारत से बाहर ऐसा कोई भी देश नहीं है जिसे वह अपना कह सके। अतः आज उन्हे ही कुछ कहने की आवश्यकता है।

सुविध ईसाई पाद्री डा. मस्कारे न्हास ने ठीक ही कहा है कि केवल हिंदु ही भारत माता के सच्चे पुत्र हैं, जो उसको कभी भी त्याग नहीं करते। ऐसी परिस्थिति में आज हमारा यह कर्त्तव्य बन जाता है कि हम इन मुसल्मानों को ईसाईयों को हिंदु धर्म के निकट लाने के पूर्व इन्हें भाई चारे के पास राष्ट्रनिष्ठा के समीप लाना चाहिये। सद् भाग्य से आज इंडियन नैसनल चर्च के अनुयायियों का राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत एक ऐसा राष्ट्रीय संगठन है जिसके पास केवल उनके हिंदु करण की भावना से पहुंचने का हम सोचते भी नहीं है। इसी का समांतर यदि कोई मुस्लिम संगठन होता तो कितना अच्छा होता।

सामुहिक शुद्धि करण :—

भारत की वर्त्तमान स्थिती को देखते हुए धर्मान्तरितो को साक्षर बनाना तथा अपने अच्छे आचरण से हृदय जीत-कर उनका विश्वास संपादन करना शुद्धि कार्य कर्त्ताओं का पहला कदम होना चाहिये और इसी में से इन कार्य कर्ताओं का प्रामाणिक प्रयत्न एवं संगठन कौशल्य दिखाई देगा। इन बेचारे धर्मान्तरितों को सर्व प्रथम अपनी प्राचीन संस्कृति की महत्ता का बोध कराना होगा साथ ही उनका हित उनके हिंदु भाई-बहनों के हित के साथ जुडा है, न कि उनके विदेशी पक्षानुयायियों से, ऐसा विश्वास पैदा करना होगा। सद्भाग्य से इन धर्मान्तरितों ने अभी भी उनके परम्परा गत ही हिंदु आचार विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज पूर्णतया छोडे नहीं है।

इस क्षेत्र में हमारा अनुभव है कि छल-बल-कपट आदि द्वारा किये गये ये धर्मान्तरित आज भी अपने सदियों पुराने हिन्दु धर्म में लौटने को उत्सुक हैं। राष्ट्रीय एकात्मता व उन्नति में सक्रिय हाथ बटाने को तैयार है। आज सिर्फ

इस बात की गरज़ है कि हिंदु धर्म के द्वार उनके लिये सादर खुले हैं। इसकी खातिर इनके दिल में हो जाए। गत पचपन वर्षों से ममूराश्रम एवं कुछ अन्य संगठनों को ईसाई एवं इस्लाम पंथ में गये धर्मान्तरितों को सामुहिक पैमाने पर हिंदु धर्म में पुनश्च लाने में बड़ा यश प्राप्त हुआ है– उदाहरण के तौर पर गोवा के गावड़ा (कास्तकार) एवं (गिरिवासी) बसई विभाग के ईसाई कोली (मछलीमार) जाति, सातपुड़ा पहाडी में बसी मुस्लिम राजपूत जातियां एवं अलवर के मेव मुस्लिम समाज़ इत्यादी।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद गरीब, निरक्षर, पददलित, गिरिवासी एवं भूखा पिडीत भारतीयों को ईसाई बनाने की बाढ़ सी आयी है। ईसाई मिशनरियों के तथा शासन के रिपोर्टस् भी इसकी पुष्टी करते है। किंतु फ़िर भी मसूराश्रम विश्व हिंदु परिषद आदि द्वारा इस दिशा में किये गये प्रयत्न काफी आशा जनक है। जब पूरा गांव का गांव या पूरी जनता शुद्धिकृत होकर हिंदु धर्म में वापस लोट आती हैं तो उन्हे सामाजिक अडचनों का भी सामना नहीं करना पडता है।

वैयक्तिक शुद्धिकरण :—

हिंदु धर्म में व्यक्तिगत रूप से लौटने वालो की भी कुछ श्रेणियां है। कुछ तो हिंदु धर्म के तत्वज्ञान से प्रभावित हो हिंदु धर्म में चले आते हैं, तो कतिपय इस बात का ज्ञान होने पर कि उन के पूर्वजों को छल-बल कपट आदि द्वारा ईसाई या मुसलमान बनाया गया था। कुछ शादि के लिये भी हिंदु धर्म में आते है, तो कुछ ऐसे भी होते है कि केवल अपने अनचाहें पति या पत्नी से छुटकारा पाने के लिये मुसलमान बनते है और बाद में पुनः हिंदु धर्म में आना चाहते है।

व्यक्तिगत तौर पर हिंदु धर्म में लौटने वाले को कोई विशेष शिक्षण देने की गरज नहीं होती है। बल्कि उसके ही हिंदु रिश्तेदार एवं मित्रों को सही माने मे समझा दी जानी चहिये कि वे इनसे किस प्रकार सद्भावना पूर्ण व्यवहार करे ताकि हिंदु धर्म में लौटने वालों के दिल में संकोच या पृथकता की भवाना का अंश भी न रहने पाए।

शुद्धि कार्य में आने वाली बधाएं :—

कई बार यह मूर्खता पूर्ण प्रश्न पुछा जाता है कि अमर्यादा विदेशी धन एवं तथाकथित प्रचारकों के समर्पणात्मक कार्य के आधार पर लाखों हिंदुओं को जब रात दिन ईसाई बनाया जा रहा है तो उन्हें पुनश्च हिंदु धर्म में सम्मिलित कर लेने का प्रयत्न शासकीय आश्रय-पर्याप्त आर्थिक बल एवं सामाजिक जागृती के अभाव में कहां तक परिणाम कारक होगा। अक्सर इस प्रकार के भी प्रश्न पूछे जाते है कि इन शुद्धिकृतों की जाति का क्या होगा? इस में कोई कानून या वैधानिक बाधा तो नहीं आती? जन्म से ही परधर्मों व्यक्ति को हिंदु धर्म में कैसे प्रवेश मिल सकता है? शुद्धिकृतों का समाज में क्या स्थान होगा? उनके विवाह आदि की क्या व्यवस्था होगी।

सच देखा जाये तो लगन से काम कर रहे शुद्धि आंदोलन के सच्चे प्रचारक को ये बाते जरा भी विचलीत नहीं करती या उनके सम्मुख किसी भी प्रकार का प्रश्न चिह्न भी उपस्थित नहीं करती। इन सब प्रश्नो का समाधान कारक उत्तर इस प्रकार है—

सनातन हिंदू धर्म की जाति व्यवस्था शुद्धि आंदोलन के मार्ग में बाधा नहीं बनती है। क्योंकि अधिकांश धर्मा-

न्तरित को अपनी-अपनी जाति का ज्ञान रहता है। जिन्हें मालूम नहीं, उन्हें स्व-स्व कार्यानुरूप उस-उस जाति में प्रविष्ट कर लिया जाता है।

किसी भी शुद्धि करण को न तो कानून का विरोध होता है और न ही शुद्धि करण में किसी कानून का उल्लंघन होता है। संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने धर्म का शांततापूर्ण प्रचार करने का हक़ है और सनातन वैदिक हिंदु धर्म के प्रचारक तो विना किसी छल-बल प्रलोभनादियों का उपयोग किये ही शांततापूर्ण मार्ग से उन उन व्यक्तियों के दिल में अपने पूर्वजों के धर्म की श्रद्धा को जगाते है। उनका हृदय परिवर्तन करते है, तथा बुद्धि एवं मन से वे परिवार व या व्यक्ति स्वयं ही शुद्धि संस्कार के लिए आगे आते है।

शुद्धि कृत लोगों को समाज में भी अब अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त होने लगी है। मसुराश्रम में शुद्धि संस्कार के साथ-साथ जहां तक संभव होता हैं उनका विवाह भी रचा दिया है। ताकि उनके जीवन की सबसे बड़ी समस्या आसानी से हल हो जाती है। शुद्धि कृतों को सामाजिक एवं धार्मिक त्यौहारों में बुलाया जाता है। उनके घर भी इसी प्रकार के उत्सव, पूजन आदि कार्यक्रम किये जाते है, ताकि हिंदु समाज मे उनकी एकरुपता पक्की हो जाती है। शुद्धि संस्कार के साथ-साथ विवाह नहीं हुआ, या हो पाया तो आने वाले दिन में उसका भी आयोजन किया जाता है। प्रत्येक शुद्धिकृत की और व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाता है।

सच्चे शुद्धि कार्यकर्ता को ऐसे या उसके सदृश अन्य प्रश्नो से निरुत्साहित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। आज से पचास वर्ष पूर्व इस शुद्धि आंदोलन के लिये आत्म बलि-दान करने वाले स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द धर्मान्तरित हिंदु भाई-

बहन को पुनश्च हिंदु धर्म में लाने के लिये संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले मसुराश्रम के संस्थापक परम पूज्य श्री मसूरकर महाराज आदि का आदर्श अपने सम्मुख रख आज का हर शुद्धि कार्यकर्त्ता अग्रसर होता है तो विजह उसी की होता है । सद्भाग्य से आज विश्व हिंदु परिषद, आर्य समाज, हिंदू मिशन जैसे और भी कुछ संगठन तथा व्यक्ति इस दिशा में सहयोग की भावना से आगे आ रहा है । भारत सेवाश्रम संघ द्वारा आज यहाँ आयोजित यह परिषद इस प्रश्न पर सब कुछ करने के लिये तैयार है । ऐसी स्थिति में भारत में शुद्धि आंदोलन का भविष्य उज्वलता है, इस बारे में किसी को भी संदेह नहीं हो सकता । परम पिता परमेश्वर के आशीर्वाद से हम अपने बचे हुए इन धर्मान्तरित सभी भाई-बहनों की निकट भविष्य में पुनश्च सनातन वैदिक धर्म में ससंमान वापस ले आएंगे ।

आज की इस परिषद के आयोंजक भारत सेवा संघ तथा इसके स्वामी जी का और हमारा गहरा स्नेह है । मसुराश्रम द्वारा किये जा रहे शुद्धि कार्य के वे केवल प्रशंसक ही नहीं अपितु प्रत्यक्ष में शुद्धि कार्य भी करते है । अतः उनका आभार मानना मेरा कर्तव्य है । उनका तथा उनके संघ का समय समय जो सहयोग प्राप्त होता है तदर्थ मै उन्हें मनःपूर्वक धन्यवाद देता हूँ । आप सबने इस परिषद में समिलित होकर शुद्धि कार्य के प्रति अपने आस्था आत्मीयता दर्शायी है तदर्थ आप सभी धन्यबाद के पात्र हैं । अब सबको पुनः एक वार धन्यवाद देकर मै परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह हम सब को प्रदीर्घ आयु एवं स्वस्थ आरोग्य प्रदान कर हमसे वैदिक हिंदु धर्म की अधिक से अधिक सेवा करा ले ।

इति शम्

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

महर्षि के सपनों का भारत

● स्व० स्वामी सोमानन्द जी सरस्वती

राष्ट्र में हिनता के भावों ने जड़ें पकड़ ली हैं। महर्षि ने देश के सामने उच्चतम नैतिक आदर्श रक्खा और देशवासियों में इस बात का दृढ़ विश्वास बिठा दिया कि उनके पास संसार की उच्चतम सभ्यता, सृष्टि के महान धर्म और विश्व की पवित्रतम संस्कृति की धरोहर है। संसार के सभी देश शिक्षा एवं सभ्यता का आदिस्रोत भारत ही है। स्वामी जी ने कहा है कि—

विद्याओं का स्रोत

'यह आर्यावर्त देश कैसा सुन्दर और उपजाऊ है? यहाँ की जलवायु कितनी उत्कृष्ट है? इसमें छः ऋतुएँ होती हैं और कितने सुन्दर क्रम से उन का आयोजन है। यहाँ के वासियों को "देव" अर्थात् विद्वान् कहा जाता था, इसलिए गंगा को देव-नदी नाम दिया गया। जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिस्र वालों, उनसे यूनानी, उनसे रूस और उनसे यूरोप देश में, उससे अमेरिका आदि देश में फैली है।" (स० प्र० ११ समु०)

भारत का वैभव

आर्यावर्त के वैभव का वर्णन करते हुए ऋषि ने लिखा है—"यह आर्यावर्त देश ऐसा है कि जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिये इस भूमि का नाम स्वर्ण-भूमि है, क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। भूगोल में जितने देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर जो सुना जाता है वह तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारस-

मणि है कि जिसको लोहरूप दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं ।"

(स० प्र० समु ११)

प्राचीन भारत के पतन तथा राजनैतिक क्षय के जिन कारणों को महर्षि ने दर्शाया है वह अत्यन्त शोचनीय है । यदि भारतीयों में एकता होती और उन्होंने अपने धार्मिक, नैतिक एवं सामाजिक आदर्श को दृष्टि से ओझल न किया होता 'तथा वैयक्तिक हित को प्रधानता न दे कर राष्ट्रीय हित की ओर ही ध्यान दिया होता तो भारत न तो इतने आर्थिक संकटों में पड़ता और न ही सुदूर पश्चिम की सत्ता को हमारे देश पर अपना आधिपत्य जमाने का अवसर मिलता । पारस्परिक फूट और स्वार्थपरायणता ने ही विदेशियों को भारत में घुसने का अवसर दिया तथा हमारी दुर्बलताओं के कारण ही हम अन्यों के दास बने ।

देश की पराधीनता का महर्षि को अत्यन्त क्षोभ था । वे चाहते थे कि देशवासी किसी प्रकार से संगठित हो कर ब्रिटिश साम्राज्य के जुए को उतार कर फेंक दें । उन्हें विश्वास था कि स्वाधीन भारत ही अपने प्राचीन गौरव तथा ऐश्वर्य पूर्ण जीवन को प्राप्त कर सकता है ।

अहिंसा एवं असहयोग आन्दोलन

महर्षि ने सर्व प्रथम अहिंसा और असहयोग आंदोलन को चलाया । यद्यपि उस समय ये सिद्धान्त राजनैतिक पृष्ठभूमि के साथ प्रकट रूप में जनता के सामने नहीं आये थे, तथापि परोक्ष में इनकी विचाराधारा जिस रूप में प्रभाव कर रही थी उससे कोई इनकार नहीं कर सकता । स्वदेशी और विदेशी की विचारधारा भविष्य में स्वाधीनता प्राप्ति का प्रबल शास्त्र सिद्ध हुई ।

भाषण तथा लेखन की स्वाधीनता

महर्षि ने राष्ट्र का आत्मगौरव तथा नैतिकता के उन्नतम पाठ दिये । उनका अपना जीवन इन पाठों का मूर्त्तरूप

था। महर्षि ने बतलाया कि सत्य को प्रकट करना प्रत्येक का नैसर्गिक अधिकार है। उसको मौखिक अथवा लेखन रूप में प्रकट करते हुए संसार की बड़ी शक्ति से भयभीत नहीं होना चाहिये. महर्षि ने इस प्रकार भाषण एवं लेखन स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिये उभारा। उन्होंने ईसाई मत के विरुद्ध लिखने की आवश्यकता अनुभव की तो पूरे बल के साथ उनकी त्रुटियों का खंडन किया। उस समय उन्होंने यह नहीं सोचा कि अंग्रेज शासक हैं, उनके मत का खण्डन करने से वे रुष्ट हो जाएँगे। महर्षि सत्य पर निडर रहे।

राज्य का आदर्श

महर्षि ने राजनीति तथा राज्य की समस्याओं पर भी एक सच्चे देशभक्त और राजनीतिज्ञ की भांति प्रकाश ड़ाला है। शासक तथा प्रजा के सम्बन्ध तथा अन्य शासन सम्बन्धी बातों पर उनके विचार अत्यन्त प्रगतिशील, प्रजातन्त्रवादी तथा गम्भीर चिन्तन को प्रकट करते हैं। महर्षि ने जिस राज्य का कल्पना की है, उसमें वैधानिक शासक और प्रजातन्त्र दोनों को सफल संगम है।

राजा कौन ?

महर्षि की दृष्टि में वही राजा होने का पात्र है जिसमें सदाचार, विद्वत्ता, न्यायप्रियता वीरता तथा धीरता हो। वह महान ऐश्वर्य शाली, पराक्रमी और शत्रुभंजक हो। यजुर्वेद के हवाले से राजा के चुनाव की निम्न शर्तें हैं :—

"हे विद्वानो! राजप्रजाजनो, तुम इस प्रकार के पुरुष को बडे चक्रवर्त्ती राज्य सबसे बडे होने बडे-बडे विद्वानों से युक्त राज्य पालने और परम ऐश्वर्ययुक्त राज्य और धन के पालन के लिए सम्मति करके सर्वत्र पक्षपात रहित पूर्ण विद्या-विनय-

क्रमशः

समाचार दर्शन

गुरुकुल भूमि में

अमर शहीद पं० लेखराम बलिदान दिवस

गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास में स्वामी सत्यानन्द सरस्वती जी के अध्यक्षता में गुरुकुलस्थ अध्यापक तथा ब्रह्मचारियों ने दि० २१ फरवरी को बडे धूमधाम के साथ पं लेखराम बलिदान दिवस मनाया गया।

वनवासी क्षेत्र में

आदर्श वैदिक विवाह

हिंदु (आर्य) जाति से घृणित, उपेक्षित संस्कार हीन वनवासी वर्ग शदियों से पशुओं से बदतर जीवन बिता रहें है। ब्राह्मण वर्ग उन्हें घृणा करते हुए उनके पुजा पाठ संस्कारादि में जाते ही नहीं। अतः उनके समाज में कोई पुरोहित संस्कारादि नहीं करता है। इसीलिये वे हिंदु (आर्य) जाति से अबतक प्रृथक गणना किया जाता है।

आर्य समाज के आंदोलन तथा प्रचार से उनके अन्दर संस्कार जागृत हो रहा है और वे हिंदु (आर्य) जाति के समकक्ष होने के लिये प्रयत्न शील हैं।

उड़ीसा में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के द्वारा आंदोलनात्मक कार्यक्रम से वे संस्कारवादी होते जा रहे हैं। जिसके फल स्वरुप विवाह संस्कार आदि वैदिक पद्धति अनुसार करने के लिये प्रयत्न शील हैं।

अत्यन्त हर्प और उल्लास के विपय हैं कि दि० २२-२-७७ को पदुआ निवासी श्र प्रह्लाद किसान जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री लोदर किसान जी के साथ राण्टो निवासी श्रीमती फुलो किसान जी का विवाह संस्कार पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति जी के पौरहित्य में वैदिक पद्धत्यनुसार सम्पन्न हुआ। स्मरण रहें कि वनवासी

वर्गों के अन्दर यह प्रथम विवाह वेद मंत्र पाठ के साथ हुआ। इस विवाह को देखने के लिये हजारों संख्या में वनवासी जनता उपस्थित थे। जनता के ऊपर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

गुरुकुल में

होली उत्सव

गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास में दि०५-३-७७ को यज्ञ प्रार्थना सह अध्यापक एवं ब्रह्मचारीयों ने होली उत्सव सोल्लास पालन किया गया।

आर्य संन्यास वानप्रस्थ मण्डल की ओर से

वैदिक धर्म का प्रचार

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के अध्यक्षता में सम्बलपुर जिलास्थ बुढ़ा सम्बर, बलांगिर जिला के पाटनागड़ विनुआपाली और सालेभटा में हवन यज्ञ तथा वैदिक धर्म का प्रचार हुआ।

नाम करण संस्कार

पाटना गढ़ के विशिष्ट आर्य समाजी श्री बिश्वनाथ राजु जी के पौत्र का नाम करण संस्कार हुआ। जिसका नाम अरविन्द रखा गया।

अनुगुल में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

ढेंकानाल जिल्लान्तर्गत अनुगुल (दुआन डुबुरी) ग्राम में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के अध्यक्षता में दि० २७-२-७७ से १-३-७७ तक यजुर्वेद पारायण महा यज्ञ हुआ था। आर्य संन्यास वानप्रस्थ मण्डल के सम्पादक स्वामी प्रणवानंद सरस्वती, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, पं० देशपाल दीक्षित, पं० विशिकेसन शास्त्री, पं० जैमिनीकुमार आदि अनेक विद्वानों ने योग दिये थे।

शुभ
कामनाओं के साथ

रिलायन्स टेक्सटाईल इंडस्ट्री लिमिटेड

अहमदाबाद - बम्बई :

विमलरेन्ज :

सुटिंग्स, सर्टिंग्स, साड़ी और
ड्रेस मटिरियल्स

शुभ कामनाओं के साथ :-

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया।
यस्साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥

BANAWASI SANDESH March 1977 Regd. No. 618

प्रकाशक— स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा शान्ति आश्रम प्रेस, गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास, राउरकेला - ४ में मुद्रित ॥

★ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ★

वनवासी सांस्कृतिक समिति, वेदव्यासस्य,
मासिकं मुखपत्रम्

वनवासी संदेश

संस्थापक :—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

"न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः"

धर्म के मार्ग से धीर पुरुष महान् संकट आने पर भी विचलित नहीं होते ।

संपादक	सह-संपादक
पं० आत्मानन्द शास्त्री	पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति

नीति वचन

१- परान्नं च परस्वं च परशय्या परस्त्रियः
परवेश्मनि वासश्च शक्रादपि हरेच्छ्रियम् ॥

अर्थ :— दूसरे का अन्न, दूसरे का बिछावन, दूसरे की स्त्री, दूसरे के घर में निवास ये इन्द्र की भी लक्ष्मी हर लेते हैं।

२- लोभ-प्रमाद-विश्वसैः, पुरुषो नश्यति त्रिभिः
तस्मल्लोभो न कर्त्तव्यः प्रमादो नो न विश्वसेत

अर्थ :— मनुष्य लोभ, भ्रम और विश्वास इन्ही तीनों से नष्ट होता है । इसलिये न तो लोभ करना चाहिये, न प्रमाद ही तथा विश्वास भी नहीं करना चाहिये ॥

वनवासी—सन्देश

उत्कल जनता संस्कृति रक्षा वद्धकटिस्तमः स्तोमहृतिदेशः
गुरुकुल सुपानपोषादुदयति वनवासी संदेशः ।।
यो भ्रष्ट खीष्टमत दीक्षित मङ्गलोकम्
संस्कृत्य दूरयति तद्धृदयांधकारम् ।।
श्री वेदव्यास सुगुरो कुल सन्निवेशः
सम्पूर्वादेरुदयते वनवासी सन्देशः ।।

वर्ष १२ अंक ४	अप्रेल १९७७	वार्षिक मूल्य ५ रु एक प्रति ५० पैसे

वेदोपदेश
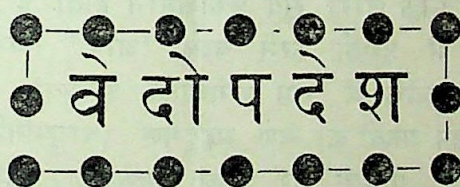
**ओ३म् ये त्रिषप्ताः परि यन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ।।१।।**

सामवेद १ । १ । १ ॥

अर्थ :— मन्त्र में 'त्रिषप्ताः' शब्द का सुजर्थव्युत्पत्ति से "सुजभावोऽभिहितार्थत्वात्समासे" (महाभाष्य २।२।२) तीन आवृत्ति में आने वाले सात, तीन स्थानों में होने वाले सात, जैसे "द्विदशा" (महाभाष्य २।२।२) दो आवृत्ति में आने वाले दश-स्थानों में विद्यमान दश, कुल बीस परन्तु दो वर्गों में दश-दश करके । इसी प्रकार 'त्रिषप्ताः' तीन आवृत्ति में आने वाले

सात कुल इक्कीस परन्तु तीन वर्गों में सात सात करके चलने वाले ही समासार्थ है। एवं इस लक्षण के अनुसार 'त्रिषप्ता' हैं 'आपः' इस में ऋग्वेद का प्रमाण है "प्र सु व आपो महिमान-मुत्तमं कारुर्वोचाति सदने विवस्वतः प्र सप्त सप्त त्रेधा हि चक्रमुः ॥" (ऋ० १०। ७५। १) इस मन्त्र में स्पष्टरूप से 'आपः' (जलों) को "सप्त सप्त त्रेधा प्रचक्रमुः" तीन जगह में सात सात हो कर प्रगति करते हैं, ऐसा कहा है, सायण ने भी उक्त मन्त्र के भाष्य में कहा है 'त्रेधा पृथिव्यामान्तरिक्षे दिवि च' पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक इन तीन स्थानों में प्रगति करते हैं। 'आपः' तीनों लोकों में हैं इसके अन्य प्रमाण भी हैं "इयं पृथिवी वा आपामयनमस्यां ह्यापो यन्ति" (श० ७।५।२।५०) 'अन्तरिक्षं वा अपां सधस्थम्" (श० ७।५।२।५७) "द्यौर्वा अपां सदनम्" (श० ७।५।२।५६) इन प्रमाणों में पृथिवी को जलों का अयन, अंतरिक्ष को जलों का सधस्थ और द्युलोक को जलों का सदस्न बतलाया है इसी अनुवाक के चतुर्थसूक्त में कहा भी है कि "अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह" जो 'आपः' (अप्-तत्व) सूर्य में विद्यमान हैं अथवा जिनके द्वारा सूर्य प्रकाशमान होता है। इस प्रकार तीनों लोकों में प्रगती करने वाले "आपः" (अप्-तत्वों) का स्थूल रूप द्युलोक में सप्त रंगवाली रश्मियां, अन्तरिक्ष में भिन्न-भिन्न सप्त मरुतों का गण मरुद्गण (वायुप्रतिधियाँ-वायुस्तर वायुपरत) और पृथिवी पर भिन्न भिन्नगुण रूपवाले सप्त जल-प्रवाह हैं। इम त्रिस्थानी अप्तत्वों से क्रमशः द्युलोक में सूर्य, अन्तरिक्ष में विद्युत् या विद्युन्मय वायु और पृथिवी पर अग्नि ये तीनों अग्नियां प्रकट होती तथा बल पाती हैं। इन ऐसे 'आपः' से समस्त जगत् आप्त-व्याप्त है, कहा भी है "तद्यदब्रवीद् ब्रह्म आभिर्वा अहमिदं सर्वमाप्स्यामि यदिदं किञ्चेति तस्मादापोऽभवन्" (गोपथ० पू० १। २) 'अद्भिर्वा इदं सर्वमाप्तम (श० १। १। १। १४) ये ऐसे 'आपः' "त्रिषप्ताः" नामसे यहां कहे गये हैं। अस्तु। अब मन्त्रार्थ देते हैं—

(ये) जो जगत् में प्रधान पदार्थ' (त्रिषप्ताः) तीनों पृथिवी अन्तरिक्ष और द्युलोक में सात सात भेद से वर्तमान हुए

"आपो····प्र सप्त सप्त त्रेधा हि चक्रमुः" (ऋ० १० । ७५ । १) 'आपः' अप्तत्व-सात रश्मियां, विद्युन्मय सात वायुस्तर, सात जलप्रवाह (विश्वा) सब (रूपाणि) स्वरूपवान् या निरूपण करने योग्य उत्पन्न हुई वस्तुओं को (बिभ्रतः) धारण और पोषण करते हुए (परियन्ति) परिक्रमा करते हैं - सब ओर गति करते हैं (तेषाम्) उन के (बला) बलों-सामर्थ्य तेज और जीवन को (मे) मेरे (तन्वः) शरीर में "सुपां सुपो भवन्तीति ङि स्थाने ङस्" (अद्य) आज-अब निरन्तर (वाचस्पतिः) वेदवाणी का स्वामी प्रजापति परमेश्वर "प्रजापतिर्वै वाचस्पतिः" (श० ५ । १ । १ । १६) (दधातु) धारण करे संस्थापित करे अन्दर प्रविष्ट करे ॥ १ ॥

स
स्पा
द
की
य

अनेकों झड़ झंजा के अन्दर गति करता हुआ शताब्दि से निष्पेषितो, विताडितो, अछुतों, असहायों को गले लगाता हुआ आर्य समाज अपना १०१ वाँ वर्ष पुरा कर रहा है।

सन् १८७५ में वम्बई महानगरी में प्रथम आर्य समाज की नींव रखी गयी थी। उसके वाद अबतक धिरे-धिरे सत्य का, वैदिकसिद्धान्तों का प्रचार करता हुआ, सभी प्रकार विपत्तियों से जुझकर उसे सुगम करता हुआ, आर्य समाज आगे-आगे बढ़ता आया ।

आर्य समाज के उपर चर्चा करने से पूर्व उसके संस्थापक प्रातः वन्दनीय पूज्य महर्षि दयानन्द जी के विषय में भी कुछ विचार करना आवश्यक है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और सर्वश्रेष्ठ प्राणी भी है। अपनी बुद्धि के बल पर वह सभी प्राणियों के ऊपर शासन करता है। जब मनुष्य इस दुनिया के भौतिक वाद में पड कर बुरी तरह जकड़ जाता है तब उसके मन, बुद्धि में मलिनता आ जाती है। फिर वह अन्याय की ओर बढ़ता है, जिससे धिरे धिरे मनुष्य अहंकारी हो जाता है। तब समाज में परस्पर द्वेष, घृणा और हिंसा की अग्नि प्रज्वलित होती है। और समाज घोर विशृङ्खला की लपेटों में घिर जाता हैं। तब मनुष्य के विकाश का विराम होता है एवं मनुष्य का नैतिक अधोपतन होता ही जाता है।

समाज में ऐसें ही नैतिक पतन के समय प्रायः कोई न कोई महान् आत्मा का प्रादुर्भाव देखने को मिलता है। जिस प्रकार हिंसावाद के बढ़ते चरणों में भगवान बुद्ध का, बुद्ध के अनीश्वर बाद के बहुलता में आचार्य शंकर का इत्यादि। ठीक् उसी प्रकार १९वीं सदी में समाज में व्यापे, कुरिती, घृणा हिंसा, द्वेष, अन्याय, के समय एक महान् आत्मा का प्रादुर्भाव हुआ। आगे जाकर वे महर्षि दयानन्द के नाम से ख्यात हुये।

ऋषि दयानन्द ने जब समाज में व्यापे विशृखंला को देखा और हृदयंगम की, तब महर्षि ने उसका खुलकर विरोध किया। दुनियां की किसी भी बातों को भ्रूक्षेप नकर, यहाँ तक की अपनी जीन्दगी परवाह नकर ऋषि सत्य के प्रचार में डटे ही रहे जिसके फल स्वरूप कितना ही यातनायें, कितने ही अपप्रचार, कितने ही समस्याओं का शिकार उन्हें होना पडा।

उसी ऋषि के पवित्र भावना की धारा पवित्र आर्य समाज है। जिसने जन समाज में से मानसिक अशान्ति को हटाकर बौद्धिक, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति की भरसक प्रयत्न की। उसमें उसने आशातीत सफलता प्राप्त की है। अज्ञान अन्धकार में हिंसा, घृणा, द्वेष रूपी कीचड़ में फंसे प्राणियों को आर्य समाज ने ज्ञान का प्रकाश और संगठन की सीढ़ि रूपक श्रेष्ठ राह दिखाया है।

भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन का संचालक आर्य समाज के द्वारा ही होता रहा, ये विभिन्न मान्य बुद्धि जीवियों का विचार है फिर भी स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का विस्मरणीय अवदान रहा है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा भारतीय संस्कृति के प्रति घृणा मनोवृत्ति रखने वाले देश में भारतीय संस्कृति, भारत की श्रेष्ठता को स्थापना करने का श्रेय आर्य समाज को ही प्राप्त है।

"वसुधैव कुटुम्बकम्" की नारा लगाकर आर्य समाज ने अपना १० सूत्री कार्यक्रम में ६ष्ठ सूत्र में दृढ़ता पूर्वक घोषणा की है कि, संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है'।

इस के साथ साथ मानव का आदि ज्ञान वेद का जो संसार का प्रकाश स्तम्भ है, उसको जनता के हृदय मन्दिर में स्थापना करने का भी आर्य समाज ने भरसक प्रयत्न किया है।

अस्तु यह तो कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि आर्य समाज ने संसार को बहुत कुछ दिया है। जिस से आज समाज सुधारकों में वह अग्रगण्य है। वह केवल थोथा नारा लगाना नहीं जानता है लेकिन वास्तविक कार्य करता है जिसका हजारों उदाहरण है

आज वह एक शताब्दि पाकर के द्वितीय शताब्दि में पदार्पण किया है उस के भी १ वर्ष समाप्त कर चुका है, अपनी इतनी ही अवधि में संसार को उसने जो कुछ दिया है, वह उसकी शक्ति से कहीं अनेक अधिक है. आगे भी आर्य समाज से यही आशा की जाती है कि वह द्वितीय शताब्दि में भी प्रथम शताब्दि के पूर्ण अनुभव को लेकर आगे बढेगा, और पूर्ण सफलता प्राप्त करेगा।

सर्व नियन्ता सर्वान्तर्यामी से भी यही प्रार्थना है कि इस के उपर, प्रभु का सदैव कृपादृष्टि और आशिर्वाद बना ही रहे। जिस से २य शताब्दि में भी यह सभी बाधा विघ्न को सहता हुआ दृढ़ता पूर्वक सत्य तथा वैदिक सिद्धांतों के प्रचार में अपने को अर्पण करें।

आयुर्वेद शिक्षा (१)

धर्मदेव मनीषी 'व्याकरणा चार्य'
(गुरुकुल कालवा)

चिकित्सा शब्द का अर्थ :—

चिकित्सा का अर्थ रोगनिवृत्तिजनक व्यापार है । अर्थात् जिस व्यापार से रोग उत्पन्न न हो या जिस व्यापार से उत्पन्न रोग शान्त हो जाय उसे चिकित्सा कहते हैं । संस्कृत व्याकरण में "कित् निवासे रोगापनयने च" इस भ्वादिगण की धातु से 'सन्' प्रत्यय करने पर क्त रूप की सिद्धि होती है । केवल व्याधिप्रतिकार व्यापार अर्थ में ही 'कित्' धातु सेस् प्रत्यय होता है । चिकित्सा का लक्षण करते समय चरक शस्त्र के आचार्य ने भी रोगापनयन व्यापार को ही चिकित्सा बताया है । यथा :—

चतुर्णां भिषगादीनां शस्त्रानां धातुवैकृते ।
प्रवृत्तिधातुसाम्यर्था चिकित्सेत्यभिधीयते ॥

(चरक सूत्र-स्थान अध्याय ६ । श्लोक ५)

अर्थ : – धातु के विकृत होने पर उन धातुओं में समता लाने के लिये उत्तम वैद्य आदि चिकित्सा के चार पादों की जो प्रवृति होती है उसे चिकित्सा कहा जाता है ।

चिकित्सा के चार पाद :—

भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पाद चतुष्टयम् ।
गुणवन् कारणं ज्ञेयं विकारव्युपशान्तये ॥
(चरक सूत्र स्थान अध्याय ६ । श्लोक ३)

अर्थ :— (१) गुणवान् वैद्य, (२) गुणवान् द्रव्य (३) गुणवान् उपस्थाता, (४) गुणवान् रोगी चिकित्सा के ये चार पाद सम्पूर्ण रोगों की शान्ति में कारण होते हैं ।

यहाँ चिकित्सा के चार पादों का वर्णन किया गया है । इनमें सब से प्रधान वैद्य है, उसके बाद औषध, परिचारक और रोगी आते हैं, अतः इसी क्रम से ये यहाँ लिखे गये हैं ।

वैद्य के गुण :—

श्रुते पर्यवदातत्वं बहुशो दृष्टकर्मता ।
दाक्ष्य शौचमिति ज्ञेयं वैद्ये गुण चतुष्टयम् ॥
(चरक सूत्र स्थान अध्याय ६ । श्लोक ६)

अर्थ :— (१) शास्त्र का अच्छी प्रकार ज्ञान रखना, २-अनेक बार रोगी, औषध-निर्माण तथा औषध प्रयोग का प्रत्यक्ष द्रष्टा होना, ३—दक्ष होना अर्थात् समय के अनुसार व्यक्ति की कल्पना करने में परम चतुर होना तथा ४- पवित्रता रखना, यह चारों वैद्य के उत्तम गुण माने जाते हैं ।

उत्तम औषधि के गुण :—

बहुता तत्र योग्यत्वमनेकविधकल्पना
संपच्चेति चतुष्कोऽयं द्रव्याणां गुण उच्यते ॥
(चरक सू० अ० ६ । श्लोक ७)

अर्थः— (१) औषधियों का अधिक रूप में प्राप्त होना (२) औषधियों का व्याधि नाश में समर्थ होना, (३) एक ही औषध में अनेकविध (स्वरस, कल्क, चूर्ण, वटी, अवलेह आदि) कल्पना की योग्यता होना, तथा (४) औषधियों का अपने अपने रस, गुण वीर्य, विपाकादि गुणों से युक्त होना, ये चारों औषधि के उत्तम गुण माने जाते हैं।

उप चारक (परिचारक) के गुण :—

उपचारज्ञता दाक्ष्यमनुरागश्च भर्तरि ।
शौचं चेति चतुष्कोऽयं गुणः परिचरे जने ॥
(चरक सू० अ० ६ । श्लोक ८)

अर्थ : - (१) सेवा कार्य का पूर्ण ज्ञान, २-चतुरता, ३- अपने मालिक (रोगी) के प्रति अधिक प्रेम और ४-पवित्रता इन चार गुणों का परिचारक में होना उत्तम माना जाता है।

रोगी के गुण :—

स्मृतिनिर्देशकारित्वमभीरुत्वमथापि च ।
ज्ञापकत्वं च रोगाणामातुरस्य गुणाः स्मृताः ॥
(चरक सू० अ० ६ । श्लोक ६)

अर्थ : (१) स्मरण शक्ति (२) वैद्य की आज्ञाओं के पालन की प्रवृत्ति (३) निर्भयता और (४) रोग तथा उपद्रवों को अच्छी प्रकार बता सकना, ये चारों रोगी के उत्तम गुण माने गये हैं ।

वैद्य की प्रधानता :—

कारणं षोडश गुणं सिद्धौ पादचतुष्टयम् ।
विज्ञाता शासिता योक्ता प्रधान भिषगत्रतु ॥
(चरक सू० अ० ६ । श्लोक १०)

अर्थ :— सोलह गुणों से युक्त ये चिकित्सा के चार पाद चिकित्सा की सिद्धि में करण हैं। इन चारों में औषधों को जानने वाला, परिचारक पर शासन करने वाला और रोगी में रोगानुसार औषध योगों का योग करने वाला होता है अतः वैद्य ही प्रधान माना गया है।

वैद्य की चार वृत्तियाँ :—

मैत्री, कारुण्यमार्तेषु शक्ये प्रीति रुपेक्षणम्।
प्रकृतिस्थेषु भूतेषु वैद्यवृत्तिश्चतुर्विधा॥
(चरक सू० अ० ९। श्लोक २६)

अर्थ :— (१) मैत्री—प्राणी मात्र में मित्रता का व्यवहार (२) आर्तेषु कारुण्यम्—रोगी व्यक्तियों पर दया का भाव, (३)-शक्ये प्रीतिं :— साध्य रोगों में प्रेम पूर्वक चिकित्सा करना और (४) प्रकृतिः स्थेषु भूतेषु उपेक्षणम् :- असाध्य रोगी या रोग में उपेक्षा का भाव रखना, वैद्यों में ये चार प्रकार की वृत्तियाँ होनी चहिये।

चरित्र बल और समाज

● श्रीमती सत्यवती आर्या सिद्धान्त शास्त्री
आर्य वानप्रस्थाश्रम (ज्वालापुर)

चरित्र ही समाज रूपी वृक्ष का मूल है। जिस भांति सुदृढ़ मूल पर ही वृक्ष का खड़ा रहना अवलम्बित है, उसी प्रकार समाज रूपी वृक्ष की सुदृढ़ता के लिये चरित्र रूपी मूल का सुदृढ़ होना नितांत आवश्यक है, वृद्ध जन इस समाज रूपी वृक्ष का तना है, युवक हैं डालियां और दूध मूहें बालक बालिकायें हैं कोमल फूल और फल।

जिस प्रकार मूल पर वज्र प्रहार करने से वृक्ष सूख कर धराशायी हो जाता है। फूल, फल, कोंपले और पत्ते सभी मुरझा जाते हैं. उसी प्रकार चरित्ररूपी मूल पर ध्यान न रखने से समाज वृक्ष भी बहुत समय तक खड़ा नहीं रह सकता। अतएव स्वस्थ, सबल और प्रभावशाली समाज की रचना के लिये चरित्र बल रूपी मूल का संबर्धन अनिवार्य है। समाजरूपी शरीर को बलवान् व स्वस्थ बनाये रखने के लिये यह भी आवश्यक है कि मनुष्य का चरित्र पवित्र हो वह सभ्य हो और श्रेष्ठाचार वाला हो।

समाज में चरित्रवान् पुरुष ही सम्मान पाता है यदि तुम्हारे जीवन की आधार शिला ही प्रभावशाली है तुम कर्तव्य-निष्ठ, बुद्धिमान, गम्भीर और शालीन हो, सभ्य हो, सुशील हो, शिष्टाचार और श्रेष्ठाचार आदि गुण आप में विद्यमान हैं तो याद रखो विश्व में आप का सभी समाजों में मान और प्रतिष्ठा सदा बढेगी और तुम्हारी ओर राष्ट्र भी आशा भरी निगाहों से देखेगा।

जो मनुष्य चरित्रहीन है वह तो समाज का शत्रु है, वह तो मनुष्य कहलाने योग्य नहीं।

परिमाग्ने दुश्चरिताद् बाधस्वा मा सुचारिते भज।
उदायुवा स्वादुषोद स्थाममृताँऽअनु ॥ यजुर्वेद ४।२८ ॥

हे अग्ने ! मुझे दुश्चरित्र से सदा बचाते रहो और सुचरित्र में सदा चलाते रहो, जिस से उच्च जीवन और पवित्र जीवन के साथ देवत्व की ओर बढ़ूं।

हम कौन है? हम उन ऋषियों की सन्तान हैं जिन के चरणों में बैठ कर सारा संसार कभी, ज्ञान विज्ञान और सदाचार की शिक्षा प्राप्त करता था। हम उन वीरों की संतान हैं जिन वीरों के सामने पाप और पापी, अत्याचार और अत्याचारी, दुराचार और दुराचारी थर थर कांपते थे। हम संतान हैं उन आर्य्यों की, जिन का संसार में जय घोष था।

एतद्देश प्रसूतस्य सकासादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्र शिक्षेरन पृथिव्यां सर्व मानवाः ॥

यह भारत वर्ष किसी समय में इतना ऊँचा और विद्या में महान् था कि विश्व के राष्ट्र यहां अपने चरित्र-निर्माण का उपदेश लेने आते थे। जिस देश के प्रत्येक मानव के हृदय में वैदिक भावनायें ठाठे मारती हो। जिस देश के न केवल मानव मात्र बल्कि शुक और सारिकाओं के मुख से भी वैदिक-ऋचिओं की मधुर ध्वनि गुंजायमान रहती हो, जिस देश का एक एक कण ईश्वरीय सत्ता से अपने आप को ओत प्रोत समझता है। उस पवित्र देश के निवासियों के हृदयरूपी दर्पण में यदि विश्व के लोग अपनी चरित्ररूपी सूरत को न देखें यह कभी हो सकता है। आदि सृष्टि से लेकर आज तक कितने ही ऋषि, मुनि, तपस्वी, योगी और साधक इस परम श्रेष्ठ चरित्र से ही आज तक ख्याति पाये हुए है और उन का नाम अमर है। कृण्वन्तो विश्व मार्यम्। वेद के आदर्श

सिद्धान्तों से वेद के अनुकूल अपने जीवन को बनाना है। हमारे पूर्वज सुसंस्कृत सभ्य, जितेन्द्र और परम तपस्वी थे। हमें भी उसी के अनुसार अपने जीवनों को बनाना है।

जो व्यक्ति अथवा समाज धर्म मार्ग से भ्रष्ट हो जाते हैं उन का वैभव उन का गुण-गौरव देर तक नहीं रह पाता, इस लिये निश्चय जानिये प्रभु-भक्ति और प्रभु-कृपा के फल स्वरूप हस्तगत हुआ धन ही सुस्थिर और श्रेयस्कर होता है। वही धन सुयश और सुकीर्ति बढ़ाने वाल जो सात्विक सिद्धान्तों से कमाया जाता है। इस दैवी धन से समन्वित व्यक्ति समाज, राष्ट्र को उन्नत करता है इह-लौकिक श्रेय और आनंद को पाता है —

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे।
यशसं वीर वत्तमम्॥ अथर्व वेद १।१।३॥

परमात्मा की कृपा से ही पुरुष धन को प्राप्त होता है धन दिन दिन में बढ़ने वाला है कीर्ति दाता है जिस धन से धर्म से मनुष्य लोभ को त्याग कर संयमी पुरुष उत्तरोत्तर उन्नति पथ पर प्रति दिन चढ़ता है :—

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद्, वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतो हतः॥

चरित्र की यत्न से रक्षा करो, धन तो आता और जाता है, धन से क्षीण हुआ क्षीण नहीं परन्तु चरित्र से क्षीण हुआ मरे के तुल्य है।

आधुनिक काल में सब कुछ धन को समझ लिया है, परन्तु हमारे ऋषियों ने तो वेद-शास्त्रों में चरित्र का स्थान ऊँचा कहा है। स्वामी विवेकानन्द अमेरिका में भ्रमण कर रहे थे एक युगल दम्पति उन के पास से निकले :— पति कहता है अपनी पत्नी से — 'इस व्यक्ति को देख इस की पोशाक कैसी

है। पत्नी स्वामी जी की तरफ देख कर हंस पड़ी, स्वामी जी वहीं पर रूक गये और उन पति और पत्नी से कहने लगे- आप के देश में अच्छी पोशाक वाले को सभ्य समझा जाता है परन्तु हमारे देश में वेशक पोशाक साधारण हो परन्तु चरित्रवान् व्यक्ति को सभ्य समझा जाता है, हम चरित्रवान व्यक्ति का आदर करते हैं। स्वामी जी के इन वचनों को सुन कर वे दोनों व्यक्ति लज्जित हुए और स्वामी जी से क्षमा मांगी।

आधुनिक सभ्यता के प्रेमी बडे गर्व से कहते हैं कि हम जनता का "जीवन स्तर" ऊँचा उठाना चाहते हैं परन्तु किसी देश व जाति का "जीवन स्तर" केवल भौतिक शरीर तक ही सीमित नहीं है। सुन्दर वस्त्र पहनना, व्यायाम करना योग के आसनों के स्थान पर वेड मिन्टन खेलमा, मेज पर बैठ कर भोजन करना, प्रभु कीर्तन करने के वजाय क्लब घर में जा कर जुआ खेलना, मादक द्रव्यों का सेवन करना, अपने बाल वच्चों और स्त्री के सामने शराव पीना, मांस और अन्डो का प्रयोग करना। जिस समय उषाकाल में ब्रह्म पूजा के स्थान और जिस समय हवन सुगन्धि घर में होनी चाहिये उस समय ब्रेकफाष्ट में अन्डो की दुर्गन्ध घर में फैलती है। फिल्मी अश्लील गीतों को गाना आदि 'जीवन स्तर" ऊँचा उठाने के साधन समझ लिया है। इन साधनों से तो वच्चों का ब्रह्मचर्य्य नष्ट हो रहा है।

आज तो "जींवन स्तर" धन से नापा जाता है। धन एकत्र करने के लिये हर पूकार का छल कपट, अन्याय होने लगा है।

जींवन तो सादगी, नमृता, सत्य, सेवा, स्वध्याय, सद्-व्यवहार की ज्योति से चमकता है।

मनुष्य का आचार ही परम धर्म है, जो धर्म वेद स्मृतियों में वताया गया अर्थात् :—"तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः। कस्य

स्विद्धनम्" । त्याग भाव से इस संसार के ऐश्वर्य को भोग, लालच मत कर, यह धन किसी का नहीं है । द्विज को इसी के अनुसार चलना यही धर्म का सार है ।

'मांस रूक्षाहारं मद्यादि पानं च वर्जय"

वेद में सुरापान तथा बुद्धि विनाशक द्रव्यों का सेवन निषेध है । "अक्षैर्मा दीव्यः" जुआ मत खेल । व्यभिचार न कर । दूसरे के अधिकार अन्न और धन न छीन । किसी से द्रोह न कर, पवित्र चरित्र बाला शीलवान व्यक्ति बन :—

"अद्रोही सर्व भूतेषु कर्मणा मनसा गिरा ।
अनुग्रहश्च ज्ञानं च शीलमेतद् विदुर्बुधाः ॥

मन, वाणी और कर्म के द्वारा प्राणधारियों के विषय में द्रोह रहित और सब से मेल से रहना व ज्ञान को बढ़ाते रहना बुद्धिमान लोग इस को शील (आचार अथवा चरित्र) कहते हैं ।
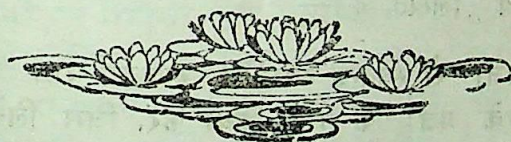
महर्षि के सपनों का भारत

— गतांक से —

युक्त सबके मित्र सभापति राजा सर्वाधीश मान के सब भूगोल को शत्रु रहित करो ।" (यजु० ६ । ४०)

सत्ता जनता में ही अधिष्ठित हो :—

महर्षि का कथन है कि राजा को "स्वतन्त्र स्वाधीन' नहीं होना चाहिए । वे सभापति (राजा) की स्वछन्दता अथवा एकतन्त्रता को राज्य और प्रजा के लिए अहितकारी समझते है क्योंकि ऐसी परिस्थिति में सम्पूर्ण सत्ता केवल उसी में प्रतिष्ठित हो जाती है और वह जो जी में आये करने लगता है । ऋषिवर्य लिखते है :—

"जो प्रजा से स्वतन्त्र स्वाधीन राजवर्ग रहे, जो राज्य में प्रवेश करके प्रजा के नाश किया करे, जिस लिये अकेला राजा स्वाधीन या उन्मुक्त हो के प्रजा का नाशक होता है, अर्थात् वह राजा-प्रजा को खाये जाता है, इसलिए किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिये ।"

(स० प्र० समु० ६)

इससे यह सिद्ध होता है कि महर्षि प्रजा की सत्ता को स्वीकार करते हैं और इस राजनैतिक सिद्धान्त को मानते हैं कि "वास्तविक सत्ता प्रजा से प्रतिष्ठित हो और राजा या सभापति को प्रजा का प्रतिनिधि होना चाहिए ."

राजा और प्रजा के सम्बन्ध :—

राजा और प्रजा के सम्बन्ध पर ही राज्य की सुख शांति उसकी शक्ति और सामर्थ्य, उसका वैभव और ऐश्वर्य निर्भर होता है। क्योंकि इन दोनों के पारस्परिक सद्व्यवहारों तथा सुखद सम्बन्धों के विना राज्य का शासन तथा कार्य सुचारु रूप से संचालित नहीं हो सकता। इस सम्बन्ध में भी महर्षि का मत है कि :—

"प्रजा के धनाढय, आरोग्य खान-पान आदि से सम्पन्न रहने पर राजा की बड़ी उन्नति होती है। प्रजा को अपने सन्तान के सदृश्य सुख देवे और प्रजा अपने पिता राजा और राजपुरुषों को जाने।....जो प्रजा न हो तो राजा किसका? और राजा न हो, तो प्रजा किसकी कहावे। दोनों अपने अपने कार्यों में स्वतन्त्र और मिले हुए प्रतियुक्त काम में परतन्त्र रहें। प्रजा की साधारण सम्पत्ति के विरुद्ध राजा व राजपुरुष न हो।" (स० प्र० समु ६)

शासन-कार्य तीन सभाओं के द्वारा सम्पन्न हों :-

युद्ध तथा शासन व्यवस्था के लिये महर्षि ने तीन सभाओं को आवश्यक बतलाया है अर्थात् (१) विद्यासभा जो बडे-बडे विद्वानों एवं शिक्षकों द्वारा निर्मित हो। (२) धर्म-सभा जो दिग्गज धार्मिक विद्वानों तथा आचार्यों द्वारा निर्मित हो और (३) राज-सभा जो राजनीतिज्ञों एवं कुशल शासकों द्वारा निर्मित हो। महर्षि का मत है कि इन "तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम और नियमों के अधीन सब लोग बर्तें सबके हितकारक कामों में सम्मति करें।"

राज सभा के उद्देश्य :—

राजा और राजसभा को किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यत्नशील रहना चाहिए, इसके सम्बन्ध में महर्षि ने लिखा है :—

राजा और राजसभा अलब्ध की प्राप्ति की इच्छा, प्राप्त की प्रयत्न से रक्षा करे, रक्षित को बढ़ावे और बढे हुए धन को वेद-विद्या, धर्म का प्रचार, विद्यार्थी वेदमार्गोपदेशक तथा असमर्थ अनाथों के पालन में लगा दें। इस चार प्रकार के पुरुषार्थ प्रयोजन को जानें। आलस्य को छोडकर इसका भली-भाँति नित्य अनुष्ठान करे। (१) दण्ड से अप्राप्त की प्राप्ति की इच्छा, (२) नित्य देखने से प्राप्ति की रक्षा (३) रक्षित की वृद्धि अर्थात् व्याजादि से बढ़ावे और (४) बढे हुए धन को पूर्वोक्त मार्ग में नित्य व्यय करे। कदापि किसी के साथ छल से न बरते किन्तु निष्कपट होकर सबसे बर्ताव रक्खे और नित्यपृति अपनी रक्षा करके शत्रु के किए हुए छल को जान के निवृत करे। कोई शत्रु अपने छिद्र अर्थात् निर्बलता को न जान सके और स्वयं शत्रु के छिद्रों को जानता रहे जैसे कछुआ अपने अंगों को गुप्त रखता है वैसे शत्रु का प्रवेश करने के छिद्र को गुप्त रक्खे। जैसे बगुला ध्यानावस्थित होकर मच्छी के पकड़ने को ताकता है वैसे अर्थसंग्रह का विचार किया करे, द्रव्यादि पदार्थ और बल की वृद्धि कर शत्रु को जीतने के लिए सिंह के समान पराक्रम करे, चाता के समान छिपकर शत्रुओं को पकडे और समीप में आये बलवान् शत्रुओं से ससा के समान दूर भाग जाय और पश्चात् उनको छल से पकडे। इस प्रकार विजय करने वाले सभापति के राज्य में जो परिपन्थी अर्थात् डाकू लुटेरे हों उनको (साम) मिला लेना (दाम) कुछ देकर (भेद) तोड़-फोड़ करके वश में करे और जो इनसे वश में न हो तो अति कठिन दण्ड से वश में करे।

(स० प्र० समु० ६)

युद्धनीति :—

युद्धनीति के सम्बन्ध में भी महर्षि ने अपने विचार प्रकट किये हैं। गत महायुद्ध में जो विनाश और सेना के साथ प्रजा भी गेहूँ के साथ घुन की भाँति पिस गयी

नियमों का पालन करना पड़ता है, जैसे निःशस्त्रों, दुर्बलों, घायलों और शरणागतों के विरुद्ध शस्त्र नहीं उठाया जाता। किन्तु विजय-मद में चूर आज के विजेताओं ने इस प्रकार की युद्ध-नीति को ताक में रख दिया, क्योंकि जब आक्रमण बमों और विमानों द्वारा हो तो फिर निःशस्त्र और दुर्बल तथा नागरिक जनता का क्या प्रश्न ? मशीनगनों, युद्धपोतों और विमानों के सामने सब कुछ नष्ट होकर रह गया। इस प्रकार निर्दोष हताहतों की संख्या लक्षों तक पहुंच गयी। किन्तु युद्धनीति के सम्बन्ध में अपने मत को प्रकट करते हुए महर्षि ने लिखा है :—

युद्ध समय में न इधर-उधर में खडे, नपुंसक न हाथ जोडे हुए, न जिसके सिर के बाल खुल गये हों न बैठे हुए, न "मैं तेरी शरण हूँ" एसे को, न सोते हुए, न मूर्छा को प्राप्त हुए, न नग्न हुए, न आयुध के प्रहार से पीडा को प्राप्त हुए, न दुःख, न अत्यन्त घायल, न डरे हुए और न पलायन करते हुए पुरुष को सत्पुरुषों के धर्म का स्मरण करते हुए योद्धा लोग कभी मारें। किन्तु उनको पकड़ के जो अच्छे हों बन्दीगृह में रख दें और भोजन-आच्छादन यथावत् देवें और जो उनके योग्य काम हो करावें। विशेष इस पर ध्यान रखें कि स्त्री, बालक वृद्ध और आतुर तथा शोकयुक्त पुरुषों पर शस्त्र कभी न चलावें। उनके लड़के-बालों को अपने सन्तानवत् पाले और स्त्रियों को भी पालें। उनको अपनी बहन और कन्या के समान समझें, कभी विषयासक्त की दृष्टि से भी न देखें।' (स० प्र० समु० ६)

विजेता और पराजित के सम्बन्ध —

इसीलिये स्वामी जी ने विजेता और पराजित के सम्बन्धों को स्पष्ट करते हुए लिखा है :—

"जीत कर उनके साथ प्रमाण अर्थात् प्रतिज्ञादि लिखा लेवे और जो उचित समय समझे तो उसी वंशस्थ किसी धार्मिक पुरुष को राजा कर दे और उससे लिखा लेवे कि तुमको हमारी आज्ञा का अनुकूल अर्थात् जैसी धर्मयुक्त राजनीति है उसके अनुसार चलके न्याय से प्रजा का पालन करना होगा। ऐसे उपदेश करें और ऐसे पुरुष उनके पास रखें कि जिससे पुनः उपद्रव न हो और जो हार जाए उसका सत्कार प्रधान पुरुषों के साथ मिलकर रत्नादि उत्तम पदार्थों के दान से करे और ऐसा न करे कि जिससे उसका योगक्षेम भी न हो जो उसको बन्दीगृह करे तो भी उसका सत्कार यथायोग्य रक्खे जिससे वह हारने के शोक से रहित होकर आनन्द में रहे। क्योंकि संसार में दूसरे का पदार्थ ग्रहण करना अप्रीति और देना प्रीति का कारण है और विशेष करके समय पर उचित क्रिया करना और उस पराजित के मनोवांछित पदार्थों का देना बहुत उत्तम है और कभी चिढ़ावें नहीं, न हँसो न ठट्ठा करें, न उसके सामने हमने तुमको पराजित किया है ऐसा भी कहे किन्तु आप मेरे भाई हैं इत्यादि मान्य प्रतिष्ठा सदा करें।" (स० प्र० समु० ६)

तात्पर्य यह कि स्वामी जी ने राजनीति और शासन सम्बन्धी जिन विचारों को प्रकट किया है वह एक ऐसे राज्य की कल्पना का चित्र खींचता है जहाँ शासन और प्रजा में स्नेह सम्बन्ध हो जहाँ न्याय, प्रेम और समानता का साम्राज्य हो और जहाँ सुख सम्पन्नता और उत्थान के समस्त साधन हों। स्वामी जी का वर्णित राज्य वही है जिसको आधुनिक भाषा में मंगलकारी राज्य कहा जाता है।

सार्वभौम आर्य समाज शिक्षण संस्था परिषद

डी० ए० बी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली-५५

आर्य समाज के सन्देश को संसार के कोने कोने तक पहुचाने के लिए स्थान-स्थान पर आर्य शिक्षण संस्थाओं को स्थापित किया गया। इन संस्थाओं के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के पावन संन्देश को समस्त भूमि पर फैलाने का पूर्ण प्रयत्न किए जा रहे है। जगह जगह पर यह शिक्षण संस्थाएं अपना कार्य इस दिशा में सुचारु रुप से कर रही है।

परन्तु खेद का विषय है कि "दयानन्द विश्वविद्यालय" की योजना का स्वप्न अभी साकार नहीं हो पाया है। अतः प्रत्येक आर्य समाज तथा अन्य सभी आर्य संस्थाओं का यह पुनीत कर्तव्य है कि वह इस कार्य में अपना पूरा पूरा सहयोग प्रदान करे।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वर्गीय डाक्टर मेहरचन्द महाजन जी ने इस कार्य को साकार करने हेतु सन् 1962 में एक संस्था सार्वभौम आर्य समाज शिक्षण संस्था परिषद की स्थापना की, तथा यह संस्था उसी समय से अपना कार्य कर रही है। दुःख है कि आर्य जगत् ने अभी तक इस संस्था को उपेक्षित ही कर रक्खा है जब कि इस संस्था का आर्य जगत के लिये अत्यंत महत्व है। आप इस बात से भी पूर्ण रुप से सहमत होंगे कि इस संस्था द्वारा ही हम अपनी समस्त संस्थाओं को एकता के सूत्र में पिरोकर अपने निर्दिष्ट उद्देश्य तक पहुंचने में सफलता

को साकार कर सकते है । यह तभी सम्भव हो सकेगा जब कि आर्य समाज की समस्त शिक्षण संस्थाओं का एक ही विशिष्ट पाठ्यक्रम, एक ही परीक्षा तथा एक जैसी ही उपाधियां हो। इस प्रकार इन विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने वाले ऐसे स्नातको का एक दल हम खड़ा कर सकेंगे जो वैदिक धर्म तथा आर्य समाज के संदेश को समस्त विश्व में फैला सकेंगें ।

सन् 1975 के दिसम्बर मास में दिल्ली में आयोजन 'आर्य समाज स्थापना शताब्दी' समारोह के शुभ अवसर पर देश देशान्तरो से आये आर्य समाज के नेताओं तथा शिक्षा शास्त्रियो ने इस प्रकार की संस्था के महत्व को स्वीकार किया था तथा कहा था कि समस्त आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं का यह पुनीत कर्तव्य है कि वह सार्वभौम आर्य समाज शिक्षण संस्था परिषद को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करे ।

मै इन समस्त संस्थाओं तथा आर्य बन्धुओं से अपील करता हूँ कि वह मंत्री सार्वभौम आर्य समाज शिक्षण संस्था परिषद डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, चित्रगुप्ता मार्ग नई दिल्ली-११००५५ के कार्यालय से प्रवेश पत्र तथा अन्य आवश्यक सामग्री मङ्गवा कर परिषद के सदस्य यथाशिघ्र बनने की कृपा करे ।

दिनांक :— १५ अप्रेल, १९७७

चम्पत राय, एडवोकेट
एम० ए० एल-एल० बी०
मन्त्री
डी० ए० बी० कालेज प्रलन्धकर्तृ समिति, न० दि०-५५

श्री वीरदेव आचार्य नेपाल सरकार

द्वारा

अभिनन्दित

श्री वीर देव आचार्य को नेपाल के महाराजा धिराज श्री वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव ने १८-२-७७ को काठमांडो के राजभवन में आयोजित एक भव्य समारोह में महेन्द्र विद्याभूषण पदक और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया है।

श्री वीरदेव ने झज्जर गुरुकुल (रोहतक से शास्त्री और आचार्य उपाधियां प्रथम श्रेणी के साथ सर्वोच्चतर पर प्राप्त की थी, जिसके प्रतिफल में उन्हें श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ से प्रत्येक उपाधि पर स्वर्णपदक मिले।

प्रतिभाशाली वीरदेव ने तदुपरान्त गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय से एम. ए. की उपाधि संस्कृत साहित्य में न प्रथम श्रेणी में ग्रहण की, अपितु एम. ए. टाप करके विशेष कीर्तिमान् स्थापित किया। यहां भी पदक प्राप्त किया।

इस उच्चस्तरीय अध्ययनों पर नेपाल की सरकार ने भी श्री वीरदेव आचार्य को अपने महेन्द्र विद्याभूषण पदक और प्रशस्ति पत्र से अभिनन्दत किया है।

श्री वीरदेव आचार्य मूलतः नेपाली हैं। आजकल गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में चालुक्य वंशीय राजा विक्रमांकदेव पर शोध कर रहे हैं।

वेदानन्द वेदवागीश
प्रस्तोता
श्री मद् दयानंद आर्ष विद्यापीठ, झज्जर
(रोहतक)

★ पशुबली प्रथा निषेध और वैदिक यज्ञ ★

गंजाम जिलान्तर्गत वापांगि ग्रामस्थ वापांगि ठाकुराणी के सम्मुख एवं राजकुंडु ग्रामस्थ मंगला ठाकुराणी के सम्मुख दि० २३-३-७७ एवं २७-३-७७ को अत्यंत समारोह के साथ वैदिक यज्ञ और प्रवचन स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती के द्वारा संस्थापित तपोवन शांति आश्रम तथा श्रीवत्स गोरक्षाश्रम विद्वानों के पौरहित्य में आयोजन हुआ था। अनेक वर्षों से इन उभय ठाकुराणी के सम्मुख पशुवली प्रथा प्रचलन था। श्री सुदाम चंद्र वेहेरा जी के प्रयत्नों से पशुवली प्रथा निषेध होकर वहां पर वैदिक यज्ञादि अनुष्ठान होने के कारण उस इलाका में एक नूतन वातावरण देखा गया है।

फुलवाणी जिलास्थ राइकिया में :—
यज्ञ और वैदिक धर्म का प्रचार

वन्य पर्वतों से घिरा हुआ फुलवाणी जिलास्थ राइकिया प्रमण्डलांतर्गत लामुगिंया ग्राम में माघ पूर्णिमा के दिन श्री खगेश्वर प्रधान जी के विशेष प्रयत्नों से वैदिक यज्ञ और धर्म सभा अनुष्ठित हुई थी।

भद्रक में वैदिक यज्ञ और वैदिक धर्म का प्रचार

वालेश्वर जिलास्थ भद्रक उप मंण्डलान्तर्गत अन्नपाल में स्वामी सत्यानंद सरस्वती जी के आचार्यत्व में अप्रेल २ से ४ तक वैदिक यज्ञ और धर्म सभा हुई थी। जिस में स्वामी प्रणवानंद सरस्वती, आचार्य वीरेन्द्र पंडा, श्री क्षेत्रमोहन मिश्र, पं० प्रमोद कुमार मिश्र आदि अनेक साधु, संत तथा विद्वानों ने भाग लिये थे।

—: परमाणुपुर में यजुर्वेद पारायण यज्ञ :—

सम्बलपुर जिलान्तर्गत परमाणुपुर में एप्रिल १६ से २१ तक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के पौरहित्य में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज निउ अलीपुर (कलकत्ता) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज निउ अलीपुर (कलकत्ता) का वार्षिकोत्सव दि० १६ को अत्यंत समारोह के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज बड़ा बजार (कलकत्ता) का स्वर्ण जयन्ती

आर्य समाज बड़ा बजार (कलकत्ता) का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव दि० १६ से १७ एप्रिल तक अत्यंत महा समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। जिस में आर्य जगत् के प्रसिद्ध आर्य सन्यासी स्वामी रामेश्वरानंद सरस्वती, वेदों के प्रकाण्ड पण्डित आचार्य विश्वश्रवा, पं० शिव दयालु, पं० उमाकांत उपाध्याय श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम आदि विद्वानों ने भाग लिये थे।

इस अवसर पर आर्य समाज बड़ा बजार कलकत्ता द्वारा अपने स्वर्ण जयंति उपलक्ष्य में मानव निर्माण और आर्य समाज विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं के नाम इस प्रकार है।

प्रथम— श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम (मथुरा)
द्वितीय— आचार्य दीनानाथ सिद्धांतलंकार (दिल्ली)
तृतीय— श्री जयदेव आर्य (हरयाणा)

उपरोक्त तीनों बिजेताओं को क्रमशः रु ११००-००, रु८००-०० एवं रु ५००-०० प्रदान किया गया।

केन्द्रापड़ा में वैदिक धर्म प्रचार

केंद्रापड़ास्थ कुशियापाल वायावसा आश्रम में उत्कल आर्य संन्यास वानप्रस्थ मण्डल की ओर से दि० २७-४-७७ को वैदिक धर्म का प्रचार हुआ था। जिस में आर्य संन्यास वानप्रस्थ मंडल के सभापति स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती मंत्री स्वामी प्रणवानंद सरस्वती, उप मंत्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, पृचार मंत्री स्वामी सत्यानंद सरस्वती तथा भजनोपदेशक रणजीत आर्य आदि साधु संन्यासी तथा उपदेशक योग दिये थे।

आर्य समाज कानपुर का दशम वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कानपुर (नृसिंहपुर) का दशम वार्षिकोत्सव दि० २५, २६ एप्रिल ७७ को वडे धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती, स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, स्वामी पृणवानन्द सरस्वती, भजनोपदेशक रणजीत आर्य आदि अनेक विद्वानों संन्यासी, वानपृस्थी योग दिये थे। पृतिदिन यज्ञ हवन तथा धर्मोपदेश होता था। वहां पर आर्य समाज कार्यकर्त्ताओं के ओर से एक गुरूकुल खोलने के लिये पृस्ताव भी हुआ।

●

With best Compliments from

ORISSA INDUSTRIES LIMITED

Latkata Works

ROURKELA-4

(Regd. Office : P. O. BARANG, Cuttack)

शुभ
कामनाओं के साथ

रिलायन्स टेक्सटाईल इंडस्ट्री लिमिटेड

अहमदाबाद - बम्बई :

विमलरेन्ज :

सुटिंग्स, सर्टिंग्स, साड़ी और
ड्रेस मटिरियल्स

BANAWASI SANDESH April 1977 Regd. No. 618

प्रकाशक— स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा शान्ति आश्रम प्रेस, गु...
वैदिक आश्रम वेदव्यास, राउरकेला - ४ में मुद्रित ॥

ओ३म्

★ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ★

वनवासी सांस्कृतिक समिति, वेदव्यासस्य,
मासिकं मुखपत्रम्

वनवासी संदेश

संस्थापक :—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

●

—: वेद कहता है :—

● अकर्मा दस्युः

ऋग्वेद १०।२२।८

कर्म न करने वाला ही दस्यु है।

● दस्युनव धनुस्त्व

दस्युओं को धुन डालो।

●

संपादक	सह- संपादक
पं० आत्मानन्द शास्त्री	पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति

नीति वचन

१- विपरीत न वेद वीर्य दर्पण ।

—देश काल के विपरीत कर्म का अनुष्ठान मानव कभी अपने ज्ञान तथा शक्ति के घमण्ड में आकर न करें ।

२- हितानि निरुपयेत् ।

—देश काल अनुमोदित हित कार्यों का ही सदा अनुष्ठान करना चाहिये ।

३- सर्व भयेषु ज्ञातिभयं घोररेम् ।

—संसार के अन्य सब भयों की अपेक्षा कुटुम्बीजनों का भय घोर होता है ।

४- धर्न द्विविधे गुरौ भक्तिश्च ।

—श्रेष्ठ कर्मों के असुष्ठान में जब द्विविधा उत्पन्न होती हो तो ज्ञान गम्भीर तत्ववेत्ता गुरुजनों का परामर्श प्राप्त करने के लिये भक्तिपूर्वक उनका सहारा पकड़ना चाहिये ।

वनवासी–सन्देश

उत्कल जनता संस्कृति रक्षा वद्धकटिस्तमः स्तोमहृतिदेशः
गुरुकुल सुपानपोषादुदयति वनवासी संदेशः ॥
यो भ्रष्ट ख्रीष्ट्मत दीक्षित मज्ञलोकम्
संस्कृतय दूरयति तद्धृदयांधकारम ॥
श्री वेदव्यास सुगुरो कुल सन्निवेशः
सम्पूर्वादेरुदयते वनवासी सन्देशः ॥

वर्ष ११ अंक ५	मई १९७७	वार्षिक मूल्य ५ रु एक प्रति ५० पैसे
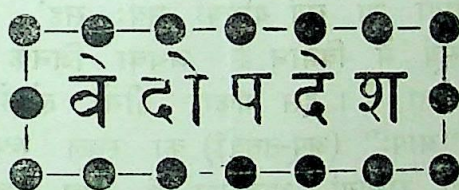
ये त्रिषप्ताः परि यन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥

अथर्व १।१।१

वक्तव्य :— मन्त्र में 'त्रिषप्ताः' शब्द का सुजर्थव्युत्पत्ति से "सुजभांवोऽभिहितार्थत्वात्समासे" (महाभाष्य २।२।२) तीन आवृत्ति में आने वाले सात, तीन स्थानों में होने वाले सात जैसे 'द्विदशाः" (महाभाष्य २।२।२) दो आवृत्ति में आने वाले दश-दो स्थानों विद्यमान दश, कुल बीस परन्तु दो

वर्गों में दश दश करके । इसी प्रकार "त्रिषप्ताः" तीन आवृत्ति में आने वाले सात कुल इक्कीस परन्तु तीन वर्गों में सात सात करके चलने वाले ही समासार्थ है । एवं इस लक्षण के अनुसार 'त्रिषप्ताः' हैं 'आपः' इस में ऋग्वेद का प्रमाण है "प्रसुव आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वोचाति सदने विवस्वतः प्र सप्त सप्त त्रेधा हि चक्रमुः ॥' (ऋ० १० । ७५ । १) इस मन्त्र में स्पष्टरूप से 'आपः' (जलों) को "सप्त सप्त त्रेधा प्रचक्रमुः" तीन जगह में सात सात हो कर प्रगति करते हैं ऐसा कहा है, सायण ने भी उक्त मन्त्र के भाष्य में कहा है "त्रेधा पृथिव्यामन्तरिक्षे दिवि च" पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक इन तीन स्थानों में प्रगति करते हैं । 'आपः' तीनों लोकों में हैं इसके अन्य प्रमाण भी हैं "इयं पृथिवी वा अपामयनमस्यां ह्यापो यन्ति' (श० ७ । ५ । २ । ५०) "अन्तरिक्षं वा अपां सधस्थम्" (श० ७ । ५ । २ । ५७) द्यौर्वा अपां सदनम्" श० ७। ५ । २ । ५६) इन प्रमाणों में पृथिवी को जलों का अयन, अन्तरिक्ष को जलों का सधस्थ और द्युलोक को जलों का सदन बतलाया है । इसी अनुवाक के चतुर्थसूक्त में कहा भी है कि "अमूया उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह' जो 'आपः, (अप्-तत्वों) सूर्य में विमान हैं अथवा जिनके द्वारा सूर्य प्रकाशमान होता है । इस प्रकार तीनों लोकों में प्रगति करने वाले "आपः" (अप्-तत्वों) का स्थूल रूप द्युलोक में सप्त रंगवाली रश्मियां, अन्तरिक्ष में भिन्न भिन्न सप्त मरुतों का गण-मरुद्गण (वायुप्रतिधियाँ-वायुस्तर-वायु परत) और पृथिवी पर भिन्न भिन्न गुण रूपवाले सप्त जल प्रवाह हैं । इन त्रिस्थानी अप्तत्वों से क्रमशः द्युलोक में सूर्य, अन्तरिक्ष में विद्युत् या विद्युन्मय वायु और पृथिवी पर अग्नि ये तीनों अग्नियां प्रकट होती तथा बल पाती हैं । इन ऐसे 'आपः' से समस्त जगत् आप्त व्याप्त है, कहा भी है ',तद्यदब्रवीद् ब्रह्म आभिर्वा अहमिदं सर्वमाप्स्यामि यदिदं किञ्चेति तस्मादापोऽभवन्" (गोपथ० पू० १ । २) "अद्भिर्वा इदं सर्वमाप्तम्" (श० १ । १ । १ । १४) ये ऐसे 'आपः' 'त्रिषप्ताः' नाम से यहां कहे गये है । अस्तु । अब मन्त्रार्थ देते हैं—

(ये) जो 'जगत् में प्रधान पदार्थ' (त्रिषप्ताः) तीनों-पृथिवी अन्तरिक्ष और द्युलोक में सात सात भेद से वर्तमान हुए ',आपो''''प्र सप्त सप्त त्रेधा हि चक्रमुः'' (ऋ० १०।७५।१ 'आपः' अप्तत्व-सात रश्मियां, विद्युन्मय सात वायुस्तर, सात जल प्रवाह (विश्वा) सब (रूपाणि) स्वरूपवान् वा निरूपण करने योग्य उत्पन्न हुई वस्तुओं को (बिभ्रतः) धारण और पोषण करते हुए (परियन्ति) परिक्रमा करते हैं-सब ओर गति करते हैं (तेषाम्) उन के (बला) बलों-सामर्थ्य तेज और जीवन को (मे) मेरे (तन्वः) शरीर में 'सुपां सुपो भवन्तीति ङि स्थाने ङस्'' (अद्य) आज-अब-निरन्तर (वाचस्पतिः) वेदवाणी का स्वामी प्रजापति परमेश्वर ''प्रजापतिर्वै वाचस्पतिः'' (श० ५।१।१।१६) (दधातु) धारण करे संस्थापित करे अन्दर प्रविष्ट करे ॥१॥
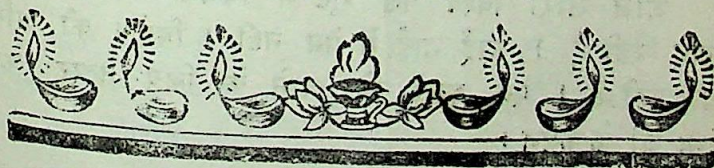
स
म्पा
द
की
य

महर्षि दयानन्द और मानवतावाद

आज सारा विश्व कई गुट में विभक्त है। मानवता कराह रही है। भाई भाई में प्रेम नहीं। विद्वेष की अग्नि धधक रही है। एक दूसरे को खाने के लिये तत्पर। कहां भीष्म जी के कथन :—

नैव राज्यं न राजासीन् न दण्डो न च दाण्डिकः।
धर्मेणैव प्रजाः सर्वा रक्षन्ति च परस्परम्" ॥

और कहाँ आज के मत्स्य न्याय। बड़ी मछली की छोटी मछली को खाने की प्रवृत्ति। आप जहाँ भी चले जाइये, कहीं भी शांति नहीं मिलेगी। हर जगह लड़ाइ झगडे का बखेड़ा मिलेगा। अमेरिका रूस से लड़ रहा है तो चीन भारत को ललकार रहा है। एक को नीचा दिखाने के लिये प्रयत्नशील। हर जगह आप दूसरेको मिलेगें कौरवों की सेना एवं रावण के अनुयायी, दिनोंदिन आत्यहत्यायें बढ़ रही है, हडतालें हो रहा है, अत्याचार बढ़ रहे है।

आज से ९०९ वर्ष पूर्व युगद्रष्टा महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने विश्व विख्यात अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ-प्रकाश के अष्टम समुल्लासः" में प्रश्नोंत्तर रुप में लिखते हैं :—

प्रश्न उठता है यह क्यों हो रहा है? इसका मूल कारण क्या है? निःसन्देह विश्व में अन्याय, अत्याचार बढ़ रहा है। आज भारत भी उससे अछूता नहीं क्योंकि यह भी आज पाश्चात्य सभ्यता के पदचिन्हों पर चल रहा है।

प्रश्न :— आदि सृष्टि में एक जाति थी वा अनेक।

उत्तर : एक मनुष्य जाति थी पश्चात् "बिजानीह्यार्यान्ये च दस्यवः" यह ऋग्वेद मन्त्र १। सू० ५१। ८ का वचन है। श्रेष्टों का नाम आर्य, विद्वान, देव और दुष्टो के दस्यु अर्थात् डाकू, मूर्ख, अधार्मिक और अविद्वान है।

(स० प्र० पृ० २३६ प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-३)

अब प्रश्न होता है कि आदि सृष्टि में एक हुए अथवा अनेक। इस पृश्न को सुलझाते हुए महर्षि दयानन्द उसी ग्रन्थ पर लिखते हैं :—

(प्र०) सृष्टि की आदि में एक वा अनेक मनुष्य उत्पन्न किये थे वा क्या? (उ) अनेक क्योंकि जिन जीवों के कर्म ईश्वरीय सृष्टि में उत्पन्न होने के थे उनका जन्म सृष्टि की आदि में ईश्वर देता क्योंकि "मनुष्याः" (मुण्डक २। १। ७

ऋषयश्च ये (यजु० ३१ । ६) ततो मनुष्य अजायन्ता, (शतपथ १४ । ३ । २ । ५) यह यजुर्वेद (और उसके ब्राह्मण) में लिखा है । इस प्रमाण से यही निश्चय हैं कि आदि में अनेक अर्थात् सैकड़ों सहस्रों मनुष्य उत्पन्न हुए और सृष्टि में देखने से भी निश्चय होता है कि मनुष्य अनेक मां बाप के सन्यान है ।
(स० पृ० २६६-२६७)

महर्षि दयानंद के सारे वाङ्मय को अध्ययन कर जाइये आपको आश्चर्य होना पडेगा कि कितना स्पष्ट रुप संसार के सामने लड़ाई झगडे का मूल कारण पेश किया है ।

अब हम महर्षि दयानन्द के ही विचारों से मिलता हुआ उल्लेख श्रीमद् भागवत गीता में पाते है । वहां मनुष्य समाज को दो सम्प्रदायों में विभक्त किया गया है :-

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥

(१६ । ६

इस संसार में दो प्रकार की सृष्टि है । एक दैवी सम्पति वालों की और दूसरी आसुरी सम्पति वालों की व्यक्तियों, श्रेणीयों को दैवी और आसुरी दो ही स्वभाववालों में बांटा जा सकता है । दैवी स्वभाव वालों से मित्रता और आसुरी स्वभाव वालों से शत्रुता रखनी चाहिए । इसीलिए तो वेद भगवान ने कहा है : - "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

हमारा कहना है कि मानव समाज में दो ही प्रकार के प्राणी है एक आर्य (देव) अर्थात् बुद्धिमान और दूसरा दस्यु (असुर) अर्थात् मूर्ख । संसार में मूर्खों की सख्या बहुत अधिक

है। और बुद्धिमानों की बहुत कम । मुर्ख समुदाय के अनेकानेक उप-समुदाय है । बुद्धिमानों में तो उप समुदाय बन नहीं सके । उनमें बन सकते भी नहीं । कहावत है न 'अक्लमन्दों" की एक बात और मूर्ख अपनी अपनी ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में आठ प्रमाणों के लक्षण कहते हुए लिखते हैं कि- व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम् ॥ न्याय १ आहनिक १ । सू० ४ ॥.... "व्यवसायात्मक" किसी ने दूर से नदी की बालु को देख के कहा है कि "वहां वस्त्र सूख रहे है जल है वा और कुछ है" "वह देवदत्त खड़ा है वा यज्ञदत्त, जब तक एक निश्चय न हो तब तक प्रत्यक्षज्ञान नहीं है किन्तु अव्यपदेश्य, अव्यभिचारी ओर निश्चयात्मकज्ञान है उसी को प्रत्यक्ष करते हैं" (स० प्र० ३. पृ०) अर्थात् निश्चयात्मक बुद्धि एक होती है और अनिश्चयात्मक बुद्धियाँ अनेक होती हैं । इसकी बहुत शाखायें होती हैं । संसार में बुद्धिमानों का एक मत है, परन्तु मूर्खों में अनेक मतमतान्तर हैं । दंगे, हडताल, अत्याचार, लडाई, झगडा मूर्ख मतान्तरो में होते हैं कभी तो वे स्वयं करते है और कभी दूसरे मूर्ख मतान्तर वाले करा देते हैं । हाँ ! बुद्धिमान कभी कभी उन मूर्खों की लपेट में आते हैं तो पिट जाते हैं । बन्दर और बये की कहानी चरितार्थ हो जाती है । प्रायः मूर्खों के मतान्तर ही परस्पर दंगा कराते हैं ।

आज संसार में एक भयङ्कर विषमता उत्पन्न हो रही है । वह यह कि कही भी मानव समाज में समुदाय आर्यत्व (बुद्धिमता) और दस्युता (मूर्खता) के आधार पर नहीं बन रहे । आज समुदाय का आधार बन रहा है ईसाइ यहूदि, मुसलमान, पारसी, बौद्ध, जैन, हिंदू इत्यादि । राजनीति में गान्धी वाद, मार्क्सवाद सोशॅलिजम रिपब्लिककनपंथ रूसवादी, चीनवादी, बिसमार्कपंथ इत्यादि ये सब अपने आप पर भिन्न भिन्न लेबल लगाकर अनेक मत मतान्र बनारहे हैं ।

एक बात स्पष्ट है कि सब शुष्क ढ़ाचे में बन्धे हुए मत-मतांतर ही हैं । कहीं भी बुद्धि इनका आधार नहीं है। यह है संसार में अव्यवस्था की मीमांसा उनमें दंगो के कारण । इस विशाल मूर्ख जनता में कुछतो लडते हैं, कुछ इनके लड़ने पर फतवा पास करते हैं कि अमुक लेवल (नाम) वाले मूर्ख दोषी है और अमुक लेवल वाले मूर्ख पीड़ित है। समस्या यह है कि संसार में मूर्खों की संख्या बहुत बढ़ गई है । इन के समुदाय अनेक है । यदि इनको कोई नहीं लड़ायेगा, तब भी ये लडेंगे ।

कई लोगों के विचारधारा में संसार के अन्दर अशिक्षा के कारण ही ये सब हो रहा है । जब सारा मानव समाज शिक्षित हो जायेगा तो लड़ाई झगड़ा, अशान्त वातावरण नहीं होगा । किंतु गम्भीरता से विचार करने से पता लगता है कि आज शिक्षा के क्षेत्र में खूब उन्नति हुई है । M.A, B.A डक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक बहुत बढ़ रहे है जितना शिक्षित समाज बढ़ रहाहैं, उतना ही संसार के अन्दर अशांत वातावरण फैल रहा है । इस से यह सिद्ध होता है कि यह दी जानेवाली शिक्षा शिक्षा है नहीं । कदाचित् यह कुशिक्षा होनी भी नहीं चाहिए क्योंकि लिखा भी है-"याविद्या सा विमुक्तये' ।

पर (आर्य) बुद्धिमान के लक्षण क्या है? इस विषय में हम पुनः भगवान् दयानन्द को बात कहने पर विवश हो रहे हैं । कारण यह है कि उनसे अधिक स्पष्ट लक्षण बताने वाला हमें कोई नहीं मिल रहा ।

भगवान् दयानंद कहते है कि आर्य (बुद्धिमान्) वह है जो धार्मिक विद्वान आप्त पुरुषों का है । आप्त के लक्षण करते हुए लिखते हैं — जो आप्त अर्थात् पूर्ण विद्वान, धर्मात्मा परोपकारप्रिय, सत्यवादी, पुरुषार्थी, जितेन्द्रिय पुरुष जैसा अपनी आत्मा में जानता हो और जिससे सुखपाया हो उसी के

कथन इच्छा से प्रेरित सब मनुष्यों के कल्याणार्थ उपदेष्टा हो अर्थात् (जो) जितना पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यंत पदार्थों का ज्ञान प्राप्त होकर उपदेष्टा होता है । आर्य शब्द की व्युत्पत्ति भी ऋगतौ धातु से हुई है, जिसका अर्थ प्रगतिशील होता है वैयाकरणों के मतानुसार 'गति' के तीन अर्थ होता है, गति, ज्ञान, गमन और प्राप्ति । इस अर्थ के आधार पर 'आर्य' का अर्थ यह भी होता है जो ज्ञान की वृद्धि करता हो । प्राचीन शास्त्र इस के साक्षी है कि बुद्धि का उपासक ही आर्य हो सकता है । भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को युद्धभूमि में कहा था कि हे अर्जुन ! ज्ञान से बढ़ कर पवित्र वस्तु संसार में कुछ भी नहीं है । वैदिक संध्या में गायत्री मंत्र मुख्य है, वह उपदेश कहता है कि–हम अपने वरण करने योग्य तेज का ध्यान करते है आप हमारी बुद्धि को प्रेरित कीजिये ।

संक्षेप में पूर्ण समस्या एक शब्द में इस प्रकार आ जाती है कि अशांत बातावरण उत्पन्न होता है मूर्खों की संख्या बढ़ जाने से । इस कारण बुद्धिमानों की संख्या बढ़नी चाहिए । बुद्धिमानों की संख्या बढ़ाने के लिये धर्म की शिक्षा होनी चाहिये । शिक्षा का मतलब भी महर्षि के शब्दों में यही है:—

जिससे विद्या, सभ्यता धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटे इसको शिक्षा कहते हैं । अत. हमें सभी आर्य बंधुओं को आज संसार ललकार रहा है कि इस युग का सबसे महान संगठक आर्य समाज सो रहा है आर्य समाज तेजी से जिससे जन्मा, पनपा, फैला उतनी ही तेजी से सो भी गया । और आज सोचने पर भी हम यह सोचने में असमर्थ हैं कि उस की नींद कैसे टूटे ?

आर्य वीरों ! आप लोगों के निर्णय पर आर्य समाज का भविष्य निर्भर है । हम तो उस दिन की प्रतिक्षा में हैं जब आर्य समाजों की वेदी से एक और अध्यात्म गंगा का प्रवाह प्रवाहित होगा दूसरी ओर अज्ञान तिमिर विदारण के लिये खण्डन के तीर छूटेगें । मत-अज्ञान की समाप्ति के लिए हम अपने हथियार संभाल आगे बढेंगे और हमारा नेतृत्व लेखराम से वीर उपदेशक करते हुए आगे बढेंगे ।

दिशाएं गा रही होंगी :—

दयानन्द के वीर सैनिक बढे हैं
दयानन्द का काम पूरा करेंगे ॥

● देशबन्धु विद्यावाचस्पति
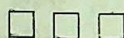
भूत प्रेत मीमांसा

(ले० वैदिक गवेषक आचार्य शिवपूजनसिंह पथिक विद्यावाचस्पति, साहित्यालंकार)

लोगों का विश्वास है कि भूत प्रेत कोई निकृष्ट योनि विशेष है जो मनुष्योंको सताया करती है। पिशाच, जिन्ह, चुडैल आदि भी इसी प्रकार की योनियों में माने जाते हैं। पौराणिक विचार धारा से शिक्षित व्यक्ति भी इन बातों पर विश्वास करते हैं। पं० अखिलानन्द शर्मा अपने "अथर्व वेदालोचन" में, पं० माधवानन्द शास्त्री अपने "पुराण-दिग्दर्शन" में, और पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र, विद्यावारिधि, अपने "दयानन्द-तिमिरभास्कर" ग्रन्थ में वेदादि शास्त्रों के प्रमाणों से भूत प्रेतों की सत्ता स्वीकार करते हैं।

भूत-प्रेत वास्तव कोई वस्तु नहीं। यह केवल लोगों का भ्रम है। 'भूत' का अर्थ तो 'बीता हुआ' होता है, व्याकरण शास्त्र में 'भूत' 'एक काल' होता है। वेदादि सत्शास्त्रों में 'भूत' 'प्राणी' के अर्थ में आया है। 'प्रेत' का अर्थ मनु जी महाराज ने शव किया है ●।

'भूत' शब्द "भू सत्तायाम्" धातु से निष्पन्न हो कर आर्ष ग्रन्थों में अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ देखा जाता है। भूत अतीत को छोडकर जिस अर्थ में यह शब्द वैदिक तथा अवैदिक दोनों प्रकार से संस्कृत साहित्य में विद्यमान है। इस शब्द के अर्थ में प्रत्येक प्रकार का प्राकृतिक

● मनुस्मृति अ० ५। ६५

संघात. एक अणुक, द्वयणुक, त्र्यणुक आदि से लेकर लोक-लोकान्तर तक सम्मिलित हैं। उसके अर्थ में समस्त सूक्ष्म भौतिक जगत् अर्थात् तन्मात्रा रूप जगत् उसी प्रकार सम्मिलित है जिस प्रकार पृथिव्यादि महाभूत वा पंच तत्व। वह प्राणधारी जीवों के लिए भी प्रयुक्त हुआ पाया जाता है और अप्राणी सामूहिक जगत् के लिये भी। कभी वह चर जगत् का अर्थ और अभी अचर जगत् का अर्थ देता है। कभी कभी वह छोटे कीटाणुओं के अर्थ में भी आता है।

आजकल जो पौराणिक जगत् में भूत प्रेत प्रकट. अप्रकट दोनों बतलाये जाते हैं। यह साधारण भांति में अप्रकट परन्तु एकान्तचारी व्यक्ति को वह प्रकट भी हो जाते हैं। जब प्रकट होते हैं तब उसके विशेष चिन्ह ये बतलाये जाते हैं कि पैर उसके पीछे की ओर मुड़ें रहते हैं अर्थात् जिस प्रकार जीवित मनुष्य की एड़ी और अङ्गुलिएँ आगे को होती हैं उस भूत की एडी और आङ्गुलियों के पंजे पीठ की ओर होते हैं। यह भी सुना जाता है की वह अनेक रूप धारण कर लेता है। कभी कुत्ता, भेडिया, भैंसा प्रभृति पशु रूप में दिखाई पडता है। कभी बडा डीलडौल का ताल वृक्ष के समान हो जाता है। लोगों का विश्वास है कि यह अदृश्य रूप में पुरुष, स्त्री, बच्चों के शरीर में प्रवेश कर जाता है और कष्ट देता है। इसी को भूत लगना कहते हैं।

सुप्रसिद्ध सुधारक वेदक्रान्तदर्शी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस विचारधारा का खंण्डन किया। आप अपनी प्रसिद्ध क्रान्तिकारी पुस्तक "सत्यार्थ-प्रकाश" के द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं:— "और जब इस शरीर का दाह हो चुका तब उसका नाम भूत होता है अर्थात् अमुक नामी पुरुष था। जितने उत्पन्न हो वर्त्तमान होके न रहे वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। ऐसा ब्रह्मा से लेकर आज

पर्यन्त विद्वानों का सिद्धान्त है, परन्तु जिसको शंका, कुसंग, कुसंस्कार होता है उसको भय और शंका रूप भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि अनेक भ्रमजाल दुःखदायक होते हैं। देखो जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप पुण्य के वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख दुःख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की अवस्था का कोई भी नाश कर सकता है? अज्ञानी लोग वैद्यक शास्त्र वा पदार्थ विद्या के पढ़ने सुनने और विचार से रहित होकर सन्निपात ज्वरादि शारीरिक और उन्मादकादि मानस रोगों का नाम भूत-प्रेत आदि धरते हैं। उनका औषध सेवन और पथ्यादि उचित व्यवहार न करके उन धूर्त, पाखण्डी, महामूर्ख, अनाचारी, स्वर्थी भंगी, चमार शूद्र, म्लेच्छादि पर भी विश्वासी होकर उनके प्रकार के ढोंग, छल, कपट और उचिष्ट भोजन द्वारा धागा आदि मिथ्या मंत्र, यन्त्र, बाँधते बँधवाते हैं, अपने धन का नाश सन्तान आदि की दुर्दशा और रोगों को बढ़ा कर दुःख देते फिरते हैं"।

महर्षि दयानन्द जी का सिद्धांत वास्तव में वैदिक व वैज्ञानिक है। पं० तुलसीराम स्वामी, ❁ पं० वाचस्पति जी एम० ए० बी० एस-सी०, विद्यावाचस्पति ● भी महर्षि के सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं। चतुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार, मीमांसातीर्थ लिखते हैं:— 'भयं अस्या वर्चः" (का० १ मू: १४) इस मूक्त को कौशिक सूत्र ने स्त्री और पुरुष के दौर्भाग्य करने के लिये उनकी भोगी हुई दातून, गेन्द माला, केश आदि को गाड़ते हुए पढ़ने का विनियोग लिखा है। यहाँ कौशीक का भूत आचार्य सायण पर बड़ी प्रबलता से चढ़ गया है। खैंचतानकर सूक्त के चारों मंत्रों

❁ भास्कर-पूकाश चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ २२-२३

● सत्यर्थपूकाशभाष्य द्वितोय समुल्लास, पृथम संस्करण पृष्ठ ११४ से १३६ तक।

का अर्थ उधर ही लगाया है । पं० ग्रिफिथ और ह्विटनी भी उधर ही बह गए हैं । इस अवसर पर हमें हर्ष से कहना पड़ता है कि पं० बेबर, लडविग और जिम्मर आदि महोदयों ने स्वतंत्र होकर इस सूक्त को विवाहपरक लगाया है । इस सूक्त की वास्तविक शोभा भी विवाह परक अर्थों में ही है । जो प्रस्तुत में देखने से विदित होगी । वेद जैसे पवित्र धर्मग्रन्थ में स्त्री के दौर्भाग्य करने की घृणित शिक्षा ही नहीं हो सकती ।

"ये अमावास्यां रात्रिम्" (अथर्व० १. १६ सूक्त) को कौशिक ने शत्रुओं को मारने लिए सीसे के चूर्ण से मिला अन्न खिला देने के लिए विनियुक्त दिया है । इस सूक्त में भी पिशाचों के सन्तानों और अत्रि यातु आदि नामों से सायण ने रक्षः, पिशाच आदि आदि आदि लिए हैं । पं० ग्रिफिथ ने भी पिशाच शब्द से भूत-प्रेत ले लिए हैं । सीस शब्द से पं० ह्विटनी महोदय ने सीसे का तबीज लिया है । पं० ग्रिफिथ ने सीम शब्द से सीसे का टुकड़ा ले लिया है और यंत्र के अर्थ कर दिए हैं । यह बतलाने का यत्न नहीं किया कि अग्नि वरुण, इन्द्र आदि देवों का सीसे से क्या सम्बन्ध है. वह सीसा जत्थे जत्थे बनाकर आक्रमण करने वाले यतुधानों को कैसे बेधेगा ? कौशिक ने तीन उपाय शत्रु के नाश के बतलाये हैं । एक तो शत्रुओं को बाँधकर सीसे का चूर्ण उनको खिलाकर मारे, दूसरे उनको लोहे की बेड़ियाँ पहना दे, तीसरे बाँस की छड़ी बेंत से ठोके । परन्तु उन तनों कार्यों का मंत्रगत बाक्यों से सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता । वस्तुत देखा जाय तो सीसे की गोलियाँ बनाकर बारूद देकर अग्नि के बल से दुष्ट शत्रुओं का मुकाबला करने का वेद ने उपदेश किया है ।" (अथर्ववेदभाषाभाष्य, द्वितीयावृत्ति, भूमिका, पृष्ठ २०-२१)

प्रोफेसर मैक्डानल, श्री विन्टरनिज, श्री जे० एन० फकुरहर, श्री मूर, प्रभृति पाश्चात्य विद्वान् और सायण, श्री चिन्तामणि

विनायक वैद्य एम० ए०, श्री राजाराम शास्त्री, श्री देवराज श्री सम्पूर्णानन्द जी, श्री प्रोफेसर बलदेव उपाध्याय एम० ए० साहित्याचार्य, श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, श्री जयचन्द्र विद्यालंकार, श्री सिद्धेश्वर शास्त्री, चित्राव, मित्रबन्धु प्रभृति भारतीय विद्वान् अथर्ववेद में मारण मोहन, उच्चाटन, वशीकरण इन्द्रजाल जादू-टोना प्रभृति मानते हैं पर अथर्ववेदों में इन सब बातों की कोई चर्चा नहीं है। पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी तथा पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार के भाष्य से स्पष्ट प्रकट होता है। पं० प्रियरत्न जी आर्य (स्वामी ब्रह्मा मुनि जी) ने अपनी पुस्तक "अथर्ववेदीय मंत्रविद्या" और "अथर्ववेदीय चिकित्सा-पद्धति" में इस पर पूर्णरूप से विचार किया है। मैंने अपनी पुस्तक "अथर्ववेद की प्राचीनता" में इनके मतों की समुचित आलोचना करते हुए प्रदर्शित किया है कि अथर्ववेद में जादू-टोना नहीं वरन् वैज्ञानिक प्रयोग हैं। राक्षस अप्सरा गन्धर्व, पिशाच प्रभृति कृमि हैं।

वेदों में कोई स्थलों पर 'भूत' शब्द आया है जिसका अर्थ पौराणिक भूत-प्रेत नहीं है:—

'हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीद्" (यजु० १३।४)

यहाँ 'भूतस्य' शब्द का अर्थ महर्षि दयानन्द जी अपने 'संस्कारविधि' में करते हैं,—

"उत्पन्न हुए संपूर्ण जगत् का"
उवट "भूतस्योत्पन्नस्य प्राणिजातस्य"
महीधर—"भूतस्य प्राणिजातस्याग्रे"

पं० जयदेव शर्मा, विद्यालंकार, मीमांसातीर्थ 'भूतस्य' इस उत्पन्न होनेवाली विश्व का (यजुर्वेद भाषा-भाष्य) यहाँ महर्षि दयानन्द जी और शर्मा जी के एक अर्थ हैं और उव्वट, महीधर 'प्राणी' अर्थ करते हैं।

"यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्नेवानु पश्यति। सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते। (यजु० ४०।३)

उव्वट – "भूतानि चेतनाचेतनानि।

महिधर—"भूतानि अव्यक्तादीनि स्थावरान्तानि चेतनानि" (शुक्ल यजुर्वेदभाष्य)

पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र, विद्यावारिधि (भूतानि) प्राणि को (यजुर्वेदमिश्रभाष्य उत्तरार्ध)

प० जयदेव शर्मा विद्यालंकार:—'प्राणियों को (ईशोपनिषद्भाष्य)

महत्मा नारायण स्वामी जी — (भूतानि) चराचर जगत् (ईशोपनिषद्भाष्य)

आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री, काव्यतीर्थ एम. ए. 'चराचर जगत्' (ईशोपनिषद्भाष्य)

इसी प्रकार 'यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः' (यजु० ४०।७) में भी आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री 'चराचर जगत्' स्वामी ब्रह्म मुनि जी 'प्राणं' महात्मा नारायण स्वामी जी चराचर जगत्' पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार प्राणी' अपनी ईशोपनिषत् की टीकाओं में करते हैं।

'दृते दृँह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्' (यजु० ३६।१८)

अर्थात् हे परमात्मान् सम्पूर्ण प्राणिवर्ग मित्र की दृष्टि से देखे।

यहाँ महीधर:-'भूतानि प्राणिनः' और विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र 'भूतानि' का अर्थ प्राणी' अपने 'मिश्र भाष्य' में करते हैं।

'यो भूतातामधिपतिर्यस्मिंल्लोकाः अधिश्रिताः'। (यजु० २०।३२)

अर्थात् जो परमात्मा सब भूतों समस्त प्राकृतिक पदार्थों का स्वामी है और जिसमें लोकलोकान्तर आश्रित है....

'एतावानस्य महिमा अतो ज्यायाँच पुरुषः।' पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि....(ऋ० १०।९०।३) तथा (यजु० ३१।३

यह सम्पूर्ण विश्व विश्वा भूतानि अर्थात् जड, जंगम संसार उस ब्रह्मा के केवल एक अंश में है। ब्रह्मा उसके बाहर भी अमृत रूप अनन्त है।

यहाँ पर 'श्री महीधर' ने 'भूतानि' का अर्थ 'प्राणिजातानि' किया है।

विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र ने भूतानि तीन काल में वर्तनेवाले समूह अपने मिश्रभाष्य के उत्तरार्ध में किया है।

पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु मनसा धिया। पुनन्तु विश्वा भूतानि पवमानः पुनान्तु मा। (अथर्व ६।१६।१०)

सम्पूर्ण भूत मनुष्यमात्र अथवा प्राणीमात्र अथवा पदार्थमात्र मुझको पवित्र करें।

पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार, मीमांसातीर्थ 'अथर्ववेद संहिता, भाषभाष्य' में 'विश्वा भूतानि' का अर्थ समस्त प्राणिगण करते हैं।

उपनिषदों में भी इस प्रकार के प्रयोग भरे पडे हैं—

वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो वभूव। एकस्तथा सर्व भूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च॥
(कठोपनिषद् वल्ली ५।१०)

जिस प्रकार एक वायु सम्पूर्ण भुवन में विद्यमान है और प्रत्येक वास्तु में तद्रूप भासता है उसी प्रकार एक परमात्मा सब भूतों, प्राणियों के भीतर प्रविष्ट है और उस-उस रूप में व्यापक होने से उस उस रूपवाला जैसा है परन्तु साथ ही साथ वह उसके बाहर भी है।

'अन्नं हि भूतानां ज्येष्ठम्—अन्नात् भूतानि जायन्ते....
(तैति० अनु० ख०२)

अन्न सब प्राकृतिक पदार्थों में बड़ा है। अन्न से सब प्राणी उत्पन्न होते हैं।।

एषां भूतानां पृथिवी रसः ....(छान्दोग्योपनिषद् प्रप० १ खं० १ अ. २

इन सब प्राणियों का पृथिवी सार है।

योगीराज सनत्कुमार के यह पूछने पर कि पहले मुझे बतलाइए कि अपने क्या-क्या पढ़ा है तत्पश्चात् मैं आपको शिक्षण करूँगा। जिज्ञासु नारद जी ने कहा :—

....देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्यां सर्प-देवजनविद्यामेतद् भगवतोऽध्येमि। (छान्दोग्यो० अ० ७० ख० १म०२)

अर्थात् हे भगवन्! मैं देवविद्या, ब्रह्मविद्या, भूतविद्या, अर्थात् आधिभौतिक शास्त्र, क्षत्रविद्या, धनुर्विद्यादि, नक्षत्रविद्या, ज्योतिष शास्त्र तथा शिल्प आदि विद्या को जानता हूँ।

यहाँ भूतविद्या से यह तात्पर्य नहीं है कि वे झाड़-फूँक आदि जानते थे, वरन् आधिभौतिक शास्त्र के ज्ञाता थे।

स एवंवित्सर्वेषां भूतानामात्मा भवति....एवंविदम् सर्वाणि भूतानि अवन्ति (बृहदारण्यक अ० १ ब्रा० ५ क० २०)

अर्थात् जो ऐसा जानता है वह सब भूतों, प्राणीमात्र का आत्मा अर्थात् प्रिय हो जाता है। इस प्रकार जानने वाले की सब भूत प्राणी रक्षा करते हैं।

मनुस्मृति में भी भूत शब्द इन अर्थों में विद्यमान है। यथा :—

मनुस्मृति अ० १ श्लोक १६ में 'सर्वभूतानि निर्ममे' है।

यहाँ भूत शब्द का अर्थ प्राणी ही है। पं० तुलसीराम स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं० आर्यमुनि तथा अन्य टीकाकारों ने यही अर्थ किया है।

मनुस्मृति अ० श्लो० ८० तथा ८१ में पञ्च महायज्ञ का वर्णन है। इसमें एक भूतयज्ञ है। सांख्यशास्त्र में भूत शब्द का अर्थ प्राकृतिक संघात है :—

अहंकारात् पञ्चतन्मात्राणि पञ्चतन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि ।
(सांख्यदर्शन अ० १ सूत्र ६१)

अहंकार से पञ्च तन्मात्रा सूक्ष्म भूतों का रूप तथा तंन्मात्राओं से स्थूल भूत अर्थात् पञ्च महाभूत पृथिवी आदि ।

न भूतचैतन्यं प्रत्येकादृष्टे: सांहत्येऽपि च सांहत्येऽपि च ।
(सांख्य अ० ५ सूत्र १२६)

अर्थात् कोई प्राकृतिक भूत संघात चैतन्य नहीं है । किसी भूत में चैतन्यता के न होने से उनके संघात में भी चैतन्यता नहीं हो सकती ।

इसी प्रकार अन्य दर्शनशास्त्रों में जहाँ कहीं भी भूत शब्द आया है वहाँ उसका अर्थ भूत योंनिविशेष नहीं है।

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा प्रलीयते····(भगवद्गीता ८।१९)

यहाँ भूत का अर्थ प्राणी है । पं० नरदेव शास्त्री, वेद तीर्थ ने अपने 'गीता विमर्श' की प्रथमावृत्ति में प्राणी ही अर्थ किया है ।

"क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर"····(गीता १५।१६)

दो प्रकार का जगत् है अर्थात् एक नाशवान् सम्पूर्ण कार्य जगत् और दूसरा कूटस्थ अर्थात् प्रकृति जो नाश नहीं होती ।

गीता में दो एक स्थल ऐसे हैं जहाँ पर लोगों को भ्रम हो सकता है कि भूत, प्रेत योनिविशेष है यथा :—

"यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन्यान्ति पितृव्रताः । भूतानि यन्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्···· (गीता ९।२५)

अर्थात् देवों का यजन करने वाले देवों, पितृयज्ञ करने वाले पितरों और भूतों का यजन करने वाले भूतों और मेरा यजन करने वाले मुझको प्राप्त होते हैं ।

यहाँ भी भूत का अर्थ प्राणी ही है। पं० नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ अपने 'गीता विमर्श' की प्रथमावृत्ति में लिखते हैं- 'देवताओं के व्रतवाले देवताओं के पास, पितरों को चाहने-वाले पितरों के पास, प्राणियों के लिये यज्ञ करनेवाले प्राणियों को और मेरे लिए यज्ञ करने वाले मेरे पास आते हैं।' चरक शरीर स्थान अ० ८-४४ से ६४ तक में आया है कि—"भूत-प्रेत आदि नाम मनुष्यों के भी गुण-स्वभाव से हैं"।

"यजन्ते सात्विका देवान् यक्षरक्षांसि राजसाः ।
प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसाः जनाः ॥
(गीता १७।४)

गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक पं० कृष्णस्वरूप जी विद्यालंकार अपने 'गीतामर्म' के प्रथम संस्करण पृष्ठ ५४३ में अर्थ करते हैं– "देव जो परोपकारी विद्वान् हैं। यज्ञ राक्षस जो अपने स्वार्थ के लिये दूसरों की हानि करते हैं। भूत प्रेत जो विना कारण दूसरों को हानि पहुंचाते हैं"।

जब वैदिक विद्या लोप हो गया है और नाना प्रकार के सम्प्रदाय आदि फैल गए तब भूत-प्रेत का आर्य सभ्यता में प्रचार हो गया। मैत्र्युपनिषद् के एक स्थल से प्रकट होता है कि इस देश में एक समय ऐसा था जब कि लोक में पाखंडियों ने भूत प्रेतादि भ्रामक विचारों की ओर जनता को आकर्षित करना प्रारम्भ कर दिया था और देश के विद्वान् लोग जो अपने आपको वैदिक कहते थे ऐसे लोगों का तिरस्कार करते थे। यथा:-

"ये चान्ये चाटजटनटभटप्रव्रजितरंगावतारिणो राजकर्मणि पतितादयोऽथ ये चान्ये ह यक्षराक्षसभूतगणपिशाचोरगग्रहादि-नामर्श पुरस्कृत्य शमयाम इति एवं ब्रुवाणा अथ येचान्ये ह वृथा कषायकुण्डलिनः कापालिनोऽथ ये चान्ये ह वृथा तर्कदृष्टान्तकुहकेन्द्रजालवैदिकेषु परिस्थातुमिच्छन्ति तैः सह न संवसेत प्राकाश्यभूता एवैत तस्करा अस्वर्ग्या इत्येवं ह्या-महे। नैरात्म्यवादकुहकैर्मिथ्यदृष्टान्तहेतुभिः भ्राम्यन लोको न जानाति वेदविद्यातन्तु यत्। (मैत्र्युपनिषद् खं० ८)

"अर्थात् बहुत से लोग यक्ष, राक्षस पिशाचो ग्रहादि का नाम लेकर कहते हैं कि हम उनका शमन कर सकते हैं अथवा अन्य जो वृथा कषाय, कुण्डल तथा कपाल को जो धारण किये फिरते हैं अथवा जों वृथा तर्क, दृष्टान्त, इन्द्रजाल दिखलाकर वैदिक में घुसना चाहते हैं उनके साथ निवास नहीं करना चाहिये। वह प्रत्यक्ष तस्कर हैं सुख और शान्ति से गिरानेवाले हैं जैसा कि कहा गया है— आत्मज्ञान के प्रतिकूल मिथ्या तर्क और दृष्टांत से भरमाए हुए लोग वेदविद्या के वास्तविक रहस्य को नहीं जान पाते"।

उपर्युक्त कथन प्रत्यक्ष रूप में उस युग का पता दे रहा है जब कि जनता में इस प्रकार से मिथ्या बातों के फैलानेवाले लोग उत्पन्न हो गये थे और उस समय के वैदिक लोग ऐसे पुरुषों को तिरस्कृत करने का उद्योग कर रहे थे।

इन उपर्युक्त सब प्रमाणों से स्पष्ट प्रकट होता है कि आर्ष साहित्य में कहीं भी भूत शब्द लोकप्रसिद्ध वा पैराणिक भूत योनिविशेष का समर्थन नहीं करता है और न उनमें कहीं कोई आधार मिलता है। यह वेदों और आर्ष ग्रंथो के अभ्यास और अनुशीलन के अभाव का कारण है कि भूत शब्द हमारे सम्मुख आता है तुरंत इस भूत योनि और कल्पित भूत का भाव जिसको एक प्रकार से हम अपनी माता के दुग्धपान के समय पीकर अपना साथी हौआ आदि के सदृश बना लेते हैं।

पुनर्जन्म का सुदृढ़ वैज्ञानिक सिद्धांत जो वैदिक-धर्म और हिंदू-धर्म का स्वतंत्र सिद्धांत हैं वास्तव में प्रचलित भूत प्रेत योति के विरुद्ध है। जीवात्मा एक शरीर को छोडकर दूसरे शरीर को शीघ्र प्राप्त होने की क्रिया में क्रम-बद्ध हो

जाता है और मोक्ष के प्राप्त होने तक इस चक्र से छुटकारा नहीं पाता ।

आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेता व विद्वान परलोकवासी महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "मृत्यु और परलोक" में इस 'भूत प्रेतवाद" का स्पष्ट खंडन किया है। अपने मैस्मरिज्म टेबुल, अद्भुद प्लान्चेट, आत्मा को बुलाना, उसका चित्र लेना आदि का प्रबल खंडन किया है । अतः इस भूत-प्रेतवाद से सन्तानों को दूर रखना चाहिए ।

●

सामाचार-दर्शन

वैदिक यज्ञ और प्रचार :—

मई १३ से १५ तारीख तक ढेंकानाल जिले के अन्तर्गत रेंगाली प्रोजेक्ट में सामवेद-पारायण यज्ञ का अनुष्ठान हुआ। आर्यसमाज वानप्रस्थ मण्डल की ओर से स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यानंद सरस्वती, गुरुकुल वेदव्यास से स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती, कटक खीष्टविद्यालय के संस्कृत अध्यापक श्रीयुक्त गंगाधर षड़ङ्गी, वेद संस्थान के आचार्य पं० दुःखीश्याम दाश, गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक बिक्रमकुमार बिवेकी, विहार से भजनोपदेशक पं० शिवधर आर्य आदि विद्वानों ने योग

दिया । रेंगाली प्रोजेक्ट के मुख्य यंत्री ने पताका उत्तोलन किया था। स्थानीय जनसाधारण और आर्य समाज के कार्य कर्त्ताओं के सहयोग से यज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्य-समाज वानप्रस्थ मंडल के मंत्री स्वामी प्रणवानंद सरस्वती की अध्यक्षता में मई १८ से १६ तारीख तक सुंदरगढ़ जिला के रायबाहाल गाव में वैदिक यज्ञ का अनुष्ठान हुआ। स्वामी सत्यानंद जी, स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती, पं० विक्रम कुमार विवेकी, पं० बालकृष्ण जी, आर्य-परिवार संघ के सह-सम्पादक श्रीयुक्त डिलेश्वर पटेल आदि सन्यासी और विद्वानों ने योग दिया।

आर्य-सन्यास वानप्रस्थ मण्डल के प्रयत्न में मई १८ से २० तारीख तक बालेश्वर जिला के धर्मद्वार गांव में स्थानीय आर्य युवक संघ के द्वितीय वार्षिक महोत्सव के उपलक्ष में यज्ञ एवं धर्मसभा हुई। यहां पर ढेंकानाल से स्वामी ओंकारानंद सुंदरगढ़ से पं० ज्ञानानंद विद्यावाचस्पति, वेगमपुर वैदिक आश्रम से स्वामी सर्वदानंद जी, पिंच्छावणियां आश्रम के अध्यापक श्री सुरेन्द्र कुमार आदि विद्वानों ने योग दिया।

महर्षि दयानन्द हाईस्कूल :—

फूलवाणी जिले के दारिंगवाड़ी ब्लाक में कार्टिंगिया के पास गत तीन वर्ष पहले महर्षि दयानंद हाई स्कूल की स्थापना स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती ने की थी। सरकार ने उक्त विद्यालय को मान्यता प्रदान की है। इससे इस क्षेत्र में लोगों के प्रसन्नता हुई। यह एक आदिवासी क्षेत्र है। दारिंगवाड़ी के पास ४५ किलोमीटर के भीतर और कोई स्कूल नहीं है।

यहाँ के आदिवासी लोग बहुत गरीब हैं । उक्त विद्यालय को अदिवासी ग्राम मंगल विभाग लेले इसके लिए सरकार पास जनता ने निवेदन दिया है ।

गोपबन्धू हाईस्कूलः —

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती के प्रथम कार्य क्षेत्र बलांगीर जिले में सूनामूदी ग्राम में दो वर्ष पहले से गोपबन्धू हाईस्कूल खुला हुआ है । सरकार ने इस विद्यालय को मंजूरी देकर इस अञ्चल में शिक्षा के प्रचार को संभव किया । स्वामी जी का उक्त प्रतिष्ठान के प्रति सहयोग रहेगा ।

श्रद्धानन्द उपदेशक-विद्यालयः—

श्रद्धानंद-उपदेशक विद्यालय सुन्दरगढ़ में अप्रेल १३ से खोली जाने वाला था । आंधी आने से इस आश्रम का घर ध्वस्त हो जाने के कारण उद्घाटन के कार्यक्रम को स्थगित कर दिया गया । जो विद्यार्थी आये थे उनके लिये गुरुकुल वेदव्यास के वेद मंदिर के अंदर शिक्षा की व्यवस्था की गई है ।

तपोवन शान्ति आश्रमः—

मई तारीख २ एवं ३ को तपोवन शांति आश्रम (फूलवाणी) के सप्तम वार्षिक महोत्सव के उपलक्ष में वैदिक यज्ञ एवं धर्म सभा के आयोजन किया गया । इस में सन्यास वानप्रस्थ मंडल के स्वामी सत्यानंद जी एवं मंत्री स्वामी प्रणवानंद जी गुरुकुल वैदिकाश्रम के अधिष्ठाता पं० देवव्रत आर्य, प्रत्तिष्ठाता स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती आदि विद्वानों एवं सन्यासियों ने सहयोग दिया । स्थानीय लोगों के सहयोग से सब काल सुचारू रुप से हुआ ।

●

शुभ कामनाओं के साथ

रिलायन्स टेक्सटाईल इंडस्ट्री लिमिटेड

अहमदाबाद - बम्बई :

विमलरेन्ज :

सुटिंग्स, सर्टिंग्स, साड़ी और ड्रेस मटिरियल्स

प्रकाशक— स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा शान्ति आश्रम प्रेस, गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास, राउरकेला - ४ में मुद्रित ॥

★ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ★

वनवासी सांस्कृतिक समिति, वेदव्यासस्य, मासिकं मुखपत्रम्

वनवासी संदेश

संस्थापक :—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

●

—: वेद कहता है :—

आर्य कौन है ?

॥ आर्या व्रता विसृजन्तो अधिक्षमि ॥

(ऋग्वेद १० । ६५ । ११)

● आर्य वे कहलाते हैं जो इस पृथिवी पर सत्य, अहिंसा, परोपकार, पवित्रादि उत्तम व्रतों को विशेष रूप से धारण करते हैं ।

संपादक	सह- संपादक
पं० आत्मानन्द शास्त्री	पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति

-: नीति वचन :-

१- वृथा धर्म ध्वजिनं न विश्वसेत् ।।

धर्म का वृथा वाह्याडम्बर रचने वाले व्यक्तियों का कभी विश्वास नहीं करना चाहिये ।

२- अन्त्यपाषाण्डादीन वाङ् मात्रेणापि न ।।

पतित कर्मों में रत मनुष्यों का तथा धूर्तों का सत्कार वाणीमात्र से भी नहीं करना चाहिये ।

३- सत्यमपि दुःखानर्थ साधनन्तु न वदेत् ।।

सत्य जिससे प्रकट करने से दुःख और अनर्थ होता हो कभी भूल कभी न कहे ।

४-सुहृदशुभशीलः शत्रुः ।।

चरित्र हीन मित्र एक शत्रु के तुल्य है। वह कभी भी अकारण हानि पहुंचाने अथवा नाश करने पर उतारू हो सकता है ।

वनवासी–सन्देश

उत्कल जनता संस्कृति रक्षा वद्धकटिस्तमः स्तोमहृतिदेशः
गुरुकुल सुपानपोषादुदयति वनवासी संदेशः ॥
यो भ्रष्ट ख्रीष्टमत दीक्षित मज्ञलोकम्
संस्कृत्य दूरयति तद्धृदयांधकारम् ॥
श्री वेदव्यास सुगुरो कुल सन्निवेशः
सम्पूर्वादेरुदयते वनवासी संदेशः ॥

वर्ष ११ अंक ६	जून १९७७	वार्षिक मूल्य ५ रु एक प्रति ५० पैसे

वेदोपदेश
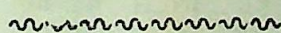
ओ३म् यत्र सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय
रोगं तन्वः स्वायाः ।
अश्लोणा अंगैरह्नुताः स्वर्गे तत्र पश्येम
पितरौ च पुत्रान् ॥

अथर्व ६ । १२० । ३

अर्थ :- (यत्र) जिस अवस्था में (सुहार्द) पवित्र हृदय वाले, पुनीत विचार वाले (सुकृतः) अच्छे आचार वाले

सज्जन (स्वायाः) अपने (तन्वः) शरीर का (रोगम्) रोग (विहाय) छोड कर अर्थात् पूर्णतया नीरोग होकर अंगैः× अश्लोणाः) अंग भंग रहित अर्थात् पूर्णाङ्गावयवयुक्त शरीर वाले तथा (अह्नुताः) शरीर, आत्मा तथा मन की कुटिलता से विरहित हुए (मदन्ति) आनन्दित रहते हैं (तत्र स्वर्गे) उस स्वर्ग में हम (पितरौ) माता-पिता (च) और (पुत्रान्) पुत्रों-सन्तानों को (पश्येम) देखें। अर्थात् हमारे माता-पिता तथा सन्तान सदा सदा सुखी रहें।

अनेक लोंगो की यह धारणा है कि स्वर्ग किसी एक स्थान का नाम है, जहां मरने के पीछे सुकृत लोग जाकर रहते हैं। वेद का स्वर्ग इस से भिन्न है। वहां जीते जीते जाना होता है। उस स्वर्ग का निरुपण होता है। देखिये-"यत्रा सुहार्द...........मदन्ति" जहां पवित्र हृदय वाले आनन्दित होते हैं। अपवित्र हृदय वालो कों आनन्द मिल ही नहीं सकता। वह तो चिन्ता चिता की आग में जलता है।—"सुकृतो मदन्ति" सुकर्मा- भले कर्म करने वाले जहां सुख पाते हैं। "विहाय रोगं तन्वाः स्वायाः" अपने शरीर का रोग छोड कर। वैद्य कहते है—शरीरं व्याधि मन्दिरम्—शरीर रोग का घर है। जिस के शरीर में किसी प्रकार का रोग न हो, उस से बढ़ कर संसार में साधारण लोगों की दृष्टि में—और कौन सुखी हो सकता है?

केवल रोग रहित ही न हो, अपितु "अश्लौणा अंगैरह्नुताः" अंग-भंग-रहित तथा शारीरिक, आत्मिक मानसिक कुटिलता से रहित हो। "तत्र स्वर्गे पश्येम पितरौ च पुत्रान्" उस स्वर्ग में माता पिता तथा पुत्रों को देखें। यह वाक्य स्पष्ट ही इस लोक में गृहस्थ को ही स्वर्ग बता रहा है।

●

स
म्पा
द
की
य

खतरे के बिगुल

हमारा देश १९४७ अगस्त १५ तारीख को स्वाधीन हुआ है। तब से लेकर देश का बहुत विस्तार हुआ है। राजधानी में भव्य भवन वहु संख्या में दृष्टि गोचर होते हैं। शिक्षा-दीक्षा शिल्प, वाणिज्य. व्यवसाय, उद्योगधन्धा प्रत्येक क्षेत्र में भारत अन्य देशों के साथ प्रतियोगिता में कम नहीं है। एक ओर तो विशाल गगन चुम्बी अट्टालिका दृष्टि गोचर हो रही है, साथ ही दूसरी तरफ देशभर में सुदूर वन्य, पार्वत्य, गिरीगह्वरों में निवास करने वाले वनवासी (आदिवासी) एवं पिछडे वर्ग के लोग दीन-हीन, दरिद्र अवस्था में पडे हुए हैं। सदियों तक अत्याचारित, पीडित, घृणा की दृष्टि से देखते हुए उन्हें समाज से दूर रखा गया। जिसके फल

स्वरूप आज भी इस वैज्ञानिक युग में उड़ीसा के सुन्दरगढ़ जिलान्तर्गत बनई, केऊंझर, फूलवाणी, कोरापुट, मयुरभञ्ज, ढेन्कानाल, कलाहाण्डी आदि जिलों में तथा मध्यप्रदेश के विलासपुर, बस्तर, सरगुजा, जशपुर, विहार जिला में सिंहभूम, रांची, हजारीवाग, बंगाल के २४ परगना, आसामादि स्थानों में दयनीय अवस्था में पडे हुए हैं उन के लिए न ही रहने के लिये स्थान है न तन में लज्जा निवारण के लिये कोई वस्त्र है, न ही उदर पूर्ति के लिये उनके जीवन में अन्न ही मिलता है। यातायात के लिये सड़कादि रास्ता का भी कोई प्रवन्ध नहीं है। शिक्षा-दीक्षा तथा चिकित्सालय का भी कोई सुप्रवन्ध नहीं है। सुन्दरगढ़ जिला के बनई गढ़ आदि कई इलाका में तो कोई जाति अभी तक उलग्न रहते हैं एवं पहाड़ों में वृक्ष के ऊपर निवास करते हैं। इस प्रकार निरीह आदिवासी जनता पशुओं से भी वदतर जीवन व्यतीत अतिवाहित कर रहे हैं। इन निरीह आदिवासियों की गरीवी से लाभ उठा कर कई समाजद्रोही तथा राष्ट्रद्रोही व्यक्ति नौकरी दिलाने की आड़ में इन लोगों के लड़कियों को वहका कर वम्बे, दिल्ली, लखनऊ, पंजाव, हरयाणा आदि में विक्री करते हैं एवं इन लडकियों से वेश्यावृत्ति कराते हैं। यह हमारे लिये वडे ही लज्जा की वात है। ऐसे व्यापार शायद ही अमेरिका यूरोप आदि देश में भी क्रीतदास प्रथा के जमाने में भी नहीं होता था। क्या ये पशुओं से भी गये बीते हैं।

याद रखो गरिबों के ऊपर अत्याचार ज्यादा दिन टिक नहीं सकता है। पाकिस्तान क्यों वना ? क्या पाकिस्तान के मुसलमान अरव आदि देशों से आ कर वसे थे। नहीं, वे सारे के सारे हिन्दू (आर्य) सन्तान हैं। मि० जिन्ना सारस्वत ब्राह्मण थे, इसी प्रकार भुट्टो, अयूव खाँ आदि सभी पाकिस्तानी नेता हिन्दूओं के ही सन्तान थे। परन्तु हमारी अदूरदर्शिता तथा झुटे ऊँच नीच संकीर्ण जाति भेद के कारण कट्टर मुसलमान हो गये एवं परिणाम स्वरूप पाकिस्तान जैसा भस्मासुर उत्पन्न हुआ।

अतः हमें आज प्रत्येक बुद्धिजीवी वर्ग को विचार करना है कि "अनुसूचित तथा अनुन्नत सम्प्रदायों के साथ कैसे वर्त्ताव रखें ? उन्हें मानवता के अधिकार से वंचित न करें । हमारे समाज से कुसंस्कार दूर होकर एक स्वस्थ सुसंस्कृत समाज गठन हों एवं झूठे जातिवाद तथा घृणित भेद भाव दूर होकर मानवता के दृष्टि कोण से सोचें और उन्हें गले लगायें उनके अन्दर जो कुसंस्कारादि भर पडे हैं. उन्हें प्यार एवं स्नेह से उनसे दूर करने का प्रयत्न करें ।

आज आदिवासी और हरिजनों की उन्नति के लिये उनके स्वेच्छासेवी अनुष्ठान तथा सरकारी स्तर से अनेक कल्याण कारी कार्य हो रहा है । तदर्थ दलित वर्ग उनके प्रति आभारी है । परन्तु खेद से लिखना पड रहा है कि इस वन्य पार्वत्य इलाका में सहायता ठीक तरह पहुंच नहीं पा रही है । तथा इन समुदायों के साथ मिलकर इनके वास्तविक रोग का इलाज करने में असमर्थ हैं । प्रत्येक अनुष्ठान तथा सरकारी अधिकारियों का क्षेत्र केवल मात्र शहरी इलाकों में हो रहा है । अतः इन लोगो के अन्दर नवचेतना तथा नव जागरण न होने के कारण जितना लाभ होना चाहिये उतना लाभ नहीं हो रहा है ।

किसी भी जाति या समाज की उन्नति अपने गौरव मय इतिहास के द्वारा ही हो सकती है । किसी विद्वान का कहना है कि "यदि किसी जाति को पतित करना है तो उसके साहित्य और इतिहास को नष्ट कर दीजीये. वह स्वयं बिना किसी अन्य साधन के ऐसे पतन के गर्त में गिर जायेगी, जिसका संसार में नामों निशान नहीं रह जायेगा । जाति प्रेरणा लेती है, उसने गौरव मय प्राचिन इतिहास से जिस जाति का प्राचीन इतिहास उज्वल होता है, वह जाति पतितावस्था में होने पर भी शीघ्र उन्नति करती है । परन्तु खेद से लिखना पड़ रहा है कि पृथम स्वाधीनता संग्राम १८५७ के वाद अग्रेजों की फूट डालो और

राज्य वालों कूटनीति के कारण लोथियन कमिशन (Lothian Frenchise Commision) के कारण इन्हें आर्यों (हिन्दू जाती) से पृथक गिनाया एवं आदिवासियों के गौरव मय प्राचीन इतिहास को संसार से मिटा दिया गया। आज भी उन्हीं अंग्रेज इतिहास कारों की हां में हां मिलाने वाले अदूर-दर्शिता का पाठ पढ़ाया जा रहा है। प्रत्येक स्कूल, कालेज में इनको असभ्य, जंगली (Barberians), अनार्य अहिंदू कच्चा मांस खानेवाले पशुओं जैसे घुमते थे, इनके ऊपर द्राविड, आर्य लोग सदियो तक अत्याचार करते रहे, ऐसा हीन भावनापूर्ण इतिहास पढ़ाया जाता है। जिस जाति के सम्बन्ध में ऐसी धारणा दी जाय, क्य- वह जाति कभी सौ जन्म में उन्नति कर सकती है? वह तो कभी प्रेरणा लेकर आगे बढ़ ही नहीं सकती है। जिस जाति का प्राचीन इतिहास जितना श्रेष्ठ होता है, वह जाति उतने ही शीघ्र आत्म सम्मान के साथ आगे बढ़ती है। नहीं तो वह समूह कहता है हमारे बाप दादे से यह सब होता आ रहा है, हम कैसे छोडें। इसीलिये आदिवासी लोग दल-दल में कुसंस्कार, अंध विश्वास में फंसे हुए हैं। इन जाति को इतिहास, रामायण, महाभारतादि प्राचीन ग्रन्थों में अति गौरव पूर्ण भाव से वर्णन किया गया है। अतः उनके सम्मुख उनके गौरव मय इतिहास जब तक रखा न जाये, तब तक वे कभी उन्नती कर नहीं सकते हैं। आज आवश्यकता है उनके अन्दर नव चेतना और नव जागरण लाने की।

वैदिक धर्म की विशेषतायें

● देशबन्धु आर्य

यों तो प्रत्येक मतमतान्तर को मानने वाले अपने-अपने मत की प्रसंसा करते हैं और अपने मन्तव्यों को सब से उत्तम और महान् समझते हैं। परन्तु देखना यह है कि उनकी यह बात कहां तक सत्य है ?

धर्म का उद्देश्य मनुष्य को सम्पूर्ण बनाना है। अर्थात् उसकी शारीरिक, आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और धार्मिकावस्थाओं को सम्पूर्ण करना। परन्तु जितने मतमतान्तर इस समय प्रचलित हैं, वे सब इन बातों की ओर ध्यान नहीं करते।

वैदिकधर्म में सब से पहलि विशेषता यह है कि वह मानसिक दासता से छुड़ाता है। तमाम मतमतान्तरों ने अपने-अपने संचालक को ईश्वर से भी ऊंचा पद दिया है। इसलिये वे मनुष्य पूजा के गढ़े में गिर गए हैं। दृष्टान्त मात्र मुसलमान को देखिये। हजरत मुहम्मद को अपने कलमें में ईश्वर के साथ सम्मिलित कर दिया है। यदि कोई ईश्वर को अपशब्द कहे तो उन्हें बुरा नहीं लगता, परंतु मुहम्मद साहब के विरुद्ध एक शब्द कहे तो कत्ल करने को तैयार है। यदि इस्लाम में से महम्मद साहब का नाम छोड दिया जाए या उसे न माना जाये तो ऐसे व्यक्ति को काफिर कहते हैं। यही अवस्था ईसाई बौद्ध और जरदोस्त के मत की है। इस सब मतों में इन के संचालकों ने अपना ऐसा प्रभुत्व जमाया है कि वास्तव में इन्हीं की पूजा होती है। इन मतों ने मनुष्य को मानसिक दासता की जंजीरों

में जकड़ दिया है। परन्तु एक वैदिक धर्म ही है जो मनुष्य को मानसिक दासता से हटाकर केवल परमात्मा का सच्चा भक्त बनाता और मानसिक स्वतन्त्रता की शिक्षा देता है। वैदिक धर्म में प्राचीन ऋषियों, मुनियों, सन्तों का सम्मान करना तो उचित है, क्योंकि इन्होंने तप करके वेद-उपदेशों को हमारे तक पहुंचाया है। परन्तु किसी ऋषि ने ब्रह्मा से लेकर दयानन्द तक यह दावा या उपदेश नहीं किया कि जो हमें न मानेगा या हमारी पूजा न करेगा या हमें प्रभुत्व न देगा वह वैदिक धर्मी न होगा या आर्य (हिन्दू) न कहलावेगा या काफिर या नास्तिक होगा। उन्होंने तो यही उपदेश किया कि वेद के उपदेश के अनुसार अपना कर्तव्य पालन करो।

दूसरी विशेषता वैदिक धर्म में यह है वैदिक धर्म ज्ञान का भण्डार है। वेद कहता है कि तुम ज्ञान के द्वारा ही मोक्ष और आनन्द का जीवन प्राप्त कर सकते हो। परन्तु शेष सब मत मतान्तर अन्ध विश्वास का उपदेश करते हैं। जो कोई शक रहेगा वह काफिर है। यदि आप शंका करे कि चांद के दो उंगलियों के द्वारा दो टुकडे नहीं हो सकते या कि कोई मरा हुआ मनुष्य तीन दिन के पश्चात् कबर से उठकर आकाश पर नहीं जा सकता तो आपको फौरन "काफिर" के शब्द से सम्बोधित किया जायेगा। परन्तु वैदिक धर्म शिक्षा देता है कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। सब काम सत्यासत्य को विचार करके करने चाहिये। आर्य समाज के पहिले नियम में विद्या से ज्ञान प्राप्ति की आवश्यकता बतलाई गई है। यह विशेषता किसी मत में नहीं पाई जाती। अतः जहां संसार के अन्य मत-मतान्तरों ने अन्ध विश्वास ईमान को सब से ऊंचा दर्जा दिया, वहां वैदिक धर्म ज्ञान अर्थात् विद्या प्राप्ति को ही प्रभुत्व देता है। मनुष्यों का पशुओं से भेद भी इसी बात में है कि पशु विद्या और ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर सकते। मनुष्य ज्ञान

सकता है

वैदिक धर्म में तीसरी विशेषता यह है कि वह ईश्वरीय ज्ञान को सम्पूर्ण बताता है। चूंकि परमात्मा सत्य और सम्पूर्ण हैं, इसलिये उसका ज्ञान भी सत्य और सम्पूर्ण होंना चाहिये। इसमें विकास और परिवर्तन नहीं हो सकता। परन्तु अन्य मतमतान्तर वाले कई उपदेशों को बताते है कि वे रद हो गये और उनके स्थान में ईश्वर ने नया उपदेश किया। ईसाई लोग मूसा के उपदेशों को रद करते हैं और इंजील में ईसा के उपदेशों को अनुकरणीय बताते हैं। मुसलमान हजरत मुहम्मद के उपदेशों को जो कुरान में है सच्चा कहते हैं। इसमें भी कई उपदेश ईश्वर की तरफ से आये पीछे रद किये गये और कई आयत (उपदेशों) के सम्बन्ध में कहा जाता है कि शैतान ने हजरत महम्मद की जबान पलट डाली जो पीछे ज्ञान होनेपर रद कर दी गई। परन्तु वैदिक धर्म का निश्चय है कि ईश्वर का वाक्य सत्य और सदैव समान है। कोई मनुष्य कितना ही विद्वान क्यों न हो जावे कभी सत्य में परिवर्तन नहीं कर सकता। दो और दो मिलकर हमेशा चार ही रहेंगे। इसलिये ईश्वरीय ज्ञान में न तो विकास होता है, न परिवर्तन और वह सदा से एक दशा में है यह विशेषता केवल वेद में पाई जाती है।

चौथी विशेषता वैदिक धर्म में यह है कि इस में ईश्वर का स्वरुप सम्पूर्ण रुप से वर्णन किया गया है। मतमतान्तरों ने ईश्वर का स्वरुप मन गढ़न्त विचारों से बनाया है। तौरेत और बाईविल में ईश्वर को मनुष्य के समान चलने फिरने वाला और वार्तालाप करने वाला वर्णन किया है। वहां साथ ही ईर्षा द्वेष से भरा हुआ, बदी का बदला लेने वाला भी वर्णन किया है। किसीने ईश्वर को सातवें आसमान पर, किसी ने चौथे पर बैठाया। परन्तु वेद ने ईश्वर के गुण ऐसे सम्पूर्ण विशाल और विस्तृत बताये हैं, जो किसी मतमतांतरों में नहीं पाये जाते। आर्य समाज के दूसरे

नियमों में ईश्वर का स्वरूप तथा गुणों का यों वर्णन है—
ईश्वर सच्चिदानंद-स्वरुप, निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार सर्वेश्वर, सर्व-व्यापक, सर्वांतर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। अस्तु ईश्वर के ऐसे विशाल स्वरुप को किसी मतमतांतर ने वर्णन नहीं किया। यह वैदिक धर्म की ही विशेषता है कि जिनने ईश्वर का सम्पूर्ण स्वरुप जो विज्ञान तथा बुद्धयानुकुल वर्णन किया है।

पांचवी विशेषता यह है कि तमाम मतमतांतर Science (विज्ञान-पदार्थ विद्या) Philosophy (तत्वज्ञान) को मत से प्रथक मानते हैं, इसका विरोध करते हैं और कहते हैं कि इनका मजहव से कोई सम्बंध नहीं। किंतु विज्ञान और तत्वज्ञान के नेताओं और सञ्चालकों के मजहब के नामपर वध किया है और कडे दण्ड दिये गये। परंतु वैदिक धर्म की विशेषता यह है कि वह विज्ञान और तत्वज्ञान को धर्म के अङ्ग-प्रत्यङ्ग मानता है। वेद के अर्थ है ज्ञान और ज्ञान में Science और Philosophy सब सम्मिलित है। ऋग्वेद में सब पदार्थों का ज्ञान है। यजुर्वेद में कलाकौशल का ज्ञान है, अथर्व वेद में Science आदि सब ज्ञान है, सामवेद में उपासना तथा संगीतादि का ज्ञान है फिर इनके साथ ४ प्रकार की Science का नाम उपवेद है। अर्थात् आयुर्वेद मेड़ीकल सांइन्स (Medical Science) का प्रतिनिधि, धनुर्वेद शस्त्रविद्या का (Military Science) अर्थवेद (Political Economy) का और सामवेद राग-विद्या का प्रतिनिधि है। ऐसा ही तत्वज्ञान ग्रंथों का नाम दर्शन शास्त्र है और यह वेद के उपांग कहलाते हैं। यह छः × न्याय, वैशेषिक, सांख्य योग, वेदांत और मीमांसा। इनका नाम दर्शन ग्रंथ इसलिये है कि इनके द्वारा हम ईश्वर के दर्शन कर सकते अर्थात् उसकी प्राप्ति कर सकते हैं। अस्तु वैदिक धर्म ने Science (विज्ञान) का कभी विरोध नहीं किया। परंतु ईसाई और इस्लाम मत का सारा इतिहास

साइन्स वालों को कष्ट देने, इनका रक्त बहाने और खून की नदियां बहाने से भरा पड़ा है ।

छठा विशेषता यह है कि यह संसार को उपकार करना सिखाता है । वैदिक धर्म कहता है कि सब प्राणियों को मित्रता की दृष्टि से देखो । संसार को अपना कुटुम्ब समझो । हर एक मजहब में इसके अनुयायियों के साथ रियायत और सहायता करने की हिदायत है । मुसलमानों में मोमिन् तो भाई है, उनकी सहयता करो, दूसरा काफिर है इनसे घृणा करो, उन्हें लूटना, मारना पुण्य है और इन्हें कत्ल करने से स्वर्ग की प्राप्ति है । ईसाइयों नें भी जो ईसा के अनुयायी नहीं इन्हें (heathen) या जंगली लिखा है । ईसा स्वयं कहता है कि मैं मोती कुत्तों के सामने फेंकते नहीं आयाहूँ । अर्थात् मेरा उपदेश केवल ईसायत संतानों के लिये है न कि अन्य लोगों और जातियों के वास्ते । मगर वैदिक धर्म में संसार के उपकार में हर मतांतर भिन्न-भिन्न जातियों और देशों के मनुष्यमात्र ही सम्मिलित नहीं है, किंतु तमाम पशु कीट पतंगादि सब सम्मिलित हैं । जहां अन्य मतमतांतरों में पशुओं को मारकर खाना जायज़ है । ईश्वर के नाम मुसलमानों की कबर पर लाखों पशु तड़पा तड़फ कर कुरबान किये जाते हैं । ईसाई लोग मांस को अपनी ईश्वरीय वस्तुओं में सम्मिलित करके गिरजा में यह रस्म आदा करते है और इस तरह से ईश्वर के नाम पर लाखों पशुओं की गर्दन पर छुरी फेरी जाती है । अमेरिका में तो अपनी जिह्वा के स्वाद के लिये ३० करोड़ पशुओं को प्रति वर्ष वध किया जाता है । मछलियां और अण्डे इनके अतिरिक्त हैं जो प्रति दिन खाये जाते है । मनुष्य स्वार्थ के लिये कितनी निर्दयता का अपराधी बन रहा है । परन्तु वैदिक धर्म तो शिक्षा देता है कि संसार के तमाम प्राणियों से प्रेम करो । इनको अपना मित्र समझो और इसलिये उपदेश करता है कि प्रति दिन अपना नित्यकर्म में बलिवैश्य देव यज्ञ को करो अर्थात् पशु-पक्षियों, कीट पतगांदि को भोजन दो और अन्य मनुष्यों

की पालन और [illegible] के लिये पितृयज्ञ और अतिथि यज्ञ करना अत्यावश्यक बतलाया गया है। अतः वेद की यह शिक्षा संसार में अमन और शांति स्थापित करने का असली (Practical) साधन है, जो किसी मतमतांतरों में नहीं। बौद्ध मत ने "अहिंसा परमो धर्मः" का उपदेश किया था, परन्तु आज इसके अनुयायी बर्मा, चीन, जापान में सर्व-भक्षी बने हुए हैं और कहते हैं कि हम तो हिंसा नहीं करते। हिंसा और लोग करते हैं। हम तो बाजार से मांस लाते हैं, जैसे :-चावल और आलू। बुद्ध ने हिंसा न करने की आज्ञा दी है न की मांस खाने का निषेध किया है। परंतु वैदिक धर्म तो तमाम प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने और उनसे प्रेम करने की आज्ञा देता है। जो कि इसका विशेष गुण है।

— क्रमशः —

सत्यं वद

शास्त्री श्री देवेन्द्र प्रसाद "सावित्रेय"
Bsc. धर्मरत्नश्चविशारदः शास्त्री (गी०) B. A. L. L. B.
वेदानुसंधाताश्च वेदोपदेशकः आर्य समाज मन्दिर,
स्वामी श्रद्धानन्द रोड़, राँची- १

"सत्येन उत् भिन्ना भूमि"

ऋग्वेद मं० १०

सभी सत्कार्यों में सिद्धि प्राप्त करने का मुख्य कारण सत्यता है।" क्योंकि जब तक मनुष्य सत्याचरण नहीं करता है, सत्य का सहारा नहीं लेता है तब तक वह तीन प्रकार की उन्नति नहीं कर सकता है। जब कोई सत्यवादी होकर सत्य-पथिक हो जाता है तब वह अपना नाम अमर कर जाता है, केवल नाम ही अमर नहीं करता है मानव जीवन का जो मुख्य लक्ष्य है, (मोक्ष प्राप्त करना) उसे प्राप्त कर परमानन्द में विलीन हो जाता है।

इतिहास इसका साक्षी है। सत्य के पथ में अनेक विघ्न-बाधायें आती हैं, अनेकानेक कष्ट सहन करने पड़ते हैं तो बाद में सफलता हाथ लगती है। सत्यवादी हरिश्चन्द्र ऐसे ही पुरुषों में एक थे। मनुष्य तीनों प्रकार की उन्नति सत्य से कैसे कर सकता है, उसके उपाय निम्नलिखित हैं-

१- शारीरिक :- जब पुरुष ब्रह्मचर्य रूपी सत्य से अपनी इन्द्रियों को जीत लेता है तब वह जितेन्द्रिय होकर शक्तिशाली बनता है। अपना आचरण सदाचार के अनुकूल रखता है, शरीर से सच्चा श्रम करता है। अपनी इन्द्रियों को सत्कार्यों

में लगाता है, हमेशा सत्य बोलता है तब निश्चित रूप से शारीरिक शक्ति प्राप्त कर लेता है ।

२-मानसिक :- जब मनुष्य अपने जीवन को सत्य के ढाँचे में ढाल लेता है तो उसका सारा जीवन सत्यमय हो जाता है । वह पारस्परिक व्यवहार में सत्यता, ईमानदारी, माधुर्य का संचार करता है ।

मन से सच्चा ज्ञान प्राप्त कर पिपासु होने से पूर्ण ज्ञान विज्ञान को प्राप्त करता है तथा वाक् शक्ति को हमेशा सत्य रूपी देवता से पवित्र रखता है । इस प्रकार से मानसिक उन्नति को प्राप्त करता है ।

३-आतमिक :- आत्मिक उन्नति करने के लिये सत्य का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है । जिस प्रकार शरीर को तन्दुरुस्त तथा स्वस्थ बनाये रखने के लिये प्रकृति से पौष्टिक पदार्थों को ग्रहण करना जरुरी है उसी प्रकार आत्मिक उन्नति करने के लिये यम नियम पालन करना अनिवार्य है । ऐसा योग-दर्शन में महर्षि पातञ्जलि का मत है । यम-नियम के अन्तर्गत सत्य भी आता है । योगी पुरुष के लिये, यम वह मूलाधार है जिस पर सम्पूर्ण यौगिक विभूतियाँ तथा मोक्ष टिका हुआ रहता है । इसे त्याग कर मोक्ष की प्राप्ति नहीं की जा सकती है ।

यम-नियम के विषय में महर्षि ने कहा हैं :—

यमनियमासनप्राणायाम प्रतयाहारध्यानधारणा-
समाधायोऽष्टावङ्गानि ।
अहिंसा सत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ॥

(योगदर्शन २९, ३०)

सत्य बोलने के लिये धार्मिक शास्त्रों में, स्मृतियों में, वेदों में, उपनिषदों में कहा भी गया है– "सत्यं ब्रूयात् प्रियंब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम" ।। (मनु स्मृति)

"सत्यमेव जयते नानृतम्" (उपनिषद्)

"सत्येन पंथा वितती देवयाना" (उपनिषद्)

इस लिये हम सब लोगों को सत्य बोलना चाहिये, जिससे कि उन्नति हमलोग प्राप्त करें। सत्य हरिश्चन्द्र, मर्यादा पुरूषोत्तम रामचन्द्र आदि लोग सत्य वादी होने के कारण ही उनका नाम आज भारतीय इतिहास में अमर है। उन के राज्य की महिमा की प्रशंसा लोग आज मुक्त कंठ से करते हैं। तुलसी दास ने अपना महाकाव्य रामचरित्र मानस में राम राज्य का वर्णन किया है जिस में विदित होता है सभी लोग सुखी थे।

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज्य काबू नहीं व्यापा॥
सब नर करई सत्यंपर प्रीति। चलई स्वधर्म निरत श्रुति नीति॥
(रामचरित मानस)

वही एक राज्य की स्थापना राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी करना चाहते थे, लेकिन नहीं कर सके।

हमें तथा हमारे भारतवासियों को परमात्मा ऐसी शक्ति दें जिससे हमलोग भी अपने पूर्वजों के भांति सत्यवादी बनें। यह सभी सम्भव हो सकेगा जब सबकी कामना होगी।

सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः॥
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्॥

"आदिवासियों के पूर्वज"

शास्त्री श्री देवेन्द्र प्रसाद "सावित्रेय"

B. Sc. धर्मरत्नश्चविशारदः शास्त्री (गी०)
B.A.L.L.B. वेदानुसंधाताश्चवेदोपदेशकः
स्वामी श्रद्धानन्द रोड़, राँची- १

"युवो राष्ट्रं बृहदिन्वति द्यौर्यौ सेतृभिरज्जतिः सिनीथः ।
परि नो हेलो वरुणस्य वृज्य उरुं न ईन्द्र कृणावदुलोकम् ॥"
ऋ० सं० ७ । सू० ८४ । मं० २

ईधर सौभाग्य से सात आठ महीनों तक आदिवासियों के संसर्ग में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । मुख्य रूप से उराँव और भगत जातियों के साथ रहने का सौभाग्य ही प्राप्त न हुआ बल्कि साथ रहकर पठन पाठन करने का भी सुअवसर मिला । उनके घरों में रहने से उनके पर्वों तथा आयोजित सांस्कृतिक गोष्ठियो की देखने का तथा मनाने का भी ज्ञान का प्राप्त हुआ । ऐसे तो मुझे पहले से ही भारतीय ग्रन्थों में जानकारी एवं रुचि की रही है । आदिवासियों के साथ रहने से तुलनात्मक अध्ययन करने पर महसूस हुआ कि ये "आर्य पुत्र" ही हैं, अनार्य पुत्र कदापि नहीं ।

"कुड़ुख" :"करुष" अपभ्रंश

उराँव जाति का दूसरा नाम 'कुड़ुख' है । उनकी भाषा को 'कुड़ुख भाषा' कहते हैं । शब्द शास्त्रियों का कहना है 'कुड़ुख' शब्द 'करुष' शब्द का अपभ्रंश है । 'ष' को प्रायः 'ख' बोलते हैं । जैसे विष को विख, भेष को भेख, भाषा भाखा, और भूषण को भूखन, लषण को लखन, इत्यादि ।

'करुष' में केवल एक मात्र 'उ' की अधिक जुड़ गयी है जिससे 'करुष' का 'कुड़ुख' हो गया है। विवस्वान् मनु जो संसार में सर्व प्रथम राजा हुए जिसकी राजधानी कोशल देश के अंतर्गत सरजू नदी के तट पर अयोध्या थी, जिसको मनु ने स्वयं बनवायी थी। अत संसार की पहली नगरी हैं। जैसा कि बाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड सर्ग ५ किष्किन्धा काण्ड के भी कुछ प्रसंगो में भी वर्णित है। उस मनु के नौ पुत्र हुए जिनमें एक 'करूप' भी था (विष्णु-पुराण, अंशक् अध्याय १ श्लो० ३३-३४, (हरिवंश पुराण) ।

मनु विवस्वान् सूर्य से उत्पन्न होने के कारण सूर्यवंशी' कहलाये। ईक्ष्वाकु सूर्यवंश में राम जी ने २४ वीं चतुर्युगी के त्रेता द्वापर के संधि में जन्म ग्रहण किया जिसको इस समय लगभग १८१४५०८१ वर्ष हो रहे हैं। (वायु पुराण अ० ७०। श्लो० ८ ॥ हरिवंश पर्व ४। श्लो० १२२)

वैसे 'करुष' (कुड़ुख) विवस्वान मनु के पुत्र के नाते सूर्यवंशीय क्षत्रिय हैं। 'करुष' ने अपने नाम से बिहार प्रांत के अंतर्गत "करुष-जनपद" बसाया जो इस समय शाहाबाद (आरा) जिलों के नाम से प्रसिद्ध है। यह 'करुष' जनपद धनधान्य से पूण था जिनको जाम के पुत्र सुन्द की पत्नी महायक्ष सुकेतु की पुत्री ताड़का यक्षिणी ने उजाड़ दिया। जैसा कि बाल्मीकि रामायण के बालकांड सर्ग २४, श्लोक १, २ से स्पष्ट है।

करुष-प्रदेश

उसी 'करुष-प्रदेश' में महर्षि अगस्त का आश्रम था, जिसको ताड़का ने उजाड़ दिया और उन्हीं ऋषि के शाप से सपुत्र

राक्षसिनी बनी। यह 'देश' राम द्वारा ताड़का का बध होने पर पुनः आबाद हो गया और धनधान्य से भी भर गया, जिसका विस्तार पूर्व में सोन नदी और पश्चिम में कर्मनाशा नदी, उत्तर में गंगा नदी और दक्षिण में कूर्माञ्चल पर्वतमाला कहते हैं।

—मुस्लिम काल और रोहिताश्वगढ़ का पतन—

मुस्लिम शासन काल में रोहिताश्व गढ़ का पतन हुआ, जिससे उराँव लोगों को वहाँ से हट जाना पड़ा, कुछ लोग उधर ही रह गये जो अपने को 'सूर्य वंशीय करुष क्षत्रिय' कहते हैं। 'करुष' (कुड़ुख) भाषा बोलते हैं, यज्ञोपवीत धारण करते हैं। बहुत लोग इधर छोटानागपुर (किकट-प्रदेश) उत्कल, सुन्दरगढ़ जिला, सरगुजा, मध्यप्रदेश, असम आदि स्थानों में चले गये।

डालहेन गंज पलामू जिला के लोग अभी तक उराँयों को उराँव राजा कहते हैं। पराजय स्वरुप स्त्रियाँ ललाट गोडना गोडाती हैं और प्रति १२ वर्ष में सैनिक वेश में 'क्षत्रधर्म' का प्रदर्शन करती हैं, जिसको 'जनि-शिकार' कहते हैं, क्योंकि इसमें स्त्रियों ने ही पुरुष वेश में हमलाकर मुसलमानों से युद्ध किया था। तीन वार इन्होंने शत्रुओं कों भगा दिया था, चौथि वार किले में आने-जानेवाली एक ग्वालिन (गवारिन) से भेद खुल जाने के कारण उन्हें हारना पड़ा।

"मुस्लिम आक्रमण"

मुसलमानी आक्रमण तथा मुमलमान होने से बचने के लिए ये मुसलमानों के हराम (निषिद्ध) शुकर (सूअर) को पालने और शराव को व्यवहार में लाने लगे। मुसलमान

होने से वचने की यही रणनीति।उत्तर-विहार की दुसाध जाति ने भी अपनायी थी। पहले से सब बातें नहीं थी किंतु ये ही उनके पतन की कारण बनी। जो दूसरों से अस्पृश्य भाव से देखे जाते हैं। इनके तीन भेद है :- एक ताना भक्त (भगत) दूसरा पूर्णभक्त और तीसरा मधुआ भक्त ताना और पूर्णा दोनों आज भी शिक्षा सूत्र धारण करते हैं और कट्टर अहिंसावादी हैं।

मधुआ केवल शिखा (चुन्दी) ही रखता है। मधुआ प्रायश्चित कर पूर्णा और टाना वन जाता हैं। और पूर्णा भी शिकार-शराब के फेर में पड कर मधुआ वन जाता है। मध्यकाल से (१३७५ ई० से १७०० ई०) में कबीर सहित कई निर्गुण वादी सन्तों के मतों के प्रभाव में बहुत से लोग मद्य-मांस को छोड कर 'कवीर पंथी' वन गये। इधर वीच में 'सनातन वैदिक धर्म' के प्रचार से उनमें एक दल आर्य भक्त या सनातस भक्त भी कहाता है। आर्यत्व के चिह्न शिखासूत्र के अतिरिक्त शव का दाह करना, गोत्र बचाकर अग्नि की साक्षी के साथ विवाह करना जो आर्यत्व का मुख्य द्योतक है। जो आर्यों (हिन्दुओं) को छोड़कर अन्य धर्मावलम्बी, मुसलमानों व ईसाइयों में नहीं उपलब्ध है। जैसा कि— मनु महाराज ने मनुस्मृति में लिखा है—'जो माता की सातवीं पीढ़ी में न तो और पिता के गोत्र की विलकुल न हो, ऐसी कन्या से विवाह करना त्रिजातियों में (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) प्रसंसनीय और श्रेष्ठ है। (मनुस्मृति ३, ५, ७)

ये क्षत्रियों के चिह्न तीर और धनुष, कुल्हार, फरसा तलवार आदि अस्त्र-शस्त्र रखते हैं और समय पर व्यवहार में लाते हैं। इतना स्पष्ट प्रमाण आर्य क्षत्रियत्व के होने पर भी आर्येतिहासानभिज्ञ पाश्चात्य लोग तथा उनके मानस पुत्र एतद्देशीय लोग इनको अनार्य, असभ्य, म्लमिष्ठ, (विधर्मी) आदिवासी नामों से पुकारते हैं।

संस्कृत साहित्य से पुराना कोई साहित्य नहीं, इस बात को बडे बडे विद्वान् मोक्षमूलर (Max Muller), जर्मन का अहिफाएईन कोंजिय जैकोलायर, फ्रांस का और पोलक यूनान-वासी आदि ने माना है। उसमें कहीं नहीं लिखा हैं कि आर्यों से पहले से कोई जाती बसी हुई थी। आर्यों ने ही पहले इस देश का नाम 'आर्यावर्त्त' रखा।

॥ तं देवं निर्मित देशमार्यावर्त्त प्रचक्षते ॥

॥ मनुस्मृति ॥

इसके अतिरिक्त जिन द्राविड़ आदि को आदिवासी कहा जाता है, वे भी आर्यों के ही सन्तान हैं। ब्राह्मणों के उपदेश न मिलने के कारण शूद्रत्व को प्राप्त हो गये। मनु ने इसे मनुस्मृति के अ० १० श्लोक ४३-४४ में दर्शाया है।

इनको 'भूत-पूजक' भीं कहा-जाता है। यदि 'भूत-पूजक' से पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, और आकाश 'पंच-महाभूत' अभिप्रेत हैं तो सभी 'भूत-पूजक' ही हैं। क्योंकि इस 'भूमाता' आदि की पूजा से अन्नादि की प्राप्ति कर शरीर का योग क्षेम सभी चलाते हैं। तो फिर इन्हें ही क्यों 'भूत-पूजक' कहते हैं।

आदिवासियों को भी पवित्र धार्मिक ग्रन्थ वेद ही हैं। क्योंकि ये लोग अपने को सरणा धर्म वाले अर्थात् (संसारी) 'सन्सारी धर्म वाले कहते हैं। शरराया, शरणा, श्रवण, श्रुति वेद को ही कहते हैं। वेद ही सरण लेने योग्य सुनने योग्य होने से शरराया, शरण का अपभ्रंश रुप होने से शरराया, कहलाता है। संसार के लोगों को वेद माने विना कल्याण नहीं इसको 'संसारी धर्म' कहते हैं। और वेद ने भी तो स्पष्ट उद्घोषित किया—"सा प्रथमासंस्कृतिर्विश्ववारा" सम्पूर्ण संसार को वहीं प्रथम वैदिक संस्कृति ही कल्याण कर सकती है।

अदिवासी जाति अपने पूर्व गौरव को भूल बैठे हैं। अपने गौरव को याद कर मुख्य रुप से उराँव जाति सुधार

करें । अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त कर यशस्वी बने । मद्य (शराब) शिकार, हण्ड़िया आदि के प्रयोग न करके सभी एक ही जैसे सात्विक विचार बनें । समाज-सुधारक पुरुषों की प्रचार से अब तो इनमें काफी सुधार हुआ हैं । इससे स्पष्ट विदित होती है— अब वह दिन दूर नहीं कि अपने पूर्वजों जैसी प्रतिभा और गरिमा को न पा सकेंगे ।

कर्मोपदेश

संसार दीर्घ रोगस्य सुविचारो महौषधम् ।
कोऽर कस्यचित् संसारो विवेकेन विलीयते ॥
(चाणक्य सूत्र)

"याद रखिये — बदला लेने से कोई ऊचा नहीं उठता, वह ऊँचा उठता है आदा से । पद या पैसा से कोई महान् नहीं बना, बना होना है अपनी करुणा से । द्वेष या दाह से कोई महात्मा नहीं बन सका प्रेम से आत्मदर्शन कर महात्मा बना । जो दिल का बड़ा है वही बड़ा है ।

इस विश्वास में एक महान् शक्ति है जिसे तप के बिना कोई जान नहीं सकता ।

— ओ३म् —

"दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते"

(ऋ० १, १२५, ६)

"दाता अमर पद के अधिकारी हैं"

धर्म और वेद प्रेमी आर्य सज्जनों !

उत्कल (उड़ीसा) प्रांत में आर्य समाज का प्रचार अत्यंत न्यून है । अन्धविश्वास तथा कुसंस्कारों की यहां भरमार है। नाना मतान्तरों में से कुंभीपटिआ मतवाली का बोलबाला है । कुंभीपटिआ साधु गांव-गांव में भ्रमण करते हुए अपने मत का प्रचार करते हैं । वे लोग वेद तथा वैदिक धर्म को नहीं मानते । अपने को निर्वेद धर्म वाला बतलाते हैं । यज्ञ का अर्थ ओ३म् (ईश्वर का मुख्य नाम) का विशेष विरोध करते हैं । उनके आतंक से इस वर्ष फरवरी की २ तारीख से ५ तारीख यजुर्वेद पारायण का संपूर्ण प्रबन्ध हो चुका था किंतु ये यज्ञविरोधी साधुओं ने एस. डी. ओ. के पास षड़यन्त्रपूर्वक अपील की और निषेधाज्ञा लेकर यज्ञ बंद करा दिया, हमारा यज्ञ सम्पन्न न होने पाया । इसके प्रतिरोध में व्याकुल होकर मैंने हाईकोर्ट में अपील की, अब भी यह केस चल रहा है ।

ईन्ही की मुख्य धर्मपीठ महिमागादी योरन्दा जिला ढ़ेंकानाल में है । वहां प्रायः ३००० संन्यासी स्थायी निवास करते हैं तथा प्रचारार्थ जाते आते रहते हैं ।

उस आश्रम के सन्निकट ही करीब १ फर्लाङ्ग की दूरी पर हमने अपने गुरुकुल वैदिक आश्रम स्थापना कर दी है। सन् ७३ ई० से प्रायः ४-५ वर्ष से उस आश्रम के साथ हमारा संघर्ष चला आ रहा है । हमारे आश्रम में संप्रति ४५ ब्रह्मचारी विद्याध्ययन कर रहे हैं ।

यज्ञ के विरोध के कारण हमने यह प्रण किया है कि यहां आश्रम में एक भव्य दिव्य यज्ञ-शाला तथा वेद सन्दिर बनवायें जिससे वहां प्रतिदिन यज्ञ हो तथा यज्ञविरोधी कुंभीपटिआ साधुओं का प्रचार प्रसार बन्द हो। किन्तु हम साधनहीन हैं। इस कार्य में लगभग २०-२५ हजार रुपये व्यय हो जायेंगे। यह महान संकल्प केवल उदारमना आर्य दानी सज्जनों के सहयोग से ही संभव हो सकता है।

अतः यज्ञ तथा वेद के रक्षा निमित्त उदार हृदय से आर्य दानी सज्जन इस कार्य में सहायता प्रदान कर पुण्य का भागी बनें।

जो सज्जन १००१) अथवा ५०१) रूपये दान देंगे उनके नाम पत्थर में खुदवाया जायेगा। ॥ इत्यो३म् ॥

—: निवेदक :—

स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती

ओंकारदेव गुरुकुल वैदिक आश्रम, महिमागादी
योरन्दा, ढेंकानाल (ओड़ीसा)

स्वामी ओंकारानन्द जी सरस्वती का प्रचार-कार्य

गुरुकुल वैदिक आश्रम महिमागादी, योरन्दा जिला ढेंकानाल (ओड़ीसा) के संस्थापक तथा आचार्य और आर्य संन्यास वानप्रस्थ मण्डल के सह-संचालक, स्वामी ओंकारानन्द जी सरस्वती का तारीख २८ ५-७७ से गुरुकुल के बाहर का प्रचार कार्य क्रम निम्न लिखित हैं।

स्वामी जी २-६-७७ आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) पहुंचे। आश्रम के दैनिक सत्संग में स्वामी जी के दों व्याख्यान हुए। व्यख्यान के माध्यम से स्वामी ने कहा कि तीन हजार कुंभपटिआ साधु महिमागादी से प्रचार करते रहते हैं जो कि ओं, यज्ञ और वेद का विरोध करते हैं। उनसे मुकाबिला करने के लिये, वहां गुरुकुल में एक यज्ञशाला और वेद मंदिर स्थापित करने के लिये स्वामी जी धन संग्रहार्थ निकले हैं। स्वामी जी के निवेदन तथा स्वामी विश्वमित्रानन्द जी सरस्वती के प्रयत्न से वानप्रस्थ आश्रम के प्रधान श्री आर्य भिक्षु जी ने २५ रुपये, वानप्रस्थ आश्रम की माता ओं और सज्जनों ने ४२७ रुपये और उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियों ने १५ रुपये दिए। कुल मिलाकर ४६७ रुपये प्राप्त हुए। वहां से स्वामी जी रुड़की आर्य समाज गये और १५ रुपये प्राप्त किये। वहां से विदाई लेकर स्वामी जो दिल्ली आये तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री और प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले से मुलाकात करके उड़ीसा में वैदिक धर्म के प्रचार के विषय में बातचीत की।

●

विद्यार्थियों के लिये स्वर्ण अवसर

आर्ष गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय आ्रा डिकाडला (करनाल)

में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल में नवीन सत्र के लिये प्रवेश प्रारम्भ है ।

१- गुरुकुल में श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ की प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य की परीक्षायें होती हैं । जो क्रमशः मिडिल, हायर सेकेण्ड्री, बी. ए., एम. ए., के समकक्ष भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है ।

२- संस्कृत विषय लेकर मिडिल, हायर सैकेण्ड्री, बी. ए., उत्तीर्ण छात्र क्रमशः मध्यमा, शास्त्री, आचार्य, कक्षा में प्रवेश पा सकते हैं ।

३- यहाँ महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्ष पाठ-विधि की आधुनिक बिषयों सहित निःशुल्क शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध है ।

४- ब्रह्मचारियों के सर्वांगीण विकास के लिये योग्य आचार्यों के संरक्षण में अध्ययन एवं व्यायाम आदि का समुचित प्रवन्ध है ।

५- प्रवेश चाहने वाले छात्र शिघ्र सम्पर्क स्थापन कर

अजित कुमार एम. ए. व्याकरणाचार्य
प्रधानाचार्य
गुरुकुल ड़िकाड़ला, जि०- करनाल
(ह र या णा)

समाचार दर्शन

बृहत् यज्ञ

१- खिलाटेश्वर पीठ

विगत ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णीमा तदनुसार १-६-१९७७ के दिन बालेश्वर जिलान्तर्गत खिलाटेश्वर पीठ स्थल में १ दिवसीय वैदिक रित्यानुसार यज्ञ सम्पन्न हुआ था। जिस में पं० बलदेव वेदवागीश, शास्त्री पौरहित्य किये थे। तथा गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास राउरकेला के ब्र० प्रताप कुमार तथा ब्र० प्रदीप कुमार ने सम्मिलित होकर यज्ञप्रेमी जनता के समुख उपदेशयुक्त अनेको भजन उपस्थापित की, तथा वेदपाठ भी किये। अनेक श्रद्धालु लोग यज्ञ में आकर आहुति प्रदान की।

२- छन्दासाही

बालेश्वर जिलान्तर्गत छन्दासाही ग्राम में १७-३-१९७७ को गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास के संस्थापक पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज के अध्यक्षता में १ दिवसीय यज्ञ सुसम्पन्न हुआ। यज्ञ के उपरान्त एक सभा का आयोजन किया गया, जिस में पूज्य स्वामी जी, आश्रम के आचार्य पं० देवव्रत जी, पं० बलदेव वेदवागीश जी पं० धनेश्वर वेहेरा बी. ए. बी.ई.डी., ब्र० नकुलदेव जी, श्री दोलगोविन्द जी एम. ए. श्री निलमणी जी शास्त्री, स्वामी रसानन्द जी आदि विद्वान्‌गण सम्मिलित होकर शिक्षाप्रद उपदेश दिये थे, जिस पर स्थानिय जनता ने अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की थी। श्रीमान् वृन्दावन जी ने सभा की अध्यक्षता की थी।

३- कल्याण आश्रम थालुकुडी

कटक जिलान्तर्गत थालुकुडी ग्राम, गुरुकुल वेदव्यास के शाखा कल्याणाश्रम का ६ वाँ बार्षिकोत्सव दिनांक १४-१५-१६ जून १९७७ को समारोह के साथ सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर त्रीदिवसीय यज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें पं० वलदेव जी वेदवागीश, शास्त्री ने पौरोहित्य की थी।

इस त्रीदिवसीय उत्सव में गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास के आचार्य श्रीयुत पं० देवव्रत जो, संयुक्त मन्त्री पं० धनेश्वर वेहेरा, आर्य सन्यासी मण्डल के मन्त्री स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, तथा स्वामी रसानन्द जी, वानप्रस्थी ओमानन्द जी ब्र० नकुलदेव, जी श्री निलमणी शास्त्री जी, श्री दोलगोविन्द जी आदि विद्वानों ने विभिन्न प्रकार सारगर्भित, शिक्षापूर्ण उपदेशामृतों से जनता को आप्यायित किया था। सरल शब्दों में यज्ञ की परिभाषा तथा उपादेयता, के विषय में जनता को समझाया गया था।

इसी यज्ञ के उपलक्ष्य में स्थानिय युवक परिषद ने त्रीदिवसीय नाटक का आयोजन भी किया था।

ORISSA INDUSTRIES LIMITED

Latkata Works
ROURKELA-4

(Regd. Office : P. O. BARANG, Cuttack)

शुभ
कामनाओं के साथ

रिलायन्स टेक्सटाईल इंडस्ट्रीं लिमिटेड

अहमदाबाद - बम्बई :

विमलरेन्ज :

सुटिंग्स, सर्टिंग्स, साड़ी और
ड्रेस मटिरियल्स

शुभ कामनाओं के साथ :-

विश्वं दर्पण.दृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया।
यस्साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥

राष्ट्र सेवा में संलग्न

उड़िशा सिमेन्ट लिमिटेड

राजगांगपुर- ७७००१७

टेलेक्स- ०६३-२४०

प्रकाशक— स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा शान्ति आश्रम प्रेस, गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास, राउरकेला - ४ में मुद्रित ॥
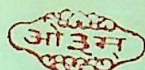
★ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ★
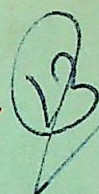
बनवासी सांस्कृतिक समिति, वेदव्यासस्य,
मासिकं मुखपत्रम्

वनवासी संदेश

संस्थापक :—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

●

—: वेद कहता है :—

वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ॥
(अ० १२।१।६२)

हे भूमे मातः! हम तुझे बलि अर्पण करने वाले हों अर्थात् मातृभूमि पर सब कुछ नौछावर कर दें।

●

संपादक	सह- संपादक
पं० आत्मानन्द शास्त्री	पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति

नीति-वचन

१- दुर्ब्राह्मणं शिरः कम्पने न सोपायनमपि ॥

● ब्राह्मण नामधारी दुष्टजनों का सिर हिलाकर सत्कार नहीं करना चाहिये । भले ही वह भेंट लेकर भी आये ।

२- शरीरं सर्वदा रक्षेच्च ॥

● मानव देह जो महान् पुण्यों के प्रताप से दैवी नौका, दैवी रथ के रूप में मिली है, उसका सदा सावधान रहते हुए प्रयत्न पूर्वक रक्षण करना चाहिये ।

३- जनघोषे सति क्षुद्रकर्म न कुर्यात्

● जनापवाद को दृष्टि में रखते हुए कभी नीच व पतित कर्मों का अनुष्ठान नहीं करना चाहिये ।

वनवासी-सन्देश

उत्कल जनता संस्कृति रक्षा वद्धकटिस्तमः स्तोमहतिदेशः
गुरुकुल सुपानपोषादुदयति वनवासी संदेशः ॥
यो भ्रष्ट ख्रीष्टमत दीक्षित मज्ञलोकम
संस्कृत्य दूरयति तद्धृदयांधकारम ॥
श्री वेदव्यास सुगुरो कुल सन्निवेशः
सम्पूर्वादेरुदयते वनवासी स देशः ॥

वर्ष ११ अंक ७	जुलाई १९७७	वार्षिक मूल्य ५ रु एक प्रति ५० पैसे

वेदोपदेश
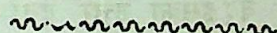
**ओ३म् अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे ।
अभिष्टि कृद्विचर्षणिः ॥सा० उ० ४,१,३, ऋ० ४,६४८,५**

अर्थ :— (अधा) और (इन्द्रियम्) इन्द्रिय को जीव की शक्ति को (हिन्वानः) प्रेरित करता हुआ (ज्यायः) बहुत बड़ा (महित्वम्) महत्व (आनशे) प्राप्त करता है, वह (अभिष्टिकृत्) अभीष्ट पदार्थों का कर्त्ता हैं, क्योंकि वह (विचर्षणिः) सर्वज्ञ तथा विशेष द्रष्टा है ।

भगवान की यह बहुत बड़ी महिमा है कि वह जीव को इन्द्रियां देता है । इन्द्रियों के सामर्थ्य पर ध्यान दो । जीव तो वेद के शब्दों में (अव्यसः' अव्यापक, बालादणीयस्कम्) बाल से भी अत्यन्त सूक्ष्म है । किंतु उसकी शक्तियां देखों, करड़ों मील दूर के पदार्थों को उसका नेत्र देखता है । यहां बैठा अमेरिका के गाने सुनता है । कितनी अद्भूत शक्ति है ? क्या सब कुछ जीव का है ? वेद कहता है :— न, यह भगवान

का है। वही इद्रियों को बल दे रहा है, इन्द्र और इन्द्रिय का मेल वह न कराये तो इन्द्र कुछ भी न कर पाये। इन्द्र के इन्द्रपन का ज्ञान तो इन्द्रियों के द्वारा होता है। इद्रियां न हो तो इन्द्र की सत्ता का ही विश्वास किसी को न हो। इन्द्र की सत्ता का विश्वास कराने वाले, इन्द्रियों के निर्माता का कितना बड़ा महत्व हुआ? बहुत बड़ा। तभी वेद ने कहा—अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्व मानशे। इन्द्रियां क्यों देता है? वह अभिष्टिकृन् है। अभीष्ट पदार्थों का कर्त्ता है, निर्माता है। भगवान् से जीव प्रार्थना करता है या उसे मित्र मान कर मनौती करता हुआ कहता है— तथा तदस्तु सोमापाः सरवे वज्रिन् तथा कृणु। यथा तं उश्मसीष्टये (ऋ० १।३०।१२) हे सोमपाः :- सोम पालने वाले, शांति देने हारे जगद्रक्षक भगवन्! जैसा हम इष्टि के लिये, अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिये तुझ से चाहते हैं वह वैसा ही हो, हे विघ्नवारक मित्र! उसे वैसा कीजिये।

स्पष्ट है कि अभीष्टों का निर्माता वही जगद्विख्यात है। उसमें यह सामर्थ्य कैसे है? वेद इसका उत्तर देता है कि "विचर्षणी" विशेष द्रष्टा है। सामान्य ज्ञान तो जीव को भी हैं किंतु वास्तविक ज्ञान तो विशेष ज्ञान है। पदार्थों के तत्व, पदार्थों के गुण धर्म, पदार्थों के भेदादि विषयक ज्ञान ही विशेष ज्ञान है। भगवान सर्व व्यापक है और साथ ही चेतन है। अतः वह सर्वज्ञ भी है। विशेषज्ञ सर्वज्ञ ही जानता है कि किसी को क्या चाहिये। हमारी चाहना हमारी क्रिया से द्योतक होती है। कर्मों से फल सिद्ध होता है जिस प्रकार के कर्म कर रहे हैं, उसी प्रकार की चाह है।

भक्त! दिल खोलकर मांग! भगवान तेरे सखा है। और—न सखा सरन्युः संगिरम् (ऋग्वेद ६।८६।१६) सखा सखा के वचन को नहीं तोड़ता। वह साधारण सखा नहीं है, वह वज्री है सभी विघ्नों को मार भगाता है। ऐसे विघ्न-विघात मित्र के होते हम अभीष्ट को प्राप्त न करें, तो इससे बढ़कर अभाग्य क्या होगा?

●

स

म्पा

द

की

य

देश की समस्या और महर्षि दयानन्द
के सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के लेखक जगद्विख्यात महान् आचार्य देशभक्त, देश के समस्याओं के प्रसिद्ध चिकित्सक महर्षि दयानंद सरस्वती है। आयुर्वेद अर्थात् चिकित्सा शास्त्र में चिकित्सा से पहले (निदान) परिज्ञान पर अधिक जोर दिया गया है, और कहा गया है कि (निदान) की खोज करके पहले उसी से बीमार को दूर रखा जाय जिस कारण बीमारी आई हो— उससे बचा जाय - तभी चिकित्सा सफल होती है।

अतः जो ड़ाक्टर वैद्य या हकीम ऐसा करता है, वह सफल, योग्य ड़ाक्टर कहलाता है, और जो ड़ाक्टर (निदान) को नजर अन्दाज करके चिकित्सा करता है, वह अनाड़ी ड़ाक्टर कहलाता है। सांप्रदायिकता की महामारी से भारत वर्ष कई सदियों से पीडित है, मगर इस महामारी का निदान किसी ने ढूंढ नहीं पाया, पर महर्षि दयानन्द ने अपने दिव्यदृष्टि से आज से प्राय १०३ वर्ष पूर्व अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में निदान बताये गये हैं। ऋषि दर्शनात् साक्षातकृत धर्माण ऋषयो बभूवुः, ऋषि सारे कुछ दर्शन करके अपने विचार व्यक्त किये हैं। क्योंकि ऋषि साक्षात्कृत धर्मा होते हैं। उन्हें क्या करना चाहिये स्पष्ट था। निरुक्त में कहा :—मनुष्या वा ऋषिषूरकामत्सू देवानब्रुवन। को न ऋषि र्भविष्यतीति तेभ्य एतं तर्कमृषि प्रायच्छन्॥ अर्थात् जब इस पृथिवी पर से ऋषि उत्क्रमण कर गये तो मनुष्यों देवों से पूछा अब हमारा ऋषि कौन होगा? इसपर देवताओं ने मनुष्यों को तर्क ऋषि प्रदान किया। और भी आगे कहा गया है कि 'तस्माद् यदेव किं चानुचानोऽभ्यूहत्यार्षन्तद्" अनुचान व्यक्ति का तर्क ही ऋषि पदवी को प्राप्त कर सकता है। अनुचान अग्निकल्प को कहते हैं। अर्थात् साधना व तप करते करते जो अग्नि कल्प बन गया है, उसी के तर्क का ग्रहण किया जाता है। तर्क का क्षेत्र मनुष्य का अन्य स्थल है। तर्क "कृते छेदने" धातु से बनता है। अर्थात् इस तर्क रुपी शस्त्र द्वारा मनुष्य को अपनी बुद्धि पर आये हुए आवरण का छेदन-भेदन करना चाहिये। ये आवरण नाना भांति के प्रलोभन व मिथ्या युक्तियाँ देकर हमें भूलाये में रखते है। उनका खंडन करना, उनका छेदन करना ही तर्क का अपना रुप है। जिस समय मनुष्य के अन्दर विद्यमान उस दिव्य सूर्य पर से आवरण हट जाता है तो सत्यार्थ का प्रकाश हो जाता है। अतः महर्षि ने साधना और तप द्वारा सारे आवरण को हटा कर जनता के सामने सत्य का प्रकाश किया और अपना सारा सिद्धान्त वेद पर ही रक्खा। क्योंकि चारों वेद हमारे अन्दर ही विद्यमान है (यस्मिन्नृचः साम यजूंषि

यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः । यजु० ३४।५) । इस लिए आवश्यकता इस बात की है कि हम थण्डे दिमाग से महर्षि के विचार धारा मनन पूर्वक सोचें और उनके बताये हुए मार्ग में चले तभी भारतवर्ष का कल्याण होगा नहीं तो कभी नहीं ।

काश कि यदि हमे महर्षि दयानन्द के मार्ग पर चलते होते तो आज हमारे सामने पाकिस्तान को जन्म नहीं देते और हमारे सामने अरब के बाजारो में हमारी मा, बहु, बेटी दो दो आने में बिक्री नहीं होते । पर वह साम्प्रदायिक हलाहल विष आज भी नहीं गया है । आज तो और भी तेज हो गया है । इसी कारण प्रतिदिन नागालैण्ड, निजोलैंड, सिखस्तान, ईसाईस्तान, झारखण्डस्तान का मांग उठ रहा है रोग बढता ही जा रहा है । अब डाक्टर का वस की बात नहीं है । आज देश को स्वतंत्र हुए ३० वर्ष हो गया, देश अभीतक अपने पैरों पर खड़ा हो नहीं सका । प्रति वर्ष हम अखबारों में पढते हैं वहां पर साम्प्रदायिक गण्डोगोल हुआ तो, वहां पर इतना मारे गये, तो अमूक स्थान पर भाषा के आधार पर झगडे हुए तो अलीगढ़ में गुण्डों ने लडकियों के अपहरण किये । यह क्यों हो रहा है? इस देश में साम्प्रदाय कौन कौन है? उनमें किसकी संख्या अल्प और किसकी अधिक? बहुसंख्यक दंगे करता है अथवा अल्प संख्यक समुदाय? साथ ही इन दंगों को रोकने के लिये सरकारी तौर पर अथवा गैर सरकारी तौर पर क्या किया गया? अल्प संख्यकों को पर्याप्त भाग देना है अथवा कुछ अन्य करना है? इसका निदान क्या होना चाहिए? इसका उत्पति कहां से हुई? महर्षि ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में अच्छे चिकित्सक के तरह भारतवासियों को उनका निदान बताये है । अब उसी निदान को हम नीचे लिखेंगे ।

— क्रमशः —

मानव शरीर में ग्रन्थियों

व चक्रों का चमत्कार

शास्त्री श्री देवेन्द्र प्रसाद "सावित्रेय"

Bsc. धर्मरत्नश्चविशारदः शास्त्री (गो०) B. A. L. L. B.
वेदानुसंधाताश्च वेदोपदेशकः आर्य समाज मंदिर,
स्वामी श्रद्धानंद रोड़, राँची- १

"योगेन शान्ति विन्दति"

महाभारत

मानव शरीर में कुछ ऐसे ग्रन्थियाँ है, जिनका जीवन से अद्भुत और विचित्र सम्बन्ध है। उदाहरण स्वरुप वंशानुक्रम और गुणसूत्र (क्रोमोसोम) सम्बन्धी कई एक गुण अपनी पीढियों में आ जाया करती हैं। इनका मूल उद्गम कहाँ है? और जीवन से क्या सम्बन्ध है? शरीर के ऊपर क्या प्रभाव डालता है? इसकी खोज की जाय तो पता चलेगा कि यह रासायनिक दूत (हरमोन्स) ही हैं, जो एक से एक प्रकार के अद्भुत अवतरण पीढियों में करते हैं। ये रासायनिक दूत डक्टलेश ग्लैंड में बनतें हैं।

इस प्रकार रासायनिक दूत को दो खण्डो में विभक्त किया जा सकता है :- (i) सरकुलेटिन्ग हारमोनन्स (Circulating hormones) : – ये अन्त श्रावी ग्रन्थियों में बनते हैं। लेकिन यह जरुरी नहीं है कि सभी अङ्गो को प्रभावित करे।

(ii) डिफ्यूजिग हारमोन्स (Diffusing hormones) यह उत्तक में बनते हैं तथा प्रसरण (Diffusion) द्वारा ऊत्तकों को प्रभावित करते हैं।

शिकागो विश्वविद्यालय के एन्क्रोपोलो जो विभाग के प्रोफेसर डोरसेव ने तिल्ली के द्वारा होनेवाले स्रावों की पाचन-तंत्र का अति महत्वपूर्ण आधार माना है । ये आमाशय और आँतों की सुव्यवस्था से लेकर अन्य गड़वडी तक तिल्ली के स्रावों को महत्व देते हैं । साथ ही साथ यह भी कहते हैं कि भोजन सम्बन्धी रुचि एवं तृप्ति की प्रवृत्ति का भी उन्हीं रसो से सम्बन्धित है । शरीर शास्त्री इन जादूई ग्रन्थियों के स्वरुप, क्रिया कलाप एवं आधार को समझने में दत्तचित्त से संलग्न हैं । मोटा मोटी जो जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं वे इस प्रकार हैं :—अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के मुख्य सात भेद है, जो इस प्रकार हैं

(i) Pituitary or Thyroid
(ii)Parathyroid, iii) Thymus, (iv) Spleen, (v) Adrenal, (vi) Ganats, (vii) Pineal,

(१) थाईराइड :- यह गला में स्थित होता है । दिमाग का संतुलन एवं स्वभाव का निर्माण करना, भावना तथा व्यक्तित्व का विकास भी उसी पर निर्भर है । उत्साह एवं आलस्य का यही केंद्र है । यहाँ थोड़ी सी भी उत्तेजना बढ जाने से मनुष्य अधीर, उत्तेजित (Excited) वकवादी, (Talkative) एवं अशांत हो जाता हे । सम्भव है पागल भी हो सकता है ।

(२) पाराथाइरोइड :— इसका सम्बंध स्नायु- संस्थान से निकट है इस के मुख्य काम हैं:— (अ) टूटी हुई कोशिकाओं का पुनर्निर्माण करना (Formation of Cells). (ब) स्नायु-तंत्रों का गठन, (स) स्फुर्तिं, रोग निरोधी क्षमा का भण्ड़ार इसी केंद्र में भरा हुआ है ।

(३) थाइमस :— थाइमस बक्ष स्थल की ऊपरी भाग में होता है । गर्भस्थ स्थिति में विकास करने की क्षमता इसी में होती है । यदि यह अविकसित रह जाय तो

भ्रूण (Embryo) [illegible] नहीं रहेगा । [illegible] से लेकर किशोरावस्था और यौवन के द्वार तक पहुंचा देना इसी का जिम्मेंदारी है । संक्षेप में इसे विकास ग्रंथि भी कह सकते हैं ।

(४) स्प्लीन :— तिल्ली ग्रंथि शृंखला में सब से बड़ी है । पाचन संस्थान की बलिष्ठता और रक्त शुद्धि का काम इस पर ही निर्भर करता है । सूक्ष्म शरीर को व्यवस्थित सूर्यचक्र से इस ग्रंथि का बहुत बड़ा सम्बंध है । इसी लिये अंतर्ग्राहीय प्रभावों को शरीर एवं मस्तिष्क तक पहुंचाने में इस ग्रंथि का बहुत बड़ा हाथ है ।

(५) एडरीनल :—गुदा के ठीक ऊपर एडरीनल है । ग्रंथि का दूसरा नाम सुपररीनल भी है । यह सेम की ीज के आकार की होती है । नारीत्व एवं पुरुषत्व की अनेकानेक विशेषतायें यही से विकसित होती है । आपत्ति के समय उचित समाधान ढूढ़ँने एवं साहसिक कदम बड़ाने की प्रेरणा यहीं से होती है । मानों वीरता और कायरता इसी उद्गम की उपज हो, लैंगिक परिवर्त्तन (Sexual change) की जो घटनायें होती रहती हैं, उसमें इसी ग्रंथि के स्रावो की उल्टी-पुलटी करतूतें झाँकती रहती हैं ।

(६) गौनैरस अथवा लैंगिक अंग :— यह प्रजनन शक्ति एवं जननेंद्रिय की हलचलों की क्षमता को नियंत्रण करती है । नारी यौवन और पुरुष यौवन के विशेषतया प्रजनन सम्वंधी यौवन का इसी से सम्बंध रहता है । जरावस्था में शरीर बहुत ही शिथिल हो जाता है एवं इंद्रियाँ नाकामयाब हो जाती हैं । परंतु कई-एक आश्चर्य-पूर्ण घटनाये आँखों से देखने को मिलती है कि शताधिक आयु वाले व्यक्ति भी नवयुवकों की ही तरह प्रजनन क्रिया कुशल पूर्वक करते रहते हैं । यह गौनैरस ग्रंथियों के सशक्त एवं मजबूत बने रहने के कारण होते हैं ।

(१) पिनियल :—पिन की नोक के बराबर पिनियल ग्रंथि

मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास से सम्बंधित्त है । सुविस्तृत स्थूल तथा सूक्ष्म जगत् की विभिन्न हलचलों के साथ इसी केंद्र के माध्यम से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है ।

बहिरंग जीवन और अतरंग जीवन (Inter and external life) के बीच की कड़ी यही है । योग दर्शनों की भाषा में यह कहा जा सकता है कि मानवों के पूर्वजों में यह सुविकसित था और इसे "तृतीय नेत्र" कह कर पुकारा जाता था । दिव्य ज्योति और ईश्वरीय प्रकाश को उत्पन्न करने तथा ग्रहण करने कार्य इन्हीं से होता है । योगियों और सिद्ध पुरुषों के कथनानुसार दिव्य ज्योति को तीन स्थलों में मन को एकाग्र कर समाधिस्थ अवस्था में प्राप्त किया जा सकता है । वह है हृदय, आज्ञाचक्र और ब्रह्मरंध्र या चक्र । जो कि आधुनिक मानव मात्र में छिन्न (Reduced) हो गया है या अक्रियाशील (Inactive) हो गया है, क्योंकि आज इसे काम में न लाया जा रहा है ।

ग्रंथि नाक की जड़ के पीछे अवस्थित है । प्रेम सम्बंधी आत्म-नियंत्रण, बुद्धि की तीव्रता उत्साह इत्यादि इसका मुख्य काम है । लम्बा होना या बौना पन होना इसी की विकृति का सम्बंध है । नारीत्व और पुरुषत्व के दिशा परिवर्त्तन का मार्ग यहीं से प्रारम्भ होता है । नव यौवन के चढ़ाव उतार तथा प्रजनन सम्बंधी गतिविधियों का सम्पर्क इसी केन्द्र से है ।

अभी तक इन ग्रन्थियों के विषय में जो खोज हुए हैं वे प्रारम्भिक ही हैं एवं उनसे रासायनिक दूत स्राव होता है । इसकी भी जानकारी थोड़ी ही है । इसका मन एवं शरीर पर प्रभाव देखकर शरीर विज्ञान-वेत्ता आश्चर्य चकित हैं । हारमोन स्रावों के जब से जानकारी प्राप्त हुए हैं, तब से यह समझा जा रहा है कि आंतरिक रोग होने में मुख्य रूप से इसका भी हाथ है । यानि शरीर वृक्ष की जडें तो अन्तः स्रावी ग्रंथियों में गहराई तक घुसी बैठी है ।

यहीं नहीं, शरीर की सुदृढ़ता सुन्दरता, स्फूर्त्ति, इंद्रिय क्षमता से लेकर रोग निरोधक शक्ति तक के अच्छे-बुरे पक्षवाले अब सम्बंध अवयवों की स्थिति पर निर्भर नहीं माने जाते हैं लेकिन यह समझा जाता है कि रासायनिक दूतों के तत्वों का बहुत ही बड़ा हाथ है जो उस भली-बुरी स्थिति को पैदा कर रहता है ।

यही बात मानसिक स्थिति के विषय में है। तीव्र-बुद्धि दूरदर्शी, अदूरदर्शी, मस्तिष्कीय स्थिति मानव मात्र के अत्यन्त ही प्रयास करने पर भी जब सफलता नहीं प्राप्त हुए तो यही अन्दाज लगाया जाता है कि न केवल भीतर की वरन् मनकी हालत के सम्बंध में भी मनुष्यों के प्रयास सीमित परिमाण उपस्थिति करता है ।

कुछ लोगों को कहना है कि रासायनिक दूतो के सम्बंध चरित्र एवं स्वभाव से भी है। प्राणियों के हारमोन्स इनजेक्सन द्वारा रोगी शरीरों में पहुंचाने के प्रयत्न भी चल रहे हैं तथा एक की ग्रंथि दूसरे में फिट करने का कोशिश किया गया है पर उससे भी कुछ काम नहीं चला और उस दिशा में निराशा हुआ है तथा अभी कार्य शिथिल है ।

योगदर्शन में षड्चक्र विज्ञान के विषय में जानकारी प्राप्त होती है । इन ग्रंथियों के मार्मिक रहस्य को जानने के लिए हमें इन छह चक्रों को जानना होगा ।

इन्हीं चक्रों से अदृश्य अंतरिक्ष एवं विभिन्न शक्तियों के साथ मानवी सत्ता का सम्बंध बतलाया है । इन्हीं छह चक्रों के प्रभावों को अंतः स्रावी ग्रंथियाँ ग्रहण करती है एवं अपनी गति विधियाँ अपनाती हैं ।

इस प्रसंग में यह भी कहा जा सकता है कुण्डलिनी जागरण की क्रिया में इन छह चक्रों को वेधने का विधान

हैं। इस स्थूल विज्ञान अर्थात् 'अपरा-विद्या' के आधार पर इन ग्रंथियों का सम्बंध उनके साथ इस प्रकार स्थापित किया जा सकता है कि आध्यात्मिक साधनायें मनुष्यों के व्यक्तित्व के साथ अनेकानेक उतार चढावो को संतुलित करने तथा प्रगती के अवरुद्ध पथ को प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण मदद कर सकती है।

षड चक्रों के विकास परिष्कार के साथ अंतः स्रावी ग्रंथियों का नियंत्रण एवं संतुलन भी किस प्रकार से संभव हो सकता है? इस गूंथि को समुचित रुप से समझाने के लिये प्रायौगिक रुप से 'योग साधना में प्रवृत हो कर गहराई तक प्रवेश का एवं उतरने की जरुरत है।

ओ३म्

● शान्ति देवी मन्त्रिणी महिला
आर्य समाज नामनेर
आगरा-१

प्रभू ने क्या सुन्दर संसार का निर्माण किया है। अनेक जीव जन्तु पशु पक्षी प्राणी बनाये जिनमे सबसे उत्तम मनुष्य को बनाया। संसार की प्रत्येक वस्तु मनुष्य के लिये बनाई। अगर वह उनका सही उपयोग करे तो उसके लिये सारी वस्तुएं लाभ दायक है।

सारी योनियां भोग योनियां हैं। एक मनुष्य योनी ऐसी है जिसमें कर्म करने की स्वतंत्रता हैं। प्रभू की प्रार्थना उपासना करने का ज्ञान है। पशुओं पक्षियों को यह ज्ञान नहीं, उन्हें तो बस अपने स्वार्थ का ज्ञान है। मनुष्य को ईश्वर ने बुद्धि प्रदान की है यह उसकी कितनी बड़ी दया है। जो मनुष्य इस बुद्धि का ठीक तरह उपयोग करते हैं। उनका यह लोक ही नहीं पर लोक भी सुधर जाता है।

सबसे बडी दया उस महान प्रभू की यह है कि उसने मनुष्य के लिये वेदों का ज्ञान दिया। वेद अपोरुषेय हैं। वेदों को ईश्वर ने मनुष्य के लिये बनाया है। जिससे ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य उन्नति करता है।

महिलाओं को भी वेद रुपि ज्ञान पाने का अधिकार है। यह वेद में जगह जगह पर आया है। सब स्त्री-पुरुष उसके समान पुत्र-पुत्रियों हैं पुरानी बात हो गई जब स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं बताते थे। अब तो महिलाये बहुत अग्रसर हो रही हैं।

सबसे उत्तम काम महिलाओं के ही हिस्से में आया है, वह है मनुष्य का निर्माण करना। वह जैसा चाहें मनुष्य को बना सकती है। वह निर्मात्री है। पुरानी प्रसिद्ध कथा है कि एक रानी ने अपने तीन पुत्रों को जन्म से ही नहीं गर्भ से ही ज्ञान दे दे कर सन्यासी बना दिया। वे राज्य छोड़ कर वन को तपस्या करने चले गये। तब चौथे पुत्र के लिये राजा ने अनुरोध किया कि 'इस राज्य को कौन संभालेगा' तब रानी ने राज्य की शिक्षा दे दे कर राज करने योग्य बना दिया वह राज्य करने लगा। आजकल स्थिति अधिक शोचनीय हो गई है। पुरानी बाते कपोल कल्पना सी लगती है क्योंकि महिलाये अधिक तृष्णाओ में फंस गई हैं। उद्धार भी इन्हीं से होगा पुरुष नहीं कर सकते। इन्हो को जागना पडेगा। इन्ही को वेदों के अनुसार आचरण बनाना होगा, तभी जागृती हो सकती है। एक दम सब कुछ नहीं हो सकेगा। धीरे धीरे ही भोग स्थल से योग स्थल की ओर बढना होगा। उसके लिए अपनी दिन चर्या बदल कर इस प्रकार बनानी होगी, जिससे समय व्यर्थ न जावे और सही सही समय का उपयोग होता रहे। जीवन भी उन्नति पथ पर चलता रहे। अगला जीवन ही नही अगला दिन ही पिछला दिन से उन्नत हो। इसके लिये पांच 'स' उपयुक्त है। १- समाज, २- सत्संग, ३- स्वाध्याय, ४- समानता, ५- संध्या।

१- समाज से अभिप्राय केवल आर्य समाज से ही नहीं। वैसे वहां भी बड़ी उत्तम धर्म ईश्वर की चर्चा होती है और मिल कर इकट्ठे भी बैठने को ही समाज कहते हैं। वह कहीं पर भी घरों में बाहिरों से चल सकता है। उसमे अपने और सुझाव सभी दे सकती हैं। ईश्वर गुन गान या कोई शिक्षा प्रद पुस्तक पढी जा सकती है।

२- इसी को सत्संग भी कह सकते हैं । अगर हो सके तो किसी विद्वान महात्मा आदि का भाषण या उपदेश भी करा सकती हैं । सप्ताह में १ दिन निश्चय करके वारी वारी से आयोजन हो सकता है । इसमे भी धार्मिक वातावरण रहना चाहिये ।

३- अपने घर पर ही प्रतिदिन स्वाध्याय करने का नियम वना लेना चाहिये । सबसे अच्छा समय संध्या, उपासना करने के वाद का होता है क्योंकि उस समय मन में सत्वगुण की अधिकता रहती है जो कुछ उस समय पढा जायेगा, वह अधिक प्रभाव कारी होगा स्वाध्याय भी उत्तम ग्रन्थों का करना चाहिये । अखवार, कहानी आदि स्वाध्याय की कोटि में नहीं आते । ठीक है अखवार भी पढने चाहिये लेकिन इस समय नहीं, इस समय तो धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय लाभ दायक है । आर्य साहित्य इस विषय में अधिक शिक्षा पृद व प्रेरणा दायक है। इसमे भ्रांति नहीं होगी ।

४- समानता से अभिप्राय है सवके साथ हिल मिल कर रहना । छोटे गरीव और अमीर के साथ मिल कर वैठना । सबको अपना समझना । हर किसी के दुःख दर्द में शामिल होना । छोटे वडे का विचार छोडना । और वरावर वालों में धर्म चर्चा व विवादे करना। विनोद हंसी आदि भी जीवन में आवश्यक है और स्वास्थ्य के लिये जरुरी । विना स्वास्थ्य शरीर के तो दुनियां ने जीवन भी भार रुप हो जाता है । स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मन व वुद्धि रहते हैं ।

५- संध्या के अन्दर प्रभु की प्रार्थना, उपासना, प्राणायम यज्ञ, दान, तप सब ही आ जाते है । जीवन को उन्नत बनाने के लिये ये सभी अनिवार्य है प्रतिदिन इनका पालन होना

चाहिये । नित्य प्रभु के गुन गान करना जिसने यह सबसे उत्तम मनुष्य शरीर दिया । अब और भी उत्तम कर्म करके देवी की पदवी प्राप्त करें और उस ईश्वर को धन्यवाद करें । जिससे कृतघ्न न कहलायें । और हमारे इन गुण कर्मों से घर में बच्चों को प्रेरणा मिलेगी उनके साथ मिल बैठ कर यज्ञ प्रार्थना, भजन बोलने चाहिये । जिससे उनपर भी अच्छे संस्कार पडे । बचपन की शिक्षा कभी नहीं भूलती है । बच्चों को धर्म का व ईश्वर का स्वरुप बताना माता का प्रथम कर्तव्य है आजकल के बच्चों को ऐसी शिक्षा घर में न मिलने से वे गलत रास्ते पर चल पडते हैं । भगवान महिलाओं को सुबुद्धि दे ।

अपील

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल डी० ४५।१२६
नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी का अपील

महोदय !

आपको ज्ञात कर प्रसन्नता होगी कि मातृ मंदिर के नव भवन निर्माण का नक्शा पास हो गया है। हमारे मार्ग में से एक बड़ी बाधा ईश कृपा से सब दूर हो गई है। अब हम भवन निर्माण आरम्भ कर रहे है।

आपको यह भी विदित है कि वाराणसी व आस पास के क्षेत्र में आर्य समाज का कार्य अति शिथिल है। हमने इसी दृष्टि से वाराणसी को अपना कार्य केन्द्र बनाया है कि इस प्रदेश में आर्यसमाज के पौधे को पल्लवित करें। इसमें हमें आपके सहयोग की परम आवश्यकता है। आपके सहयोग के बिना हम सफल नहीं हो सकेगें। अतः विनम्र अनुरोध है कि आप स्वयं, व अपने समाज से कम से कम एक कमरा बनवा कर मातृ मंदिर व उसकी छात्राओं के विकास में अपना पावन सहयोग देकर कृतज्ञ करें।

सैकड़ों बालिकाएं मातृ [illegible] के भवन निर्माण की प्रतीक्षा में बैठी हैं। आप के पवित्र सहयोग से उन को यहां की पूर्ण वैदिक शिक्षा से लाभान्वित होने का अवसर मिलेगा और उन में से कई एक आर्यसमाज व वेद प्रचार में अपना सर्वस्व भी लगा दे सकती है। मातृ मंदिर के हात मजबूत करने का अर्थ है आर्यसमाज की नींव को मजबूत करना।

केवल मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल ऐसी योजनाएं क्रियात्मक रूप में लेकर चल रहा है जिन से आर्यसमाज युग की मांग को पूरा करने में सहाय होगा । अतः आप हमारी समास्याओं के निराकरण में सबसे पहले ध्यान दें, यह आर्यसमाज के हित की दृष्टि से अनुरोध है ।

इस समय आर्यसमाज में कई एक ऐसे छद्म वेशी व्यक्ति प्रविष्ट हो गए हैं, जो अपने स्वार्थपूर्ति के लिये आर्यसमाज का अहित करने में रत्ती भर भी संकोच नहीं करते । ऐसे व्यक्तियों से समाज के पवित्र क्षेत्र की शुद्धि होनी आवश्यक है, पर यह तभी संभव होगी जब कि मातृ मंदिर जैसे निरीह निष्काम संस्थाओं के पथ की बाधाओं को दूर कर उन्हें ऐसे व्यक्तित्व निर्माण में समर्थ बना दिया जाय जो कि विशुद्ध रूप से ऋषि दयानन्द के बताए मार्ग पर चलने वाले हों ।

आशा है आप का पूर्ण सहयोग हमे शिघ्र ही मिलेगा, और आप भवन निर्माण की दिशा में अबिलंब राशि भेज कर कृतज्ञ करेंगे । कमरे पर आपकी इच्छानुसार दानदाता का नाम व परिचय अंकित रहेगा । कृपया पत्रोतर देकर अनुगृहीत करें । सधन्यवाद,

अध्यक्षा

मातृ मन्दिर

डी० ४५/१२६, नई बस्ती
रामापुरा, वाराणसी

समाचार-दर्शन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान पद्म भूषण श्रीसूरजभानू जी निर्वाचित

नई दिल्ली, मई १९७७

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के आज सम्पन्न हुए साधारण वार्षिक अधिवेशन में पंजाब विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति पद्म भूषण श्री सूरजभानू जी सर्व सम्मति से प्रधान निर्वाचित किए गए। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल जम्मू काश्मीर तथा दिल्ली के लगभग ६०० प्रतिनिधियों ने हर्ष ध्वनि तथा तालियों की गडगड़ाहट के मध्य उन्हें प्रधान घोषित किया तथा अन्य पदाधिकारी एवं कार्य समिति के संगठन का अधिकार भी उन्हें दे दिया। श्री सूरजभानू जी देश भर में चल रही २०० डी० ए० वी० स्कूल तथा कालेजो की सर्वोच्च संस्था डी०ए०वी० कालिज मेनेजिंग कमेटी के भी गत ३ वर्षों से प्रधान हैं।

९० वर्ष पूर्व त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी द्वारा स्थापित आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-काश्मीर, दिल्ली तथा महाराष्ट्र स्थित लगभग ९५० आर्य समाजों द्वारा निरन्तर समाज सेवा तथा वैदिक सिद्धांतों के प्रचार कार्य में संलग्न हैं। विभाजन से पूर्व भी प्रादेशिक सभा ने 'स्वतंत्रता संग्राम' में उल्लेखनीय भूमिका निभायी थी ला० लाजपतराय, महात्मा आनन्द स्वामी, प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० जी० एल० दत्त आदि विद्वान प्रादेशिक सभा के पूर्व प्रधान रह चुके है।

– प्रचार विभाग

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा दिल्ली के वर्ष १९७७-७८ हेतु अंतरंग सदस्य तथा अधिकारी

प्रधान-	श्री दरबारी लाल
उप प्रधान-	श्री रतनचंद्र सूद
,,	श्री मोहन लाल
,,	श्री शांति प्रकाश बहल
मंत्री	श्री गिरीशचंद्र खोसला
उप मंत्री-	श्री रामधन मुँजाल
वेद प्रचारक उप मंत्री-	श्री राज कुमार सेठ
कोषाध्यक्ष-	प्रिंसिपल तिलक राज गुप्ता

अन्तरंग-सदस्य

१- श्री खेमचन्द्र मेहता
२- श्री ईश्वरचंद्र आर्य
३- श्री कृष्णचंद्र रल्हन
४- श्री पृथ्वीराज शास्त्री
५- श्री रामनाथ सहगल
६- श्री रामशरण दास आहूजा
७- श्री तिलकराज कोहली
८- श्री विश्वमित्र चड्ढा
९- श्री राम शरणदास आर्य
१०- श्री दुर्गादास आर्य गजट
११- श्री सुदेश कुमार
१२- श्री चमन लाल
१३- श्री दयाराम शास्त्री
१४- श्री जे० एन० चौधरी
१५- श्री बलराम आर्य
१६- श्री नंद किशोर भाटिया
१७- श्री मलावाराम (तिहाड़)
१८- श्री सुदर्शन (तिहाड़)
१९- श्री उत्तमचंद्र (सरायरुहेला)
२०- श्री हरीवंश जी (लारेन्स रोड)
२१- श्री भूदेव (जे०जे० कालोनी)
२२- श्री देवी दयाल (त्रिनगर)
२३- श्री मंत्री जी (अशोकनगर)
२४- श्री मंत्री जी (दरियागंज)
२५- श्री बलदेवराज जिन्दल
२६- श्री आर० सी० गौतम

प्रतिष्ठित सदस्य

१- श्री मुलखराज भल्ला
२- श्री कर्मचन्द महाजन
३- श्री शांति नारायण
४- श्री जी० पी० चोपड़ा
५- श्री चम्पतराय अग्रवाल
६- श्री चंद्र मोहन आर्य
७- श्री ओमप्रकाश गोयल
८- श्री देवेन्द्र जी लाल

नशाबन्दी एवं गौवंश संरक्षण दिवस मनाए जाय

नई दिल्ली ११ जुलाई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग बैठक दयानंद भवन रामलीला मैदान में संपन्न हुई। इस में भारत के विभिन्न प्रान्तो के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सभा मंत्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने विगत तीन मास के कार्य की रिपोर्ट प्रस्तुत की। सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि आगामी चार सितम्बर और ११ सितम्बर को अखिल भारतीय स्तर पर क्रमशः नशाबन्दी दिवस एवं गौवंश संरक्षण दिवस मनाए जाए। सभा कार्यालय ने लगभग देश भर के चार हजार आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं को परिपत्र भेजकर आदेश दिया है कि चार सितम्बर को देश भर में संपूर्ण नशाबन्दी लागू करने के लिये आंदोलन किया जाय। उस दिन सार्वजनिक सभाएं करके शराब की दुकानों पर आंशिक धरने दिए जाए और प्रस्ताव पास करके केन्द्रीय स्वराज्य सरकारों को भेजे जाय।

११ सितम्बर को गोवंश संरक्षण दिवस

सभा ने एक विस्तृत कार्यक्रम के अनुसार प्रस्ताव पारित किया है। आगामी ११ सितम्बर रविवार को सारे देश में गोवंश संरक्षण दिवस मनाया जाय और केन्द्र सरकार से अनुरोध किया जाय कि लोकसभा में पूर्ण गोवंश संरक्षण का प्रस्ताव पारित कर के जनता सरकार अपने संकल्प को शीघ्र पूरा करे।

इस सभा की अध्यक्षता श्री राम गोपाल जी वानप्रस्थ ने की।

—: प्रचार विभाग :—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

नई दिल्ली- ११०००२

आर्य समाज सांताक्रुज के अधिकारियों का

१-५-७७ को

निम्नप्रकार चुनाव हुआ ।

प्रधान-	श्री नवीन चंद्र पाल
उप-प्रधान	श्री इन्द्रवल मलहोत्रा
उप-प्रधान	श्री भीष्म देव नागिया
महामन्त्री	श्री विमल स्वरुप सूद
मन्त्री	श्री महेन्द्र कुमार चाठली
मन्त्री	श्री कस्तूरी लाल मदान
कोषाध्यक्ष	श्री प्रकाशचन्द्र मून्ना

मन्त्री

आर्य समाज सान्ताक्रुज

बम्बई (पश्चिम)

४०००५४

प्रवेश आरम्भ

श्रीमद्-दयानन्द उपदेशक विद्यालय वैदिक साधन आश्रम निकट शादीपुर यमुना नगर अम्बाला में प्रवेश आरम्भ है। न्यूनतम योग्यता आठवीं पास है। प्रवेशार्थी व्यवस्था संबधी जान कारी हेतु प्रधानाचार्य जी से पत्र व्यवहार करें।

प्रधानाचार्य

श्रीमद्-दयानन्द उपदेशक महा विद्यालय

निकट शादीपुर यमुना नगर, अम्बला

ह रि या णा

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी सुप्रसिद्ध विद्यानगरी काशी में कन्याओं के लिये विद्या, सदाचार निर्माण का अपने ढंग का एक ही है।

यहाँ पर आधुनिक व प्राचीन शिक्षा प्रणालियों की शिक्षा के साथ कन्याओं की सर्वाङ्गिण उन्नति का पूर्ण लक्ष्य रखा जाता है। यहाँ बालिकाओं को पूर्ण वात्सल्य मिलता है, भोजन शुद्ध, स्वास्थ्य वर्द्धक होता है।

यहाँ पर वेद, अष्टाध्यायी, गणित, भूगोल, इतिहास, गृहशिक्षा, संगीत, अंग्रेजी आदि का शिक्षण होता है तथा शिशु श्रेणी से लेकर आचार्य. पी० एच्० डी० तक की व्यवस्था है।

यहाँ पर छात्राओं को २५) रूपये से १२५) रुपये तक की छात्र वृत्तियां दी जाती है। स्नातिका बनने पर वे प्राध्यापिका, प्रिंसिपल, विभागाध्यक्षा, आश्रम संचालिका आदि बन सकेगी, विदेश भ्रमण, तथा विदेश में अध्ययन की भी सुविधायें हैं।

अतः यही स्नातिकाओं के उज्वल भविष्यत् की गारंटी है।

डा. पुष्पावती एम. ए. पी. एच. डी.
अध्यक्षा
मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल

With best Compliments From:-

ORIENT PAPER MILLS

★ Ltd.

Brajrajnagar

Sambalpur

ORISSA, INDIA

With best Compliments from

ORISSA INDUSTRIES LIMITED

Latkata Works

ROURKELA-4

(Regd. Office : P. O. BARANG, Cuttack)

प्रकाशक— स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा शान्ति आश्रम प्रेस, गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास, राउरकेला - ४ में मुद्रित ॥

ओ३म्

★ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ★

वनवासी सांस्कृतिक समिति, वेदव्यासस्य,
मासिकं मुख-पत्रम्

वनवासी संदेश

संस्थापक :—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

●

—: वेद कहता है :—

ओ३म् प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ॥

ऋग्वेद १० । १०३ । १३

हे आर्यवीरों ! देश और राष्ट्र की रक्षा हेतु तन्द्रा त्याग उठ कर अग्रगामी बनो । शत्रुओं पर विजय प्राप्त करो । तुम्हारी भुजाएँ प्रचण्ड पराक्रम से भर उठें, जिस से तुम कभी जीते न जा सको ।

●

संपादक
पं० आत्मानन्द शास्त्री

सह-संपादक
पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति

नीति वचन

१- न मद्यं पिबेत् ॥

कभी भूल कर भी मादक द्रव्यों का सेवन नही करना चाहिये ।

२- पंचविंशति वर्षं यावत् क्रीड़ा विद्यां व्यसनात कुर्यात ॥

मानव जीवन के आरम्भिक २५ वर्ष शरीर एवं मस्तिष्क के निर्माण के निमित्त व्यायाम एवं विद्योपार्जन में पूर्ण मनोयोग के साथ लगाने चाहिये ।

३- अत उत्तरमर्थार्जनम् ॥

२५ वर्ष की आयु के उपरांत परिवार एवं राष्ट्र की उन्नति के हित अर्थ अर्थात् धनादि के उपार्जन में लगना चाहिये ।

४- नष्टे न स्थातव्यम् ॥

जो मानव आचार-विचार की दृष्टि से पतित हैं अर्थात् जिन्होंने अपनी मानवता को ही नष्ट कर दिया है, उनके साथ कभी सम्पर्क नहीं रखना चाहिये ।

५- अल्पहानिः सोढ़व्या ॥

यदि राष्ट्र के लिये हानि सहन करना अनिवार्य ही हो जाय तो अपेक्षाकृत छोटी हानि सह लेनी चाहिये ।

वनवासी–सन्देश

उत्कल जनता संस्कृति रक्षा वद्धकटिस्तमः स्तोमहृतिदेशः
गुरुकुल सुपानपोषादुदयति वनवासी संदेशः ॥
यो भ्रष्ट ख्रीष्टमत दीक्षित मज्ञलोकम्
संस्कृत्य दूरयति तद्धृदयांधकारम ॥
श्री वेदव्यास सुगुरो कुल सन्निवेशः
सम्पूर्वादेरुदयते वनवासी सन्देशः ॥

वर्ष ११ अंक ८	अगस्त १९७७	वार्षिक मूल्य ५ रु एक प्रति ५० पैसे

वेदोपदेश

ओ३म् अयं कविरकविषु प्रचेता
मर्त्येष्वग्निरमृतो निधायि ।
स मानो अत्र जुहुरः सहस्व
सदा त्वे सुमनसः स्याम ॥

ऋग्वेद ७।४।४।

अर्थ :– (अयं) यह (प्रचेताः अग्निः) चेतन अग्नि (अकविषुकविः) इन अकवियों में कवि हो कर (मर्त्येषु अमृतः) इन मरने वालों में अमृत होकर (निधायि) निहित है रखा हुआ है। (सहस्वः) हे बल तेज शान्ति वाले (सः) वह तू (नः अत्र मा जुहुरः) हमें इस संसार में कभी विनष्ट मत कर, किन्तु हम (सदा) सर्वदा (त्वे) तुझ में (सेमनसः) अच्छे मन वाले, प्रसन्नता पाने वाले (स्याम) बने रहें ।

भावार्थ :- मनुष्य अपने को ज्ञानी समझता है, कवि समझता है, परन्तु इस विश्व में यही आती है कि जो व्यक्ति जितना अधिक अज्ञान में डूबा रहता है, वह अपने को उतना ही बड़ा ज्ञानी मानता है, और जिसे जितना ज्ञान प्राप्त हो जाता है, वह उतना ही अपने को अज्ञानी मानने लगता है। जर्मनी के अपने समय के सब से बडे ज्ञानी ने अपने ज्ञान की प्रशंसा दूसरों के मुख से सुन कर कहा कि "मैं तो लहराते हुए इस ज्ञान के समुद्र के किनारे खड़ा हूँ और अभी तो किनारे खड़ा कंकर ही बटोर रहा हूँ।" उपनिषदों ने ज्ञान के विषय में "नेति नेति" इतना ही नही कह कर ज्ञान की अगाध होने की सूचना दी है और भर्तृहरि जी ने इसे इन शब्दों में कहा है कि जब मैं कुछ नहीं जानता था, तब अपने को सर्वज्ञ समझता था, जब मुझे कुछ ज्ञान हुआ तो यह भाव हुआ कि मुझे कुछ आता है, परन्तु ज्यों ज्यों ज्ञान बढ़ता गया, त्यों त्यों मुझे यह प्रतीत होने लगा कि मैं कुछ नहीं जानता हूँ। वास्तव में विश्व में यदि कोई ज्ञानी है, सर्वज्ञ है तो वह भगवान् है और वह भगवान् हम अज्ञानियों में बसा हुआ है। हम अकवियों में वह कवि निरन्तर निवास करता है। वह कभी मरता नहीं। यह विशाल सूर्य समाप्त हो जाएगा। ऐसे करोड़ों सूर्य भी जिनके सामने बून्द के बराबर है, ऐसे ये आकाश में चमकने वाले अगस्त्य, ज्येष्ठा और परम ज्येष्ठा नक्षत्र नष्ट हो जायेंगे, ये नदियां, ये विशाल समुद्र सूख जायेंगे और भारत का महान प्रहरी यह हिमालय के कण कण में विलीन हो जायेगा। उस समय भी यह प्रभु अपनी कृपा दृष्टि की वर्षा करता हुआ हमें आनन्द प्रदान करेगा। हम उस से ही प्रार्थना करते हैं कि हे बल, तेज और शक्ति के निधान! हमें इस संसार में कभी नष्ट न कर। यह शरीर तो नष्ट होगा, परन्तु हमें अपने गुण दे, जिससे हम अमर बने रहें और सदा तुम्हारे निकट विद्यमान रहें। प्रभु से दूर हटना मृत्यु है, प्रभु के निकट आना जीवन। वह जीवन का स्रोत है, आनन्द का निधान है, अतः प्रभु से प्रार्थना है वह हमें अपने निकट रखें, हमें दूर न रखें।

सम्पादकीय

स्वागत स्वतन्त्रते !

प्रति वर्ष १५ अगस्त को देश में हर्षोल्लास मनाया जाता है। यह तिथि २००४ वि० तदनुसार सन १९४७ ई० से भारत में हर्ष का विषय बनी हुई है। परन्तु जिन्होंने सन् १९४७ की इस तिथि का स्वयंभुव हर्ष देखा है और तदन्तर होने वाले इस तिथि के समारोहों को वर्षानुवर्ष देखने और सुनने का प्रयास किया है, वे हमारे इस कथन की साक्षी भरेंगे कि समय व्यतीत होने के साथ-साथ इस अवसर पर होने वाले हर्षोल्लास गम्भीरता, निराशा और भय में विलीन होता जा रहा है।

तब से लेकर देश का [illegible] विकास हुआ है । इसकी जन-संख्या में भी आशातीत वृद्धि हुई है । देश में भव्य भवन बहु संख्या में दृष्टि गोचर होते हैं, साथ ही देश भर में झोपडियों, खोखों और निवास विहीनों की संख्या में भी अपार वृद्धि हुई है । नगरों के सिनेमा घरों की संख्या और उनमें जाने वाले दर्शकों की संख्या जाननी सुगम नहीं रही । परन्तु इसके साथ ही नगरों में होने वाली चोरियो, डकैतियों, हत्यायों, अपहरणों और बलत्कारों की संख्या में भी कम वृद्धि नहीं हुई है । धनी-मानी लोगों के लिये होटलों में भोजन व्यवस्था पर प्रति व्यक्ति, प्रति समय चालीस-पचास रुपये का व्यय एक साधारण बात समझी जाने लगी है और ऐसे लोगो की संख्या भी कम नहीं हो रही है, जिनको घी, दूध, हरी शाक-भाजी के दर्शन किये वर्षों व्यतीत हो गये हैं । यह सत्य है कि विवाहोत्सवो पर व्यय होंने वाली धन-राशि बहुत बढ़ गयी है । परन्तु साथ ही यह भी सत्य है कि इन उत्सवों में होने वाले आनन्दोल्लास का अनुभव वही नहीं रहा, जो आज से चालीस-पचास वर्ष पूर्व पर वर-वधू सास श्वसुर, भाई-वधुओं अथवा मोहल्ले-टोले के रहने वालों में होता था ।

धन-वैभव और निर्धनता, महल-अटारियों और झुग्गी-झोपडियों तथा होटलों के डिन्नर खाने वालों और सूखी चबाने वालों में ३० वर्ष पहले के अनुपात और वर्तमान अनुपात में अन्तर आया है और अनुपात का यह अन्तर ही १५ अगस्त के समारोहों को देखने वालों के दुःख में विलीन कर निराशा आशंका और भय के लक्षणों में परिवर्तित कर देता है ।

देश-विभाजन से उत्पन्न समस्या आज ३० वर्ष बाद भी विकराल मुख फैलाये विद्यमान है । देश विभाजन का विजा-रोपण हुआ था सन् १९०६ में । इसकी सिंचाई हुई थी, सन् १९१६ एवं २९२० से २४ में । विभाजन रूपी पेड़ के कांटे निकलने लगे थे सन् १९३७ में और ये चुभने लगे थे सन्

१६४० से । सन् १६४७ में इन कांटों का चुभना असह्य हुआ तो हमने विभाजन स्वीकार कर लिया । परन्तु उन काटों को जला कर राख करना तो दूर, उनको हमने रुई में लपेट कर अपनी छाती से लगाये रखा है । उन काँटो का पालन-पोषण भी हमने यत्न से किया और अब वे काँटे पुनः वैसे ही चुभने लगे हैं, जैसे सन् १६४० में चुभने लगे थे । इस बार एक भय की स्थिति यह हो गई है कि उन काटों को अपने राज्य के संरक्षण के साथ-साथ विदेशों से भी पोषक सामग्री मिल रही है ।

भाषा की समस्या दिनानुदिन अधिकाधिक विकट होती जा रही है । स्वराज्य मिलते ही भाषा का प्रश्न सम्मुख आया । यह लगभग निश्चय ही था कि देश की रज्य भाषा शिक्षा का माध्यम और सम्पर्क भाषा हिन्दी होगी, परन्तु इस में इतनी विषमता उत्पन्न की गई कि देश में चौदह भाषायें स्वीकार हो गई । सब-की-सब अपने-अपने क्षेत्र में राज्य भाषा बन रही है । केन्द्र के साथ राज्य अपनी क्षेत्रीय भाषा में पत्र व्यवहार करेंगे, अथवा अंग्रेजी या हिन्दी में करेंगे विश्वविद्यालय क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा देंगे । प्रत्येक हिन्दी भाषी राज्य में अंग्रेजी माध्यम के विश्व विद्यालय भी होंगे । कुछ एक दक्षिणी राज्यों में भी एक आध हिन्दी माध्यम का विश्व विद्यालय होगा ।

इस विषय में भी विद्वानों ने सरकार को सचेत किया था कि भाषा के आधार पर राज्य नहीं बनने चाहिये । परंतु सरकार मानी नहीं और भाषा वार राज्य बना दिये हैं । यह फूट का बीज है । एक राज्य इस विषय में पहले ही बागी हो चुका है ।

देश की आर्थिक उन्नति भी हुई है, परंतु किस कीमत पर और उस उन्नति की दशा क्या है ?

इस समय भारत पर विदेशों का ५० अरब रुपये से ऊपर ऋण हो चुका है । इसका वार्षिक व्याज ३ अरब

लगभग चलता है । देश के भीतर भी सरकार ऋणि है । औद्योगिक उन्नति की दिशा ऐसी है कि हमारा बनाया हुआ सामान देश के अन्दर खप नहीं सकता । इसका कारण यह है कि जन-साधारण उसको खरीद नहीं सकता । विदेशों में भी हम बेच नहीं सकते । समाजवादी सरकार और समाज सदा बडे-बडे उद्योगधन्धे खोलती है । बडे बडे उद्योग-धन्धो में नौकरी करने वालों की संख्या अधिक हो जाती है । परिणाम यह हो जाता है कि पूर्ण देश में अधिकांश लोग नौकरी करने वाले हो जाते हैं । नौकरी करने वाले इस विचार से शूद्र हो जाते हैं कि वे अपन कर्मों के स्वयं उत्तरदायी नहीं रहते । जिस देश में ऐसे शूद्रों की संख्या बढ़ जाये, उस देश में :—

यद्राष्ट्रं शूद्र भूयिष्ठं नास्तिकाक्रान्तमद्विजम् ।
विनश्यत्याशु तत्कृत्स्नं दुर्भिक्षव्याधिपीडितम् ॥

(मनु० ८-२२)

अर्थात् :— जिस राष्ट्र में शूद्र तथा नास्तिक अधिक हो जायें और जहां द्विज कम हो जायें, वह राष्ट्र दुर्भिक्ष एवं व्याधियो से पीडित होकर नाश को प्राप्त होता है ।

आज ३० वर्ष के बाद राष्ट्र क्रांति के कगार पर खड़ा हुआ है । कांग्रेस सरकार के अधपतन के बाद जनता सरकार का प्रादूर्भाव हुआ है एवं जनता सरकार ने ग्राम्य शिल्प तथा कुटिर शिल्प के प्रसार के लिये जोर दे रहा है साथ ही आदिवासी-हरिजनों के उन्नति के लिये योजना बना रहा है· यह स्वागत योग्य है ।

हम आशा करते हैं कि जनता सरकार देश के उन्नति के लिये नगरों की अपेक्षा गांव की और ध्यान देगी । कृषि, क्षुद्र शिल्प तथा सिंचाइ इत्यादि कार्य की और विशेष योजना बना कर कार्य करेगा । भारत के गरीब जनता उत्सुकता से सरकार की और निगाहे लगाये हुए है । देखे आगे क्या होता है । यही आज के स्वतन्त्रता दिवस कह रही हे ।

आयुर्वेद-विश्लेषण

(छः रसों के लक्षण, गुण, पदार्थ)

● धर्मदेव मनीषी
"आयुर्वेदान्वेषक"

छः रसों के लक्षण :—

मधुर रस :— जो रस तुष्टि को उत्पन्न करता है, सुख उत्पन्न करता है, तृप्ति करता है, प्राणों को धारण करता है, मुख को मल से लिप्त करता है और कफ को बढ़ाता है, वह मधुर रस है।

अम्ल रस :— जो रस दाँन्तो में हर्ष उत्पन्न करता है, मुख से लाला का स्राव उत्पन्न करता है, भोजन में श्रद्धा को उत्पन्न करता है, वह अम्ल रस है।

लवण रस :— जो भोजन में रूचि उत्पन्न करता है, कफ का प्रसेक तथा मृदुता का उत्पादक है, वह लवण रस है।

कटु रस :— जो रस जीभ के अगले भाग को पीड़ित करता है, नासिका से स्राव बहाता है, वह कटु रस है।

तिक्त रस : — जो गले में खिंचाव (चूसने की तरह पीड़ा) उत्पन्न करता है, वह तिक्त रस है।

कषाय रस :— जो रस मुख को शुष्क कर देता है, जिह्वा को जड़ बना देता है, गले को रोक देता है, हृदय (आमाशय) को खींचता है और पीड़ित करता है।

छः रसों के गुण :—

मधुर रस के गुण :— रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि मज्जा, ओज, शुक्र, स्तन्य, (दूध स्त्रियों में) बढाने वाला, आँखों वाला तथा शरीर के वर्ण के लिये हितकारी है, बलकारक जोड़ने वाला, रक्त-रस को स्वच्छ करने वाला बालक, वृद्ध और क्षत क्षीण रोगी के लिये हितकारी, भौंरे और चिऊँटियों के लिये प्रियतर, तृष्णा मूर्छा दाह को शांत करने वाला, मन समेत पांचों ज्ञानेन्द्रियों को प्रसन्न करने वाला और कृमियों तथा कफ को उत्पन्न करता है। यह मधुर रस उपर्युक्त गुणों वाला होने पर भी अकेला ह' अधिक मात्रा में सेवन करने से— कास, श्वास, अलसक, वमन, मुख की मधुरता, स्वरभङ्ग, कृमि, गलगण्ड रोगों को एवं अर्बुद, श्लीपद, बस्ती-गुदा में चिपा चिपापन, नेत्र दुखना आदि रोगों को उत्पन्न करता है।

अम्ल रस के गुण :— आहार का पाचन करने वाला, दोष एवं आम का पाचन करने वाला, अग्नि दीपक, वायु को शान्त करने वाला, वायु मल मूत्र का अनुलोमक, कोष्ठ में विदाह करने वाला, बाह्य उपचार में शीतल, क्लेदक प्रायः हृदय के लिये हित होता है। इन गुणों वाला होने पर भी अकेला अम्ल रस ही अधिक सेवन करने से— दान्तों में जडता, आँखों का संकोच, रोम हर्ष, कफ का पतलापन और शरीर की शिथिलता को उत्पन्न करता है। चोट युक्त, जला हुआ ड़ँसा हुआ, भग्न, शूना, रुग्ण, स्खलित, मूत्र विष से दूषित को, विसर्प, छिन्न, भिन्न विद्ध-उत्पिष्ट आदि व्रणों को आग्नेय स्वभाव होने से पका देता है, गला छाती और हृदय को जलाता है।

लवण रस के गुण :— वमन-विरेचन द्वारा संशोधक, अन्न का पाचक, रस एवं मल का विश्लेषक, आहार का क्लेदक तथा शिथिलता कारक, उष्ण, सब रसों से विपरीत, विशोधक शरीर के सब अवयवों को कोमल करता है। इन गुणों वाला होने पर भी अकेला लवण रस ही अधिक मात्रा में सेवन करने से – शरीर में कण्डू, कोठ, शोफ,

हानि अर्थात शक्तिनाश), मुख आँख का पाक, रक्तपित्त, अम्लोद्गार को उत्पन्न करता है ।

कटु रस के गुण :— अग्निदींपक, आहार का पाचक, रोचक, शोधक, स्थूलता आलस्य कफ-क्रमि-विष कुष्ठ कण्डू को शांत करने वाला, सन्धि-बन्धों का विच्छेदक, अनुत्साह उत्पन्न करने वाला, दूध शुक्र एवं मेंद को नष्ट करने वाला है । इन गुणों वाला होने पर भी अकेला कटु रस अधिक मात्रा में सेवन करने से— भ्रम, मद, गला-तालु-ओठ की शुष्कता गात्र संताप, बल का ह्रास, कम्प-तोद भेद उत्पन्न करता है, हाथ-पाँव पार्श्व-पीठ आदि अवयवों में वात जन्य शूलों को उत्पन्न करता है ।

तिक्त रस के गुण :— कफ का छेदक, रोचक (स्वयं रुचिकर न होकर भी दूसरों में रुचि उत्पन्न करने वाला) कण्डू कोठ प्यास-मूर्च्छा-ज्वर को शांत करने वाला, दूध का शोधक, मल-मूत्र आर्द्रता मेद-वसा-पूय को सुखाने वाला भी यह रस अकेला अधिक मात्रा में सेवन करने से -शरीर-मन्या (ग्रीवा की दो शिरायें) का स्तम्भ, आक्षेप, अर्दित, शिरःशूल, भ्रम, तोद भेद, छेद (विचित्र प्रकार की पीड़ा) मुख की विरसता को उत्पन्न करता है ।

कषाय रस के गुण :— संग्राही, व्रणरोपक, स्तम्भक, व्रण-शोधक, लेखक, शोषक, पीडक, क्लेद (आर्द्रता) को सुखाने वाला है। यही रस इन गुणों के होने पर भी अकेला अधिक मात्रा में सेवन करने पर—हृदय की पीड़ा, मुख की शुष्कता, उदर में आध्मान, वाणी की जड़ता, मन्या स्तम्भ गात्रों में स्फुरण, चमुचुमायन आकुञ्चन आक्षेप आदि उत्पन्न करता है । (वायु के विकार उत्पन्न करता है) ।

छः रसों के पदार्थ :—

मधुर रस के पदार्थ :— दूध, घी, शालि, शाठी जौं, गेहूँ, सिंघाड़ा, कसेरु, खीरा, ककड़ी, खरबूजा, तुम्बी, तरबूज, निर्मली का बीज, पियाल, कमलगट्टा, गम्भारी, महुवा, मुनक्का, खजूर,

वस्तुयें, खरेटी, ... तुरन्त प्रसूता गाय का सात दिन तक अशुद्ध दूध अर्थात् खीस, मधूलिका, पेठा आदि संक्षेप में मधुर वर्ग हैं।

अम्ल रस के पदार्थ :— अनार, आँवला, बिजौरा, आमड़ा कैथ, करौंदा, वृक्ष का बेर, झाड़ी का बेर, सूखा आँवला, इमली, कोशाम्र (आम का भेद) कमरख, पारावत, बड़हल, अम्लबेतस, निम्बु, दही, छाछ, काञ्जी, तुषोदक धान्याम्ल आदि संक्षेप में अम्लवर्ग हैं।

लवण रस के पदार्थ : - सैन्धव, सौवर्चल, विड़, पाम्य रोमक, सामुद्रक पक्त्रिम (पाक द्वारा बनाया), यवक्षार, ऊपर-लवण, सज्जीक्षार आदि संक्षेप में लवण वर्ग हैं।

कटु रस के पदार्थ :— पिप्पल्यादि, सुरसादिगण, सहजन, मूली, लहसुन, सुमुख (तुलसी भेद), कपूर, कूठ, देवदारु, मेथी, बावची बीज, चण्डा, गुग्गुल, नागरमोथा पीलु आदि संक्षेप में कटु वर्ग हैं।

तिक्त रस के पदार्थ :— मण्डूकपर्णी, हल्दी, दारुहल्दी, इन्द्रजौ, सतवन, छोटी-बड़ी कटेरी, शङ्खिनी, द्रवन्ती, निशोथ, तुरई, करेला, बैंगन, करीर, कनेर, शंखपुष्पी, अपामार्ग, पुनर्नवा, बिच्छूटी, मालाङ्गनी आदि द्रव्य संक्षेप में तिक्त वर्ग हैं।

कषाय रस के पदार्थ : - न्यग्रोधादि, त्रिफला, जामुन, आम मौलसरी, तिन्दुक, इन सब वृक्षों के फल, निर्मली, कचनार, जीवन्ती, बथुआ, पालक, मूंग आदि दालें- संक्षेप में कषाय वर्ग हैं।

"तत्र मधुराम्ललवणा वातघ्नना:; मधुर तिक्त कषाया: पित्त्घ्नना:, कटुतिक्तकषाया: श्लेष्मघ्नना:,

(सुश्रुत सूत्रस्थान अ० ४२।४)

अर्थ :— इनमें मधुर अम्ल और लवण वायु का मधुर तिक्त और कषाय पित्त का, कटु तिक्त और कषाय कफ का नाश करते हैं।

क्रमशः

श्रावणी का पावन पर्व

● पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति

संसार के सभी मनुष्य समूह, संप्रदायों जातियो और राष्ट्रों में विभिन्न समय विभिन्न प्रकार आनन्दोंत्सव के लिये अनेक प्रकार पर्वादि का सृष्टि हुआ है। किंतु जगत की आदि गुरु और संसार के सब से प्रथम सभ्यता तथा विज्ञान का प्रचार करने वाली आर्यजाति परमपिता परमात्मा के अमर सन्तान आर्य जाति वैज्ञानिक ढ़ग से अपना प्रत्येक कार्य संपादन करता है। अतः वे शारीरिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा राजनैतिक रुप से पर्वों (त्यौहारों) को पालन करता है। पर्वों का मूल प्राकृतिक प्रवाह से नित्य घटना होती है और किन्ही का आधार कोई ऐतिहासिक आधार बन जाती है। कुछ पर्व ऐसे भी होते हैं कि जिन में दोनों घटनाओं का संमिश्रण हो जाता है। पर्व ज्ञान, कर्म उपासना और विज्ञान के साधन होते है। इन में श्रावणी पर्व नित्य प्राकृतिक आधार रखता है।

—: मूल कारण :—

जब-जब सृष्टि उत्पति होता है, तब मानवों को परम कारुणिक परमपिता परमात्मा वेदों का ज्ञान देता है। उसी समय से शांत वातावरण में बैठ कर गांव-गांव में वर्षात् के समय ऋषि मुनियों के द्वारा वेद कथा श्रावणी पर्व के रुप में मनाया जाता रहा है और सृष्टि के अंतिम काल तक मनाया जाता रहेगा।

सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत्सुवाचो वदथनाध्यप्सु,

(ऋ० ७।१०४।५)

ऋषि ([illegible]) समस्त [illegible] कर्म [illegible] ([illegible]) उपदेश मानव जाति को देते हैं (तद्) तब और वह (सर्वम्) सम्पूर्ण (एषाम्) वेदार्थ प्राप्त इन मानवों के लिये (समृधा) अत्यन्त वृद्धि (इव) के समान (पर्व) महोत्सव हो जाता है ।

—: श्रावणी नाम :—

अथर्व वेद के १९ वें कांड के ७ वें सूक्त में नक्षत्रों की गणना की गई है । उन २८ नक्षत्र में एक ',श्रवण'' नक्षत्र भी है । अथर्व वेद १९ । ७ । ४ ॥ चान्द्रमास की पूर्णिमा में जो नक्षत्र पड़ता है, वह मास उसी नक्षत्र के नाम पर कहलता है । अतः श्रवण नक्षत्र युक्त पूर्णिमा वाले मास का नाम श्रावण मास होता है ।

—: श्रवणा नाम :—

नक्षत्रों के नाम वेद में यौगिक रूप में दिये गए हैं। ऋषि दयानन्द ने उणादि कोष में श्रवण शब्द की व्युत्पत्ति यह की है —

"श्रृणोत्यनया सा श्रवणा नक्षत्रं वा"

जिस के द्वारा सुना जाय वह श्रवणा होती है अथवा नक्षत्र का नाम भी श्रवणा है ।

—: श्रावणी पर्व :—

श्रावण मास की पूर्णिमा अत्यन्त महत्व पूर्ण है । श्रावण मास वर्षा ऋतु का होता है । इस में शब्द बहुल्या होता है । वर्षा का शब्द होता रहता है । जंगल में अनेक जन्तु भांति-भांति के शब्द करते रहते हैं । दिन रात जंगल शब्दों से

भरे रहते हैं रात्रि में जंगल में जाकर यह अनुभव किया जा सकता है, गांव, नगर और जंगल में वर्षा ऋतु में सर्वत्र जल ही जल रहता है। मेण्ढ़कों की ध्वनि का तो ठिकाना ही क्या है? मानों प्रत्येक जीव जन्तु इस समय परम पिता परमात्मा का गुण गान कर रहे हैं। अतः श्रावण मास को शब्द मास कह दिया जाय तो कुछ भी अत्युक्ति नहीं।

जैसा वर्षा ऋतु में अनेक जीव-जन्तुओं की अमैथुनि सृष्टि होती है, ऐसी ही सृष्टि के आरम्भ में मानव की अमैथुनि सृष्टि भी वर्षा ऋतु- श्रावण मास में ही होती है। तब ही परम कारुणिक परम पिता परमात्मा वेदोपदेश भी देता है और वही उपदेश श्रुति परम्परा द्वारा पहिले पहिले इसी भांति चलता है। अतः इस मास के पर्व को "श्रावणी पर्व या श्रावणी उपाकर्म" कहा जाता है। इस पर्व में उद्देश्य वेदों की रक्षा करना है रक्षा शब्द की व्याख्या करते हुए महर्षि पतंजलि ने लिखा: - "रक्षार्थ वेदानामध्येयं व्याकरणम्"। वेदार्थ रक्षा के लिये व्याकरण को भी जानना आवश्यक है। इसी हेतु इस दिन वेदों का स्वाध्याय करना चाहिये। गुरुकुलों में वेदारम्भ संस्कार इसी दिन होता था। कहा भी है—

श्रवणेन स्वाध्यायानुपाकरोति आचार्योऽन्तेवासिनां योगमिच्छन् जपति ऋतं वदिष्यामि ब्रह्म वदिष्यामि। ओ३म् भूर्भुव स्वरितितिः सावित्रींमधीते— वराह गृह्य सूत्र—

अर्थात्— श्रवण नक्षत्र को लक्ष्य करके आचार्य शिष्यों के सम्बन्ध को चाहता हुआ स्वाध्याय को वेद के पठन-पाठन से प्रारम्भ करता है। पुनः संकल्प करता है कि ऋत-ज्ञान का उपदेश करूंगा। सत्याचरण, सद्व्यवहार का उपदेश करूंगा एवं शिष्य भी व्रत ग्रहण करता है। ऋत-ज्ञान का ग्रहण करूंगा। यज्ञ-कर्म और उपासना का पाठ पढुंगा। गायत्री जप करूंगा। "श्रावण्यां पौर्णमास्या मासादस्यां वोपाकृत्य तेषां माध्यां वोत्सृजेत्" - बौधायन स्मृति चन्द्रिका -

उपरोक्त मान्यता के कारण श्रावणी पर्व को ब्राह्मणों का पर्व कहा जाता है अर्थात् ब्रह्म सम्बध को धारण करने वाला पर्व कहा जाता है और यह ठीक भी हैं। वेद का प्रचार-प्रसार तथा मनन करना ब्राह्मणों का धर्म है। ब्राह्मण लोग यजमानों के हाथों में "रक्षा सूत्र" धागा बान्धते हैं। इसका अभिप्राय मुख्य रुप से यही है कि ब्राह्मण लोग अपने यजमानों को "रक्षा सूत्र"—यज्ञोपवीत- जनेऊ धारण करा के गायत्री के उपदेश पूर्वक वेद का अभ्यास कराते हैं। यज्ञ का अर्थ हुआ ईश्वरोपासना व विद्वानों का सत्संग, संगठन व दान समाज की धारणा इन्हीं तीन से तो होती है। दूसरे के विचारों का आदर करना, सौहार्दय और संगठन रखना तथा औरों के लिये त्याग की भावना रखना। इसीलिये तो कहा है कि "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। यज्ञ के समीप ले जाने वाला यह अधिकार पट्ट, गाउन, चयराम या चिह्न है।

आइये हम विचार करें इस यज्ञोपवीत की बनाबट पर। धागे के यज्ञोपवीत के निर्माण के लिये प्रत्येक के लिये अपनी अंगुलियों के ९६ चौवों को नाप कर सूत लिया जाता है। ९६ का कुछ बिद्वान ८ प्रहर, ३ काल २ दिन रात ७ वार, १५ तिथियां, १२ मास, ६ ऋतु, २७ नक्षत्र, १२ राशियां इस काल गणना से जोड़ते हैं। दूसरे विद्वान इसे ४ वेद, ४ उपवेद, ६ वेदाङ्ग, ६ उपांग, ३ सूत्र, ९ आरण्यक, ६४ कलाओं से जोड़ते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने अंगुल से ९६ अंगुल का है। इस कल्पना के प्रत्यक्षी कारण हेतु हम इसे ९६ अंगुल का लेते हैं। अतः वेदादि शास्त्रों को पढ़ कर मानव जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति के लिये प्रतिज्ञा करते हैं, साथ ही वेदों की रक्षा के लिये प्रतिज्ञा करते हुए अपने जीवन को वेदानुकुल बनाने के लिये ब्राह्मण लोग यजमानो को प्रतिज्ञा की गांठ बान्धते थे।

मन्त्र में जिसे गायत्री वा गुरुमन्त्र भी कहते हैं, २४ अक्षर हैं और चारों वेदों में आया है, अतः २४×४=९६ से भी यज्ञोपवीत का सम्बन्ध है। यज्ञोपवीत के ३ धागे गायत्री के ३ पाद हैं। ब्रह्मग्रंथि प्रणव अर्थात् ओ३म् है और इसकी ग्रन्थियां महाव्याहृतियां हैं। इस मंत्र का ऋषि "विश्वामित्र" है, जिसका अर्थ सबका मित्र है। यज्ञोपवीत धारी भी 'धियो यो नः प्रचोदयात्" की प्रार्थना कर सब की बुद्धि को सन्मार्ग पर चलाने के लिये प्रार्थना कर सर्वमित्र बन जाता है। बिना भेद भाव के वसुधैव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ाता है। ऋषि दयानंद ने भी गायत्री द्वारा शिखा बन्धन करते हुऐ वेदों की पठन पाठन बतलाया है। निरुक्तकार महर्षि यास्क ने भी "गायत्री गायतेः स्तुतिकर्मण नि० ७, १२" अर्थात स्तुति करने वालों की रक्षा करने से गायत्री कहलाती है' गातारं त्रायते यस्माद् गायत्री तेन गीयते (स्कन्द पुराण काशी खण्ड ४ पूर्वा अ० ९) अर्थात् गाने वालों की रक्षा करने से गायत्री कहलाती है। गायन् शिष्यान् यतस्त्रायेद् भार्यां प्राणांस्तथैवच (अग्नि-पुराण अ० २१ श्लोक १) अर्थात् गुरु-शिष्य, पति-पत्नी, भाई-बहन सभी की रक्षा करने से गायत्री कहलाती है। इसलिये श्रावणी के पर्व पर गायत्री पूर्वक वेदाध्ययन का विधान है। इस प्रयोजन से श्रावणी पर्व के समय गुरु पूजा का भी विधान है। यह भी वेदरक्षा के महत्व को प्रकट करता है। यजमान और विद्यार्थी अपने आचार्यों और ब्राह्मणों का दान-धनादि से यथायोग्य सत्कार करते हैं। परन्तु यह उदात्त भावना लुप्त हो गई और बहन अपने भाइयों के करों में प्रचुर दक्षिणा दे इसलिये राखियां बांधती है और ब्राह्मण लोग भीं राखी के धागे लेकर शहरों में घूम घूम कर लोगों के हाथों में राखी बांध कर पैसे बटोरते हैं और राखी बांधते समय वे इस श्लोक को भी पढ़ते हैं :—

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्री महाबलः ।
तेन त्वा प्रतिबन्ध्नामि; रक्षे मा चल मा चल ॥

श्लोक का अर्थ है कि महाबली दानवेन्द्र राजा बली को जिस से बन्धा गया था, उस से तुझे बान्धता हूँ, हे रक्षा तू मत चल तू मत चल ।

पौराणिक कथा है कि बलि बड़ा दानी था । विष्णु-भगवान ने वामन रुप धारण कर उस से तीन पैर पृथिवी मांगी । राजा बलि ने विष्णु से कहा कि तीन पैर पृथ्वी नाप लो, फिर तो विष्णु ने तीनो भुवन तीन पैरों में नाप लिया और राजा बलि को बांध कर पाताल में भेज दिया ।

कहावत भी प्रसिद्ध है कि :–

"बलि चाहा आकाश को, हरि पठावा पाताल" । विवाहादि के अवसर पर भी हाथों में रक्षा सूत्र बांधते हैं, उस समय भी वे इसी श्लोक को पड़ते हैं । (कभी इस विषय पर कभी आध्यात्मिक अर्थ "वनवासी-सन्देश" के प्रेमी पाठकों के समय रखेगें- लेखक)

—: ऋषि तर्पण :—

ऋषि तर्पण का अर्थ है ऋषियों को तृप्ति करना । ऋषियों को तृप्त किस प्रकार किया जाय एक विचारणीय प्रश्न है । प्राचीन ऋषि अब इस संसार में नहीं है, किंतु उनका दिया हुआ ज्ञान आज भी प्राणियों का परम उपकार कर रहा है, उस ज्ञान का फैलाना ही ऋषि तर्पण है । प्राचीन काल में ऋषि-मुनि आश्रमो में निवास करते थे, गृहस्थ लोग अपने बच्चों को लेकर उनके पास पहुंच कर निवेदन करते थे, कि महाराज हमारे पुत्रों को शिष्यत्वेन स्वीकार कर इन्हें शिक्षा दीजिये । ऋषि-मुनि उन नवीन छात्रों का उपनयन कर उनका वेदारम्भ संस्कार करते थे और उन छात्रों को समस्त विद्या देकर ऋषि ऋण से मुक्त हो जाते थे और यह ऋण छात्रों के कन्धो पर यज्ञोपवीत के रुप में रख कर उन से कहते थे कि पुत्रों ! इन तीनों ऋणों को चुका कर मानव जन्म का फल प्राप्त करना । कन्धे पर पडे यज्ञोपवीत के ३ धागे में हमें

देव-ऋण, ऋषि-ऋण और पितृ-ऋण के भार सदा स्मरण करते हैं। इन तीनों ऋणों से उऋण होने के लिये यज्ञोपवीत धारी ईश्वरोपासना और व्रत कराता है और भविष्य के लिये संतति का निर्माण कर अच्छे नागरिक बनाता है और माता पिता की सेवा करता है। कन्धे के भार का वहन कमर कस कर हृदय से करता है। यज्ञोपवीत केलिये ३ धागे ब्रह्मचर्य गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम में धारण कर वेदों की रक्षा के लिये उत्तरोत्तर संन्यास आश्रम में पहुंच जाता है। "संन्यसेत् कर्माणि वेदमेव संन्यसेत्" अर्थात् संन्यासी सब कर्मों का त्याग कर दे किन्तु केवल वेद का त्याग न करें अर्थात् वेद सम्बन्धी स्वाध्याय का त्याग कभी न करें।

इस कारण यह स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक काल में स्वाध्याय को भी सर्वोपरी स्थान प्राप्त था। इसका एक मात्र कारण ही था कि मानव अन्न के द्वारा शारीरिक उन्नति तो कर सकता है किन्तु अपने मानसिक स्तर को उन्नत नहीं कर सकता है। इस मानसिक स्तर की उन्नति के लिये स्वाध्याय ही सर्व श्रेष्ठ साधन था और है। केवल शारीरिक उन्नति से सच्चे अर्थों में मानव नहीं बन पाता है। वह मानव तभी बन पायेगा कि जब उसका शारीरिक उत्थान के साथ ही मानसिक और आत्मिक उत्थान भी हो। स्वाध्याय की इस शतत शीलता के परिणाम स्वरुप मानव का मानस दर्पण इतना निर्मल और परदर्शी बन जाता है कि वह उस में पर-ब्रह्म परमात्मा का भी साक्षात्कार कर लिया करता है। स्वाध्याय की इस परम्परा से मानव "ऋषि" पद को भी प्राप्त कर लेता है क्योंकि स्वाध्याय के द्वारा वह मन्त्रों के विषयों का सक्षात्कार करने में भी समर्थ हो जाता है। मन्त्र द्रष्टा को ही ऋषि कहा गया है। जो वस्तु जिसको प्रिय हुआ करती है, उसी वस्तु के द्वारा उसकी अर्चना किया जाना सर्वश्रेष्ठ है। ऋषियों का स्वाध्याय के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है। वे स्वाध्याय द्वारा ही "ऋषि" संज्ञा को प्राप्त होते हैं, अतः

उसके स्वाध्याय के द्वारा ऋषियों को भी तृप्त किया जाता है। इसी आधार पर इस पर्व को "ऋषि तर्पण" के नाम से कहा जाता है।

वेद-रक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में श्री ए० ए० मैकड़नल ने लिखा है "वेद अब भी उसी भांति कण्ठस्थ किये जाते हैं, जैसा कि सिकन्दर के आक्रमण से बहुत पहले किये जाते थे। और यदि उनकी प्रत्येक हस्त-लिखित (पाण्डुलिपि) अथवा मुद्रित प्रति विनष्ट हो जाय, तो उन धार्मिक आचार्यों के आधारों द्वारा पुनरपि उनका संकलन किया जा सकता है।" परम्परा गत कण्ठस्थ करते चले आने वाले निस्वार्थ वेद-पाठियों की कितनी विलक्षण देन है, उदार कृति है।

लवी नामी विदेशी अरबी विद्वान् ने वेद के सम्बन्ध में लिखा :—

अयि भाग्य शालिनी भारत भूमिः तू श्लाघा योग्य है, क्योंकि परमात्मा ने अपना सत्य ज्ञान तुझ में ही प्रकट किया।

महान् प्रभु के महत्त ज्ञान वेद की महत्ता मन-मस्तिष्क पर अंकित करने के लिये महान् दयानन्द ने श्रावणी उपाकर्म के महान् वेदाध्ययन पर्व पर महान् आर्य जाति का ध्यान दिलाते हुए आर्य समाज के ३ रा नियम में उल्लेख किया है कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। आओ सब मिल कर इसे श्रद्धा पूर्वक मनायें। इसी में हमारा कल्याण निहित है।

निबन्ध प्रतियोगिता

आर्य समाज, कलकत्ता, १९, विधान सरणी, कलकत्ता,-६

आर्य समाज कलकत्ता ने "भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज की देन" विषय पर एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया है।

पुरस्कार की राशि :- प्रथम ११००)रु०, द्वितीय ७००)रु०, तृतीय ५००)रु० निबन्ध प्राप्ति की अंतिम तिथि - १५ सितम्बर १९७७ ई० ।

नियम-उपनियम

(१) निबन्ध हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में होना चाहिये।

(२) अधिकतम शब्द संख्या ३००० हो सकता है।

(३) लेख की मौलिकता का उत्तरदायित्व प्रेषक का होगा।

(४) लेख दो प्रतियों में फुलस्केप पेपर के एक ही तरफ यथा-सम्भव टाइप किया हुआ या सुस्पष्ट शब्दों में लिखित भेजें।

(५) लेख में कहीं भी लेखक का नाम, पता या हस्ताक्षर अंकित न हो। लेखक का नाम, पुरा पत्ता एवं हस्ताक्षर एक अलग स्लिप में लेख के साथ संलग्न होना चाहिये।

(६) लेख के प्राप्त न होने अथवा क्षत-विक्षत अवस्था में पहुँचने पर आर्यसमाज उत्तरदायी नहीं होगा।

(७) विजेताओं का निर्णय आयोजकों द्वारा गठित निर्णायक मण्डल द्वारा होगा तथा निर्णायक मण्डल का निर्णय सर्व-मान्य होगा।

(८) प्राप्त लेख वापस नहीं किया जायेंगे तथा समाज को उन्हें कहीं भी प्रकाशित करने का अधिकार होगा।

(९) आयोजक समाज के अधिकारीगण एवं निर्णायक मण्डल के सदस्य इस प्रतियोगिता में भाग न ले सकेंगे ।

(१०) पुरस्कृत व्यक्ति को डाक द्वारा सूचित कर दिया जायेगा ।

(११) निबन्ध इसी आधार पर स्वीकृत किये जाएँगे कि लेखक को सभी नियम उपनियम मान्य है ।

कृपया अपना निबन्ध निम्न पते पर भेजें :—

मंत्री :- आर्य समाज कलकत्ता, १६, विधान सरणी कलकत्ता-६

आर्य जगत्

शोक संवेदना

यह पढ़ कर बड़ी वेदना है कि आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा के संस्थापक, आर्ष पाठविधि के समर्थक, अनन्य ऋषिभक्त स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी का शरीर पात हो गया है । स्वामी जी के निधन से आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई है ।

स्वामीजी एक निष्ठावान् संन्यासी थे तथा भारतीय दर्शन शास्त्र के प्रमुख व्याख्याता, यज्ञों के प्रति उनकी विशेष अभिरुचि रहती थी और सुचारुता के साथ सम्पन्न कराते थे ।

जब तक एटा गुरुकुल का भव्य वैभव विशाल यज्ञशाला रहेगा, स्वामीजी की शिष्य परम्परा कायम रहेगी, स्वामीजी यशः शरीर से अमर रहेंगे ।

स्वामीजी की वियोग जन्य वेदना से पीडित हमारी "वनवासी सन्देश" परिवार तथा गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास परिवार शोक संवेदना प्रकट करता है ।

"वनवासी सन्देश" तथा गुरुकुल के सभी सदस्य प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति तथा गुरुकुल एटा के बटुको तथा अधिकारी वर्ग एवं कर्मचारियों को धैर्य प्रदान करें ।

★ गुरुकुल भूमि में स्वतन्त्रता दिवस पालन ★

१५ अगस्त १९७७ को गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास में ब्रह्मचारी, कर्मचारी तथा अध्यापकों ने स्वतन्त्रता दिवस यथा-विधि उत्साह पूर्वक मनाया गया । अपराह्न को पं देशबन्धु विद्यावाचस्पति जी के अध्यक्षता में एक सभा हुआ । जिस में मुख्यवक्ता के रुप में श्री धनेश्वर बेहेरा, श्री वैष्णब चरण जेना तथा अन्यान्य व्यक्तियों ने भाग लिये । अन्त में अध्य-क्षीय भाषण के बाद सभा समाप्त हुई ।

सूचना

बीकानेर २६ अगस्त, नगर आर्य समाज का पाँच दिव-सीय वार्षिकोत्सव अक्तूबर ७७ के पहले सप्ताह में मनाया जाना निश्चित हुआ है, इसके लिये आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, बरेली की श्रीमती सावित्री देवी आचार्या, अजमेर से कविरत्न श्री पन्नलाल पीयूष और आकाश-वाणी संगीतज्ञ श्री ओमप्रकाश अंबाली से तथा अन्य महानुभावों को आमन्त्रित किया गया है ।

समाज के उप प्रधान श्री यशपाल की धर्मपत्नी के ८ अगस्त को स्वर्गस्थ हो जाने के कारण तैयारी में व्यवधान आ पड़ा पर अब समस्त कार्यकर्त्ता गण धन संग्रह आदि में जोर सोर के साथ जुट गये है, उत्सव का स्थान व दिवस की घोषणा निकट भविष्य में ही कर दी जायगी ।

आर्य समाज

महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर- ३३४००१

वनवासी-सन्देश-ग्राहकों से नम्र निवेदन

वनवासी क्षेत्रों में हिंदू धर्म (आर्य) के रक्षा, तथा अराष्ट्रिय प्रचार निरोध कार्य को रोकने के लिये आपका यह "वनवासी-संदेश" सतत प्रयत्न शील है। अतः सभी पाठकों से नम्र निवेदन है कि वार्षिक रु ५-०० (पांच रुपया) देकर इस पत्रिका को सक्रिय करने की कृपा करे।

सम्पादक—

प्रकाशक— स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा शान्ति आश्रम प्रेस, गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास, राउरकेला - ४ में मुद्रित ।।

★ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ★

वनवासी सांस्कृतिक समिति, वेदव्यासस्य,
मासिकं मुख-पत्रम्

वनवासी संदेश

संस्थापक :—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

—: वेद कहता है :—

ओ३म् यत्र ब्रह्म च क्षत्रञ्च सम्यञ्चौ चरतः सह ।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना ॥

यजु० २० । २५

अर्थात् :- जहां ब्रह्म शक्ति क्षात्र शक्ति दोनों परस्पर-परस्पर एक दूसरे की समर्थक होकर चलती है, उस पुण्य देश को जान· जाऊँ, जहां विद्वान् व्रताग्नि सम्पन्न होते हैं ।

भारत निर्माता श्री कृष्ण

संपादक
पं० आत्मानन्द शास्त्री

सह- संपादक
पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति

शास्त्र बतलाती है

१- शिकार करना, जुआ खेलना, दिन में सोना, पर-निन्द, स्त्रियों में अत्यधिक आसक्ति, मद्यादि मादक पदार्थों का सेवन, नृत्य, संगीत, वाद्य और व्यर्थ इधर उधर घूमना, ये दश— कामज दोष हैं ।

२- चुगली, साहस, द्रोह, ईर्ष्या, निन्दा, बलात पर संपत्ति पर अधिकार, कठोर वचन, तीक्ष्ण दण्ड — ये आठ क्रोध से उत्पन्न होंने वाले दोष हैं ।

३- बालक, वृद्ध, दीर्घरोगी, भीरू, लोभी, इन्द्रय लोलुप, चंचल बुद्धि वाला, बहु रिपु, प्रवासी, सेना वीहीन, मिथ्या भाषी — इन से सन्धि नहीं करना चाहिये ।

४- शस्त्री (शस्त्रधारी) मर्मी (भेद जाननेवाला) समर्थ स्वामी, मूर्ख, धनवान, वैद्य, भाट, कवि और रसोईया, इन नौ व्यक्तियों से बिरोध नहीं करना चाहिये ।

संग्रह कर्त्ता
धर्म नारायण सिंह

वनवासी—सन्देश

उत्कल जनता संस्कृति रक्षा बद्धकटिस्तमः स्तोमहतिदेशः
गुरुकुल सुपानपोषादुदयति वनवासी संदेशः ॥
यो भ्रष्ट ख्रीष्टमत दीक्षित मज्ञलोकम्
संस्कृत्य दूरयति तद्धृदयांधकारम् ॥
श्री वेदव्यास सुगुरो कुल सन्निवेशः
सम्पूर्वादेरुदयते वनवासी सन्देशः ॥

वर्ष ११ अंक ९	सितम्बर १९७७	वार्षिक मूल्य ५ रु एक प्रति ५० पैसे

वेदोपदेश

ओ३म् । न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु
शस्यते न स्रेधन्तं रयिर्नशत् ।
सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यं मावते
देष्णं यत्पार्ये दिवि ॥

साम ४ । ४ । ३ । २

(दुष्टुतिः) बुरी कीर्ति वाला, दुष्ट साधनों वाला, (द्रविणोदेषु) धनदाताओं में (न) नहीं (शस्यते) गिनाजाता अच्छा माना जाता । (स्रेधन्तम्) हिंसक को (रयिः) धन, मोक्षधन, (न) नहीं (नशत्) प्राप्त होता । हे (मघवन्) पूजनीयधनवन् भगवन् । (मावते) मेरे जैसे के लिये (पार्ये)

पार पाने योग्य (दिवि) प्रकाशावस्था में (देष्णं) देने योग्य (यत्) जो धन है, (सुशक्तिः) उत्तम शक्ति वाला मनुष्य (इत्) ही (तुभ्यम्) तेरे निमित्त (उसको प्राप्त करता है।

इस मंत्र में जिस धन की चर्चा है, वह साधारण धन धान्य मकान पशु आदि नहीं। वरन् शांति रूप धन है। वेद में कहा भी है शंपदम् मघं रयींषिणे- धनाभिलाषी के लिये शांति रुपी धन ही पद = प्राप्त करने योग्य है। लौकिक धन-धान्य तो चोर डाकुओं के पास भी होता है। किन्तु इस धन से बुद्धिमानों की तृप्ति नहीं होती, याज्ञवल्क्य घर छोड़कर संन्यासी बनने लगे, तो उन्होंने धर्म-पत्नी मैत्रेयी से कहा- आ मैत्रेयी, तेरा बटवारा कर दें। इस पर मैत्रेयी ने पूछा।

यन्नु म इयं भगोः सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात्, स्यान्न्वहं तेनामृत। (बृहदा० ४।५।३)

भगवन् ! यदि यह धन धान्य से पूर्ण सम्पूर्ण पृथिवी मेरी हो जाय तो क्या मैं अमृत हो जाऊँगी ? सत्यादर्शी यथार्थवक्ता याज्ञवल्क्य उत्तर देते हैं।

नेति नेति- यथैवोपकरणवतां जीवितं तथैव ते जीवित स्याद्, अमृतत्वाय नाशास्ति वित्तेन।

बृहदा० ४।५।३

नहीं, नहीं……जैसे धन धान्य सामान वालों का जीवन होता है, वैसे ही तेरा जीवन भी होगा। अमृतत्व की = मुक्तिकी आशा = संभावना धन से नहीं हो सकती। मैत्रेयी इस पर कहा।

येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्य्यां यदेव भगवान् वेद तवेव मे ब्रूहि बृहदा० ४।५।४॥

जिससे मुक्त न हो सकूँ, उससे मेरा क्या प्रयोजन ? महाराज ! मोक्ष का भी साधन आप जानते हैं, वही मुझे बताइए ।

अरे धन तो सचमुच एक से दूसरे के पास जाते हुए रथ के चक्रों की भांति अदलते बदलते रहते हैं । ऐसे विनश्वर भौतिक धन में अविनाशी के अभिलाषी की अभीलाषा कैसी ! ! ! न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु (ऋ० ७ । ३२ । २१) मनुष्य दुष्ट उपायों से धन नहीं प्राप्त कर सकता । न स्रेधन्तं रयिर्नशत् हिंसक भी धन नहीं प्राप्त कर सकता ।

कितना ही शास्त्रवेत्ता क्यो न हो, जब तक हिंसादि दुष्ट उपायों को नहीं छोड़ता, तब तक शांतिधन आत्म संपति को नहीं प्राप्त कर सकता । यम ने नचिकेता को समझाया था....

नाविरतो दुश्चरितान्नाशांतो नासमाहितः ।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात् ॥

(कठो० २ । २२)

जो दुराचार से नहीं हटा, जो चंचल है, जो प्रमादी है, सावधान नहीं है, जिसके मन में क्षोभ है, वह बुद्धि से, ज्ञान से इस आत्मा को नहीं प्राप्त कर सकता ।

आत्मज्ञान के विना शांति नहीं । जब प्रमाद तथा अनाचार से आत्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती । तब उसकी प्राप्ति के बाद प्राप्त होने वाली शांति = सम्पत्ति की प्राप्ति की आशा कैसे कीं जा सकती है ।

वेद कहता है, देने योग्य धन को कोई शक्तिशाली ही प्रभुसमर्पण की भावना से प्राप्त कर सकता है ।

●
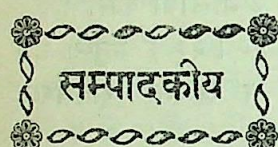
भारत का कल्याण श्री कृष्ण के

पथ का अनुगामी करने से ही होगा

सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने एक वार अपने व्याख्यान में कहा था कि The nations live on their Past in their Present and for their Future. अर्थात् जातियां अपने भूतकाल के इतिहास के आधार भविष्य की उन्नति के लिये, वर्तमान में जीवित रहती है ।

जातियां प्रेरणा लेता है अपने प्राचीन इतिहास से, जो जाति अपने भूतकाल के इतिहास से कुछ शिक्षा ग्रहण नहीं करता है, वह जाति नष्ट भ्रष्ट हो जाता है ।

इस में कुछ सन्देह नहीं कि हमारी विशाल आर्य जाति सर्वदा से धन, बल, संख्या, बुद्धि, वैभव और राज्य सब में अन्य जातियों से बढ़-चढ़ कर रही है और संसार की

अन्य कोई भी जाति इसका सामना करने में समर्थ नहीं हुई है, लेकिन यदि इसका पतन हुआ है तो उन भयंकर भूलों के कारण जो हिन्दू जाति के राजा अथवा कर्णधार समय-समय पर करते आये हैं। यदि भारतीय लोग अपनी इन भूलों का शिकार न बनती इतनी पद दलित कभी न होती जितनी कि वह आज हो रही है। लेकिन अफसोस यह है की अपनी उन भूलों से भी इस जाति ने कोइ शिक्षा न ली, जैसा कि एक अंग्रेज इतिहासकार ने लिखा है:—
"The Hindus have Learnt nothing and have forgotten nothing Since the days of mohemad Bin-Kasim."

अर्थात् मुहम्मद-बिन-कासिम के समय से हिन्दू जाति ने आजतक इतिहास से न तो कोई पाठ सीखा और न अपनी किसी भूल को स्वीकार करके उसे छोडा।

जाति तथा देश के महापुरुष ज्योति स्तम्भ Light house का काम देते हैं। लाखों मनुष्यों को उन महापुरुषों के जीवन से अपने अन्दर नया जीवन मिलता है।

आज से पांच हजार वर्ष पूर्व श्री कृष्ण महाराज जी का जन्म मथुरा में बृष्णि नामक क्षत्रिय कुल में वसुदेव जी के घर में हुआ था। इनकी माता का नाम देवकी था।

इनके मामा कंस अपनी बहन कीं कुल बृद्धि नहीं चाहते थे। अतः उन्होंने निश्चय किया हुआ था कि देवकी के गर्भ से जो भी बच्चा होगा, उसे मरवा दिया जायेगा।

कृष्ण जी जब गर्भ में थे, तभी से वसुदेव ने गोकुल वासी नन्द तथा उनकी योशदा से यह निर्णय कर रक्खा था कि जब भी हमारे यहां बालक होगा तभी हम आपको दे जावेगें और आप उसका पालन पोषण करें।

इस संकट की परिस्थिति में श्री कृष्ण जी का जन्म तो मथुरा में ही हुआ, किन्तु उनका बाल्यकाल गोकुल में व्यतीत हुआ।

बाल्यावस्था में योशदामाता ने भी अपने गर्भज पुत्र की भांति बडे चाव और प्रेम भाव से श्रीकृष्ण को पाला और पोषा। चूंकि कंस विदेशीय शासकों के बल पर मनमानी प्रजाओं को उत्पीडन कर रहा था। खाद्य पदार्थों को जोर जबरदस्ती आदाय कर विदेश को रप्तानी करता था। दिनों दिन कर बढ़ता जाता था। अतः प्रजा त्राहि त्राहि कर रहे थे। ऐसे परिस्थिति में कोई उद्धारक का खोज कर रहे थे।

बल्यावस्था में ग्वालों के साथ अपना समय खेल कूद में व्यतीत करके भी श्रीकृष्ण जी ने सन्दीपनी आचार्य से अनेक प्रकार की कलाकौशल का अभ्यास किया और क्षत्रियोचित शस्त्रास्त्र विद्या भी वहीं से प्राप्त की। इस विद्या के अतिरिक्त ब्रह्मविद्या का ज्ञान इन्होने घोराङ्गिरस नामक आचार्य से प्राप्त किया।

उस समय चारोंतरफ नास्तिकता का बोलबाला हो रहा था। कंस तथा जरासन्ध अपने को भारत का सम्राट कहते थे। ऐसे समय में 'होनहार विरवान के होत चीकने पात, की भांति श्री कृष्ण महाराज किशोरावस्था में बल और विद्या में अद्वितीय शक्ति प्राप्त करके नव युवकों के अन्दर आध्यात्मिक तथा देशभक्ति का पाठ पढ़ाना प्रारम्भ किये।

नवयुवकों को संगठन करके महा प्रतापी निरंकुश शासकों के विरुद्ध आन्दोंलन करने के लिये मन्त्रणा दिये। फल स्वरुप ब्रज से पौष्टिक पदार्थ घी, दूध, मक्खन आदि मथुरा को जाता था। उसे गोपियों से मार्ग में मांगते थे, लेने नहीं देते थे। यदि नहीं मानते थे तो लूट कर गरीबों के अंदर बांट देते थे। मथुरा राज्य की चुंगी की आय बढ़ाने के लिये ब्रज से मथुरा पें दूध, दही, मक्खन का जाना रुक

जाय । इसलिये आपने यह योजना बनाई कि मथुरा को खाद्य पदार्थ ले जाने वालों पर 'ब्रजराज श्री कृष्ण जी की चुंगी निकले । इस निर्यातकर (Export duty) से परिणाम यही होना था कि मथुरा मे माल न जा सके, जाय तो भाव में तेज पडे और कंस प्रजा में पौष्टिक पदार्थ के न मिलने या तेज मिलने से बेचैनी पैदा हो । बस जो ग्वालिन मथुरा को दही मक्खन से जाती थी, उनसे कर लिया जाता था और जो न देती थी, उनका माल लूट लिया जाता था । यह कंस को पहली चुनौती थी । जो नये रक्त में कंस शासन के विरोधी भाव कूट कूट कर भर दिये । कंस ने जो भी गुप्तचर भेजे वह ब्रजभूमि में ही सदा को सुला दिये गये । एक भी लौट कर कंस को अपनी रिपोर्ट दे न सका विवश होकर कंसराज ने दंगल के बहाने कृष्ण, बलदेव को मथुरा बुलाया । यह भी अपने मित्र मंडल को लेकर अपने पालक पिता नन्द जी के साथ मथुरा पहुंचे और यमुना तट पर राजा धोबी के वस्त्र लूट कर नगर पर अपना आतंक बैठा दिया । कंस का प्रभाव कम करने के लिय यह अच्छा ढंग था । कंस की मुख्य परिचारिका एक कुबुड़ा थी । राज भवन के भेद जानने के लिये उसे अपनी और तोड़ लेना एक कूट नीति थीं । आखिर दंगल में इनके साथी गोप बालकों ने कंस के बडे-बडे पहलवानों को यमलोक भेज दिया । खूनी हाथियों को मार डाला । कंस के तानाशाही शासन से लोग दुःखित थे । वे भीतर ही भीतर इनकी सफलता की कामना करने लगे । कंस के गूट के लोग भयभीत होकर सहम गये । अन्तिम दिन कंस के कट्टर पक्षपाती हेकड़ लोगों को दंगल में समाप्त कर कंस का भी सिर काट लिया और राज्य क्रान्ति हो गई । स्वयं श्री कृष्ण कहते हैं :— त्यक्तस्तु कंसो यदुभिर्हितार्थे— अर्थात् मैनें यादवों प्रजा के हित के लिये कंस का भी त्याग कर दिया ।

खण्डित भारत को एकता के सूत्र में

कृष्ण राष्ट्रीय एकता के अग्रगण्य नेता थे । पाण्डवों को

राजसूय यज्ञ करने की प्रेरणा के पीछे कृष्ण सम्मुख यही लक्ष्य था कि इस उपाय से सारा देश एक झंडा, एक संविधान और एक केन्द्र के नीचे आ जायेगा, उस समय देश की अवस्था क्या थी, महाभारत में लिखा है :—

गृहे गृहे ही राजानः स्वस्य स्वस्य प्रियंकराः ।
न च साम्राज्यमाप्तास्ते सम्राट शब्दो हि कृच्छभाक् ॥

घर-घर में राजा मौजूद हैं और केवल अपने ही हित में लगे हैं । साम्राज्य किसी का नहीं है और सम्राट शब्द कहना भी अब कठिन हो गया है । ऐसे श्री कृष्ण जी से कूटनीतिज्ञ ही भारत का एकता के सूत्र में बांध सका था ।

आज ठीक उसी प्रकार भारत का अवस्था है । भाषावाद, जातीयतावाद, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिक आदि अनेक अराजकता दिखाई दे रहा है । आज इसी वाद के कारण ही कहीं लडाई फसाद हो रहा है । कहीं ट्रामें जल रहा है । कहीं हरिजन-आदिवासी समस्यायें मुहँ फैले दिखाई दे रहा है । अतः आज आवश्ककता है भारत को एकता सूत्र में बांध कर नवयुवकों के अन्दर उत्कट देश प्रेम की गंगा वहाने की । याद रखिये दूसरी जातियों ने हमेशा हमलोगों की फूट का लाभ उठाया है । राष्ट्रीय एकता जब साम्प्रदायिक, प्रांतीय भाषा-वादी और जातिवादी झगडों से झुलस जाती है तो फलने-फूलने के स्थान पर सिकुडने लगती है, मुरझाने लगती है । कुछ लोगों के मन में संकीर्ण मान्यताओं दुरभिमानों, दुराग्रहों और स्वार्थों का भरा हुआ जहर राष्ट्र की भावनात्मक एकता को जला ड़ालता है । इतिहास साक्षि है कि व्यक्तिगत हित और गौरव की भावना से उत्तेजित व्यक्तियों ने ही भारत वर्ष में विदेशियों (मुगलों आदि) के साम्राज्य की स्थपना कराई और यह भी स्पष्ट है कि भारत वर्ष में छोटे-छोटे

राजाओं के व्यक्तिगत हित और गौरव की भावना ने ही देश को अंग्रेजों का गुलाम बनाया।

अतः आज आवश्यकता है समग्र राष्ट्र को एकता सूत्र में तदर्थ आबद्ध करने की। जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद, साम्प्रदाय वाद के भूत को दूर करना होगा। एक भाषा, एक भावना, जाति सूचक शर्मा, वर्मा, आदिवासी, हरिजन आदि घृणा सूचक शब्द को दूर करना होगा। तभी हम श्री कृष्ण के भक्त कहलाने लायक है :—

भारत माता अपनी जननी, राष्ट्र एक परिवार
जिओ और जिने दो, यही नीति का सार है—

● देशबन्धु विद्यावाचस्पति

वेद और विज्ञान का समन्वय

श्री देवेंद्र प्रसाद शास्त्री "सावित्रेय"
B. Sc. धर्मरत्नश्चविशारदः शास्त्री (गी०)
L. B.B.A वेदानुसंधाधाताश्चवेदोपदेशक
स्वामी श्रद्धानन्द पथ, रांची- १

"अनुप्रत्नास प्रश्नायव; पदं नवीयो अक्रमुः ।
रुचं जनन्त सूर्यम्" ।। (सामवेद ६।२।६)

स्वयं विधाता हो ते मानव,
अंतर में विश्वास जगाओ।

चलो न मिटते पद चिन्हों पर,
अपने रास्ते आप बनाओ ।

नई प्राण प्रतिभा से जागृत,
अपने सूर्य आप बन जाओ।

निम्न मंत्र पर दृष्टिपात करने से ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें विज्ञान की महत्वपूर्ण बातें निहित हैं । इस मंत्र का देवता सरस्वान सूर्य है । इसे पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता है कि मैंने अपनी योग्यतानुसार इस विषय को स्पष्ट करने का प्रयास किया है । मंत्र इस प्रकार है—

"दिव्यं सुपर्णं वायसं बृहन्तमपां
गर्भं दर्शतम् ओषधीनाम् ।
अभीपीतो वृष्टिभिस्तर्पयन्तं
सरस्वन्तमवसे जोहवीमि" ॥

(ऋग्वेद १ । १६४ । ५२)

सरस्वान अथवा सूर्य का अभिप्राय है 'रसयुक्त सूर्य' सूर्य की रश्मियाँ औषधियों में रस भर देती है । इसके रहस्य पर ही यह मंत्र कहा गया है ।

दिव्यगुणयुक्त सूर्य रश्मियाँ अपने भीतर स्थित बडे अर्थात् 'आपः' अभिप्राय महत् को औषधियों (वनस्पतियों) में बरस कर तृप्त करती है और रसयुक्त करती हैं । औषधियों और वनस्पत्तियाँ इस 'आपः से अपनी रक्षा ग्रहण करती हैं । इस मंत्र में 'दर्शतम्' से अभिप्राय है चाँद । रसमय सूर्य किरणों में स्थित 'आपः' के कारण है । यह देखने में ही रसमय नहीं है, प्रत्युत सूर्य किरणें इससे परिवर्त्तित होकर वनस्पतियों में रस भर देती हैं । वेद में कहा है कि किरणों में स्थित 'आपः' के कारण ही है ।

मंत्र में 'वृष्टिभिः' शब्द से तात्पर्य जल की वर्षा नहीं वरन् 'आपयुक्त' किरणों की वर्षा से हैं । ये किरणें जब वनस्पतियों पर पड़ती हैं तो उनमें एक विशेष प्रकार की शक्ति का संचार करती हैं जिससे वनस्पत्तियों में वे पदार्थ बन जाते हैं जो बिना सूर्य की किरणों के नहीं बन सकते । उदाहरणार्थ वनस्पतियों के पत्तों में पर्ण (Chlorophyll) सूर्य किरणों को ग्रहण कर वनस्पत्तियों में ऐसे पदार्थों का निर्माण करते हैं जो बिना इन साधनों के कहीं बन नहीं सकते ।

कार्वोहाइड्रेस और जटिल एमीनज सूर्य किरणों के प्रभाव के बिना नहीं बन सकती ।

'वेद' कहता है कि सूर्य किरण अपने गर्भ में 'आपः' लिए हुए आती हैं और वे वनस्पतियों को रसयुक्त कर देती हैं। यही कारण है कि 'वेद' में रश्मि एवं 'रे' का अर्थ प्रकाश है। "क्योंकि किरणें रसों को खींचती है और प्रकाशित भी करती हैं" "रसां आरोहति इति रश्मि"।

ये गुण इनके वैज्ञानिक कारण प्रस्तुत करती हैं। वनस्पति-विज्ञान-शास्त्री कहते हैं कि सूर्य की किरणें पादप में प्रकाश संश्लेषण (फोटो सिंथेसिस्) के हेतु महत्वपूर्ण कारक (फैक्टर) हैं। इन्ही की उपस्थिति में शर्करा (ग्लूकोज एवं फ्रक्टोज) का निर्माण सम्भव है। पादप में संचालित प्रकाश संश्लेषण से हो इस धारा पर जीवन स्थापित है। ऊर्जारहित कार्बन-डाइऑक्साइड एवं जल प्रकाश की उपस्थिति में पर्ण हरित के द्वारा ऊर्जा पूर्ण शर्करा का निर्माण करते हैं। इस प्राथमिक रूप से खाद्य पदार्थ में ऊर्जा का संचय प्रकाश संश्लेषण क्रिया के द्वारा ही सम्पादित होता है जिसमें सूर्यांशु (Sunlight) का मुख्य स्थान है।

जल तथा जल में घुलित लवणों का अवशोषण भी उत्स-वेदन क्रिया (Transpitaion) पर बहुत कुछ निर्भर है। इसीलिये आवश्यक रासायनिक कार्बनिक पदार्थों के निर्माण के लिये जल का अवशोषण पादप में उत्सवेदन क्रिया के द्वारा ही सम्भव है। उत्सवेदन क्रिया में रन्ध्रों (Stomatas) का खुलना एक मुख्य व्यवस्था है जो कि सूर्याभा (Sunlight) पर निर्भर करता है। अतः रसाकर्षण, जलावशोषण (Absorption) प्रकाश संश्लेषण (Phorosynthesis) दोनों के लिये 'रश्मि' (Roy of Sunlight) ही मुख्य स्रोत है।

यह लेख लिखने का प्रयास सफल हुआ अथवा असफल इसका निर्णय अन्य विद्वानों के लिये छोड़ता हूँ। यदि यह-लेख किसी विद्वान् के हाथ में पहुँचे और वह इसमें किसी प्रकार की त्रुटि अथवा अभाव देखें तो आशा है वह मुझे सूचित करने का कष्ट करेंगे, जिससे मैं उस त्रुटि अथवा अभाव को दूर कर सकूँ।

"रक्षा बंधन"

अर्थात् प्रेम की धागों में बाँधना

श्री देवेंद्र प्रसाद शास्त्री "सावित्रेय"
B. Sc. धर्मरत्नश्चविशारदः शास्त्री (गी०)
L. B.B.A वेदानुसंधाधाताश्चवेदोपदेशक
स्वामी श्रद्धानन्द पथ, रांची- १

भरतीय सांस्कृतिक परम्परानुसार श्रावणी पूर्णिमा के दिन "वेद" की रक्षा और जनजीवन में स्वाध्याय भावना को विकसित करने की दृष्टि से विशेष पर्व मनाया जाता है। प्राचीन आर्य शास्त्रों में 'श्रावणी उपाक्रम' 'ऋषि-तर्पण के नाम से इस महान् पर्व का वर्णन मिलता है। कालान्तर में इसी पर्व को राखी, रक्षाबंधन, सलोनो, सनीनो आदि नाम से पुकारा जाता है, उसका संक्षिप्त विवरण नीचे दे रहा हूँ।

श्रावणी नाम कैसे ?

भारतीय ज्योतिष के अनुसार किसी भी मास की पूर्णिमा खास नक्षत्र के दिन होता हैं। सत्ताईस (२७) नक्षत्र है। जब चन्द्रमा घूमते हुए जिस नक्षत्र में आ गया तब उसीं नक्षत्र के नाम पर उस मास का नाम रक्खा गया है। जैसे श्रावण मास की पूर्णिमा 'श्रवणा नक्षत्र' में होता है।

"श्रावणी पर्व"

श्रावण मास की पूर्णिमा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस मास के पर्व को "श्रावणी पर्व" या "श्राबणी उपाकर्म" कहा जाता है। इस पर्व में दो प्रधान उद्देश्य अन्तर्निहित हैं। प्रथम तो वेदों की रक्षा और दूसरा वचन की रक्षा।

'रक्षा' शब्द का विशेष तात्पर्य, 'वेद-रक्षा' से है। महर्षि पतंजलिने 'रक्षा' शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा - "रक्षा- रक्षार्थ वेदानमध्येयं व्याकरणम्" वेदार्थ रक्षा के लिये व्याकरण की भी जानना आवश्यक है। इसी लिये व्याकरण को वेद का मुख कहा गया है। इसी हेतु "श्रावणी पर्व" के दिन यज्ञ करके वेद का स्वाध्याय करना चाहिए। वेदारंभ श्रावण का श्रावणी विशेष पर्व हुआ। कहा भी गया है— "श्रवणेन स्वाध्यायानुपाकरोति आचार्योऽन्तेवासिनां योगमिच्छन् जपति। ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि ब्रह्म वदिष्यामि। ओ३म् भू र्भुवः स्वरितितिः सावित्रीमधीते॥"

(वराह गृह सूत्र)

अर्थात् :— श्रावण नक्षत्र को लक्ष्य करके आचार्य शिष्यों के सम्बंध को चाहता हुआ स्वाध्यायों को वेद के पठन-पाठन से प्रारम्भ करता है। पुनः संकल्प करता है कि ऋत-ज्ञान का उपदेश करुँगा। सत्य, आचरण, सद्व्यवहार का उपदेश करुँगा। एवं शिष्य भी व्रत ग्रहण करता है, ऋत-ज्ञान का ग्रहण करुँगा, सत्य, सत्याचरण, सद्व्यवहार का ग्रहण करुँगा, ब्रह्म (परमात्मा) का ग्रहण करुँगा।

इस पर्व की महत्ता का वर्णन सूत्र ग्रन्थों, गृह-सूत्रों, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में उपलब्ध है। इस पर्व में स्वाधाय का विशेष महत्व है। अतः अध्ययन-अध्यापन का मुख्य वर्ण ब्राह्मण कहलाने पर इससे अग्रजन्मा, द्विजन्मा, ब्राह्मणों का विशेष सम्बन्ध है। इस पर्व को स्वाध्याय का पर्व कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि इस पर्व में स्वाध्याय की सर्वोपरि प्रधानता और महिमा का बार-बार वर्णन किया गया है।

"श्रावणी महत्व"

हमारे प्राचीन आर्य शास्त्रों में इस पर्व के विषय में विशद वर्णन पाया जाता है। लिखा है कि—

"श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां वाप्यु या कृत्य यथाविधि ।
युक्त छन्दास्यधीपति मासान विप्रोंऽर्ध पञ्चमान् ॥
पुण्ये तु छन्दसा कुर्याद्बहिरुत्सर्जनं द्विजः ।
माघ शुल्कस्य वा प्राप्ते पूर्वाद्धे प्रथमेऽहनि ॥

मनुस्मृति ४ । ९५, ९६

भावार्थ :— ब्राह्मणादि श्रावणी पूर्णिमा को उपाकर्म करके साढे पाँच मास तक वेदाध्ययन करें जब पुष्य नक्षत्र आवे पौषी को वेद का उत्सर्जन नामक कर्म ग्राम के बाहर जाकर करें ।

श्रावण्यां पौर्णमास्या मासादस्याँ वोषाकृत्यतेषाँ माध्याँवोत्सृजेत् । बोधायन स्मृति चंद्रिका

भावार्थ :— श्रावण पूर्णिमा को उपाकर्म आरम्भ करे ।

तत्र वह पृचानं श्रावण शुक्ल पक्षे श्रवण नक्षत्रः ।
श्रावण पौर्णः मासौ मुख्य कालः ॥ (धर्मसिन्धु परि० २)

भावार्थ :— श्रावण शुक्ल पक्ष, श्रावण नक्षत्र, पौर्णमासी उपाकर्म का मुख्य काल है ।

अधातोऽध्योपाकर्म औषधीना प्रादुर्भावे श्रवणेन श्रावण्यां पौर्णमास्यां श्रवणस्य ॥ (पारस्कर गृहसूत्र क० २ क० १०)

भावार्थ :- औषधियों के उत्पन्न होने पर श्रावण पूर्णिमा को उपाकर्म करें । श्रावण में उत्पन्न होतीं है ।

अध्यायाना मुपाकर्म श्रावण्यां श्रवणेन वा । हस्तेनौषधि भावे वा पंचम्यां श्रावणस्यतु ॥ (याज्ञवल्क स्मृति ४२)

भावार्थ :- वेद पढ़ने की उपाकर्म विधि श्रावण मास की पूर्णिमा, श्रावण नक्षत्रयुक्त तिथि औषधि उत्पन्न होने पर करे ।

वर्षासु श्रवणेनाध्यायानुपकरोति । (लोगक्षि का० ८ । क० ६)

वर्षा ऋतु की श्रावण पूर्णिमा को उपाकर्म करें ।

यस्याग्निहोत्र मदर्शमपौर्णमासम् चातुर्मास्य वर्जितम् सप्तमांस्तस्य लोकान्हिनस्ति । (मुण्डकोपनिषद्)

भावार्थ :— अग्निहोत्र पूर्णमासी चातुर्मास (श्रावणी) का न करने से सात लोकों का नाश होता है ।

अतः उपरिलिखित प्रमाणों से स्पष्ट प्रमाणित होता है की यह पर्व वेद वेदांगों के गहन अध्ययन का पर्व है ।

वेद की महत्ता

आकरः सत्य विद्यानां वेदैवै सनातनम् ।
ज्ञानविज्ञानधर्माणां चरित्रस्योपदेशकः ॥

निश्चय ही 'वेद' सत्य विद्याओं का अक्षय, सनातन भण्डार है । इतना ही नहीं, ज्ञान, विज्ञान, धर्म तथा चरित्र का उपदेशक है ।

'वेद' ही मानव जीवन को उत्थान करने वाला है । असत् से सत् की ओर, अनृत से ऋत की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने वाला है । पतन से उत्थान की दिशा में, जड़ता से चैतन्य की दिशा में और प्रगति की ओर प्रेरणा देने वाला है ।

हृदय की क्षुद्रता को मिटाकर उसको विशाल बनाने का संकुचित जातिवाद के गर्त्त से मानव को निकाल कर विश्व बन्धुत्व का पावन पाठ पढ़ाना वेद का कार्य है । दम्भ, मिथ्याभिमान एवं अज्ञान पर अवलम्बित अस्पृश्यता की कलुषित भावनाओं का तिरस्कार कर जन-जन के प्रति प्रेम का प्रसार करने का आदेश हमें 'वेद' देने वाला है । श्रावणी पर हमें अपने-अपने हृदयों को टटोलना और देखना है कि कहीं अस्पृश्यता की नीच भावनायें तो उस में घर नहीं किये हुए हैं ।

क्रमशः —

शोक समाचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली- ११०००१

समस्त आर्य जगत को सुचित करते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि आर्य समाज के तपोनिष्ठ वयोवृद्ध ज्ञानी पिण्डी दास जी का आज सायँ ६-३० बजे अमृतसर में देहान्त हो गया है। ८४ वर्षीय ज्ञानी जो ने अपना समस्त जीवन आर्य समाज तथा डी० ए० वी० संस्थाओं के लिये दिया हुआ था। वह गत एक माह से पक्षाघात से पीड़ित थे। मृत्यु शैय्या पर पडे हुए भी वह आर्य समाज की उन्नति के लिये ही सोचते रहते थे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा उनकी मृत्यु पर शोक प्रकट करती हुई उन्हें हार्दिक श्रधांजली अर्पित करती है।

समस्त आर्य समाजों तथा डी० ए० वी तथा अन्य आर्य संस्थाओं से अनुरोध है कि वे अपने यहां शोक सभाएं आयोजित कर स्वर्गीय ज्ञानी जी कीं दिवंगत आत्मा को सद्-गति के लिये प्रार्थनाऐं करें तथा शोक प्रस्ताव पारित कर उनके सुपुत्र श्री ओम प्रकाश जी २।६ दुर्ग्याणा अमृतसर पंजाव तथा प्रतिलिपि सभा कार्यालय को भेजें।

—: भवदीय :—

सूरज भान
प्रधान

रामनाथ सहगल
मन्त्री

आर्य समाज बिकानेर का वार्षिकोत्सव

बीकानेर १० सितम्बर विक्रमी संवत् २०३४ आसोज कृष्ण अष्टमी बुध से द्वादशी रविवार (५ से ६ अक्टूबर) तक पाच दिवसीय वार्षिकोत्सव बिकानेर नगर आर्य समाज की ओर से रेल्वे स्टेशन के सामने डागों के मैदान में होगा जिसमें वेद मर्मज्ञ आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, भूतपूर्व संसद पं० शिवकुमार शास्त्री और बरेली की विदुषी पण्डिता सावित्री देवी आचार्या तथा अजमेर के सुपरिचित संगीतज्ञ श्री पन्नालाल 'पीयूष' आदि पधार रहे हैं ।

उक्त प्रांगण में प्रातः सायं हवन, उपदेश, कथादि के अलावा दोपहर में शाला, विद्यालय व महाविद्यालयों तथा गोष्ठियों में भी ये कार्य विद्वान छात्र-छात्राओं व युवावर्ग को संबोधित करेगें तथा पारिवारिक सत्संगों में भाग लेगें ।

वेद और आर्य सिद्धान्तों के प्रति प्रस्तुत शंकाओं का समाधान किया जायगा । सर्वधर्म सम्मेलन अथवा शास्त्रार्थ आयोजन के प्रयास भी चल रहे हैं ।

आर्य समाज
महर्षि दयानन्द मार्ग
बीकानेर- ३३४००१

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

मन्दिर मार्ग नई दिल्ली- ११०००१

सार्वदेशिक सभा के आदेश तथा प्रादेशिक सभा के आह्वान पर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, स्त्री समाजों, डी० ए० वी० तथा अन्य आर्य संस्थाओं ने ४ से ११ सितम्बर तक गो रक्षा व मद्य निषेध सप्ताह मनाया तथा रविवार

११ सितम्बर को प्रदर्शन में जिस उमंग तथा उत्साह में भाग लेकर जन-जागृति का परिचय दिया वह अत्यन्त सराहनीय है।

सभा आप की संस्था के सभी कार्य कर्त्ताओं को हार्दिक धन्यवाद देती है तथा आशा करती है कि भविष्य में सभा द्वारा आयोजित सभी कार्य-क्रमों में इसी प्रकार भाग लेकर तथा प्रधान मंत्री श्री मोरार जी देसाई द्वारा निर्देशित गौ रक्षा एवं मद्य-निषेध कार्य-क्रम को जन-जन तक पहुँचा कर आर्य समाज के गौरव को बढ़ायेगें।

—: भवदीय :—

सूरज भान
सभा प्रधान

रामनाथ सहगल
सभा मन्त्री

दरबारी लाल
उप सभा प्रधान

गिरीश चन्द्र खोसला
उप सभा मन्त्री

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल वैदिकाश्रम में वेद सप्ताह पालन

गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास में २९ अगस्त से ५ सितम्बर तक प्रतिदिन रात्रि ७-३० से ८-३० तक वेदोपदेश होता था।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी और गुरुदिवस पालन

गुरुकुल वैदिकाश्रम, वेदव्यास में दि० ५-९-७७ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी तथा गुरुदिवस ब्रह्मचारी एवं अध्यापकों ने मिल-

कर समारोह के साथ पालन किया गया। जिसमें पं० देवव्रत अध्यापक प्रसन्न कुमार पृष्टि, अध्यापक शचिन्द्र कुमार स्वाई पं. देशबन्धु विद्यावाचस्पति आदि विद्वानों ने आधुनिक भारत के लिये श्री कृष्ण जी का उपदेश कितना जरुरत है, यह छात्रों के सामने रखा।

संस्कृत दिवस पालन

उत्कल संस्कृत परिषद वेदव्यास की और से इस्पात हाईस्कूल १८ नं सैक्टर में राउरकेला शिक्षाधिकारी जी के अध्यक्षता में दि० १०-६-७७ को बडे समारोह के साथ पालन किया गया। जिसमें संस्कृत पत्रिका, दुर्लभ संस्कृत पुस्तकों का प्रदर्शनी भी रखा गया था। साथ ही विभिन्न उच्च विद्यालय और गुरुकुल छात्रों का संस्कृत भाषण तथा श्लोकान्तक्षरी पृतियोगीता हुई थीं अंत में पृतियोगीता में पृथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को पुरस्कार दिया गया था।

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी का प्रचार कार्य

पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के द्वारा श्रावणी पर्व के अवसर पर आर्य समाज कोरवा (मध्य-प्रदेश) में दि० २६-८-७७ और २७-७ ७७ को वेद कथा हुआ था।

शोक-सम्वाद

वनवासी विद्यासभा (गुरुकुल वैदिकाश्रम, वेदव्यास) का प्रधान श्री युक्त शशीभूषण पाणिग्राही दि० ११-६-७७ को आकस्मिक नदी के बाढ़ में वह जाने के कारण स्वर्गवास हो गया। तदर्थ गुरुकुल वासी ऐसे एक परम हितैषीं गुरुकुल प्रेमी को खो कर शोकातुर है। दि० १२ ६-७७ को सायं प्रार्थना सभा में एक शोक संवेदना प्रकट किया गया।

"वनवासी-सन्देश" तथा गुरुकुल के सभी सदस्य प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति तथा शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

प्रकाशक— स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा शान्ति आश्रम प्रेस, गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास, राउरकेला - ४ में मुद्रित ॥

ओ३म्

★ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ★

वनवासी सांस्कृतिक समिति, वेदव्यासस्य,
मासिकं मुख-पत्रम्

वनवासी संदेश

संस्थापक :- स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

जन्म
सम्वत् १८८१ वि० (सन् १८२४)

महा प्रयाण
सम्वत् १९४० वि० कार्तिक अमावस्या (दीपावली) की सायं काल ६ बजे लगभग अजमेर में ३० अक्टूबर १८८३ ई०

संपादक	सह- संपादक
पं० आत्मानन्द शास्त्री	पं० देशबन्धु विद्यावाचस्पति

महर्षि दयानन्द के प्रेरक वाक्य

- विश्व की विचित्र रचना ही उस विश्व के रचयिता को सिद्ध कर रही है।
- परोपकार और परहित करते समय अपने मानापमान और परायी निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है।
- जो-जो बातें सब के अनुकूल सब में सत्य है, उनको ग्रहण और जो विरुद्ध है उनका त्याग करें तो जगत् का पूर्ण हित हो।
- नैतिक, सामाजिक एवं मानसिक दासता से मुक्त हो।
- मतान्धता एवं अन्धविश्वासों से मानव-जाति का त्राण हों।
- दुष्ट व्यसनो में फंसने से मर जाना अच्छा है।
- सज्जनों का धन औरों के सुख के लिये और दुष्टो का धन औरों के दुःख के लिये व्यय होता।

—●—

वनवासी—सन्देश

उत्कल जनता संस्कृति रक्षा बद्धकटिस्तम: स्तोमहृतिदेश:
गुरुकुल सुपानपोषादुदयति वनवासी संदेश: ॥
यो भ्रष्ट खीष्टमत दीक्षित मज्ञलोकम
संस्कृत्य दूरयति तद्धृदयांधकारम् ॥
श्री वेदव्यास सुगुरा कुल सन्निवेश:
सम्पूर्वादेरुदयते वनवासी सन्देश: ॥

वर्ष ११ अंक ११	नवम्बर १९७७	वार्षिक मूल्य ५ रु एक प्रति ५० पैसे

वेदोपदेश
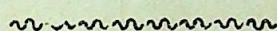
ओ३म्। प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो
बहुधा विजायते ।
तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह
तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥
य० ३१।१९

(प्रजापतिः) प्रजापति = समस्त सृष्टि का पालक भगवान् (गर्भे + अन्तः) गर्भ में, प्रकृति में, संसार में (चरति) विद्यमान है। वह (अजायमानः) जन्म न लेता हुआ (बहुधा) अनेक प्रकार से (विजायते) प्रकट होता है, प्रकाशित होता

है । (धीराः) ध्यानीजन ही (तस्य) उसके (योनिम्) ठिकाने को (परिपश्यन्ति) सर्वत्र देखते हैं । और (तस्मिन्) उसमें (ह) ही (विश्वा) सब (भुवनानि) लोक (तस्थुः) ठहरे हैं ।

संसार का उत्पन्न करने वाला कहाँ रहता है, उसके स्थान का अनुसन्धान हो रहा है । कोई उसे कहीं बताता है और कोई कहीं । वेद कहता है – (प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः) प्रजापति गर्भ के भीतर रहता है । अर्थात् वह प्रत्येक पदार्थ के अन्तस्तल में विराजमान है । कहीं यह भ्रम न हो जाये कि जब वह गर्भ में विचरता है तो किसी दिन जन्म भी लेगा, इसका उत्तर दिया है—

(अजायमानः) जन्म न लेता हुआ । तब उसका ज्ञान मनुष्य को कैसे हो, इसका समाधान करने के लिये कहा— (वहुधा विजायते) नाना प्रकार से यह प्रकट होता है । नित्य नूतन सृष्टि का सर्जन, नित्य संहार, नित्य पालन, विचित्र उपायों से रक्षण भगवान की सत्ता के प्रमाण हैं ।

प्रकृत जन कहता है, हमें झमेले में मत डालो, हमें उसका ठिकाना बताओ, हम उससे मिलना चाहते हैं । इसके उत्तर में कहा—

(तस्य यौनिं परिपश्यन्ति धीराः) ध्यानि जन उसका ठिकाना सर्वत्र देखते हैं ।

अर्थात् भगवान् ध्यानगम्य है । आँख, नाक, कान उसको नहीं देख पाते । ध्यान से उसके स्थान का सर्वत्र भान होता है । अर्थात् किसी स्थान-विशेष में नहीं रहता, प्रत्युत् सब जगह रहता है । संध्या में नित्य पढ़ते ही है (आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थूषश्च) स्थावर जङ्गम का आत्मा, सबका गतिदाता भगवान् त्रिलोकी में भरपूर समा रहा है ।

केवल इतना ही नहीं कि वह सब में समा रहा है, वरन्—

(तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा) उसमें सब भुवन स्थित हैं । यजु० ३२।४ में पुरुष = व्यापक भगवान् के सम्बन्ध में क्या ही सुन्दर कहा है—

एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः
पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः ।
स एव जातः स जनिष्यमाणः
प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः ॥

यह भगवान् सब दिशाओं विदिशाओं में विराजमान है वह सबसे पूर्व विद्यमान था, वह गहराइयों में है वह प्रसिद्ध था, है और होगा । प्रत्येक पदार्थ में रहता हुआ वह सर्वतोमुख है ।

अर्थात् कोई स्थान ऐसा नहीं, जहाँ भगवान् नहीं । कोई काल ऐसा नहीं, जब भगवान् न हो, सब स्थानों और सब कालों में रहने वाला कैसे एक स्थान या काल के बन्धन में आये ।

—:–

स जात येन ज़ातेन याति देश समुन्नतिम्

जो जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु सुनिश्चित। जो व्यक्ति आज जन्म हुआ है, वह कल निश्चय मृत्यु को वरण करेगा, यह सृष्टि का चिरन्तन सत्य नियम है। मोति माणिक्य से परिपूर्ण राजमहल के राजकुमार, मैलेचिथडे कपड़ों से बेढ़ा हुआ नंगा फकिर, ज्ञानी, महापुरुष, अज्ञानान्धकार से घृणित पुरुष सभी मृत्यु की यज्ञवेदी पर साम्यवाद की डिण्डिमघोष करते है. यही है सृष्टि की वैचित्र, इसी से सृष्टि की वास्तविक समीक्षा ज्ञात होती है।

किन्तु …विश्व की इतिहास में वही व्यक्ति का जीवन सफल माना जाता है, जो व्यक्ति देश, जाति, और धर्म के कल्याण निमित्त अपने जीवन को उत्सर्ग कर देता है। उन्हीं महापुरुषों के आत्मोत्सर्ग, आत्मबलिदान जनता में नव-

में एक गौरवोज्वल पृष्ठ मंडन करता है। जब समाज में आत्म बलिदान की भावना पुनः जागृत होती है, तभी समाज उन्नत पथ का पथिक बनता है। अन्याय, अत्याचार जब अपना सीमा उलङ्घन करता हुआ आगे बढ़ता हैं, तब उस समय कोई महापुरुष मृत्यु की छाती पर पैर रखते हुए सृष्टि की सब कुछ निर्यातना को अपना लेता है।

इतिहास के पन्ना उलटाने से इसी प्रकार अनेक त्याग और आत्मबलिदान की गाथा देखने को मिलती है। निस्पेसित दलित यहुदियों की आंखों में जलकणों को पोछने के लिये पतितों के त्राणकर्त्ता ईसा मसीह अपने जीवन को बलिवेदी पर उत्सर्ग करके एक नूतन पथ का दिग्दर्शन कराये थे। रुस में जारों के अत्याचारों से ही रुस के कृषकों ने उन्नति की। यहां तक मामला बढ़ा कि "जारड़म" का खातमा हो गया और रुस के बोलशेविक गवर्नमेन्ट की स्थापना हो गई। फ्रान्स्, इटलि, जर्मनि और भारत इत्यादि देशों के अतीत इतिहास में इसी प्रकार आत्मोत्सर्ग की अनेक गाथा देखने को मिलती है।

आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम् ।
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्तमिव सर्वतः ॥

महर्षि मनु महाराज ने प्रलय दशा में स्थित संसार का जो चित्र ऊपर के श्लोक में खींचा है, अब से कुछ समय पूर्व ठीक ऐसी ही दशा वैदिक धर्म और आर्य (हिन्दू) जाति तथा आर्य राष्ट्र (भारत) की थी। अविद्यान्धकार की घनघोर घटा, आर्य जाति और उसके चिर सहचर "वैदिक धर्म" कुछ इस प्रकार छाई हुई थी कि उस सूची भेद्यान्धकार में कुछ भी न सुझता था। चारों ओर शून्य ही शून्य था, धर्म और जाति के लक्षण, स्वरुप, गौरव, महत्व और मर्यादादि सब तमोभिभूत होकर विलीनता को प्राप्त हो रहे थे। इस

स जात येन ज़ातेन याति देश समुन्नतिम्

जो जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु सुनिश्चित। जो व्यक्ति आज जन्म हुआ है, वह कल निश्चय मृत्यु को वरण करेगा, यह सृष्टि का चिरन्तन सत्य नियम है मोति माणिक्य से परिपूर्ण राजमहल के राजकुमार, मैलेचिथडे कपड़ों से बेढ़ा हुआ नंगा फकिर, ज्ञानी, महापुरुष, अज्ञानान्धकार से धृणित पुरुष सभी मृत्यु की यज्ञवेदी पर साम्यवाद की डिण्डिमघोष करते है. यही है सृष्टि की वैचित्र, इसी से सृष्टि की वास्तविक समीक्षा ज्ञात होती है।

किन्तु …विश्व की इतिहास में वही व्यक्ति का जीवन सफल माना जाता है, जो व्यक्ति देश, जाति, और धर्म के कल्याण निमित्त अपने जीवन को उत्सर्ग कर देता है। उन्हीं महापुरुषों के आत्मोत्सर्ग, आत्मबलिदान जनता में नव-

[illegible] में एक गौरवोज्वल पृष्ठ मंडन करता है। जब समाज में आत्म बलिदान की भावना पुनः जागृत होती है, तभी समाज उन्नत पथ का पथिक बनता है। अन्याय, अत्याचार जब अपना सीमा उलङ्घन करता हुआ आगे बढ़ता हैं, तब उस समय कोई महापुरुष मृत्यु की छाती पर पैर रखते हुए सृष्टि की सब कुछ निर्यातना को अपना लेता है।

इतिहास के पन्ना उलटाने से इसी प्रकार अनेक त्याग और आत्मबलिदान की गाथा देखने को मिलती है। निस्पेसित दलित यहुदियों की आंखों में जलकणों को पोछने के लिये पतितों के त्राणकर्त्ता ईसा मसीह अपने जीवन को बलिवेदी पर उत्सर्ग करके एक नूतन पथ का दिग्दर्शन कराये थे। रुस में जारों के अत्याचारों से ही रुस के कृषकों ने उन्नति की। यहां तक मामला बढ़ा कि "जारड़म" का खातमा हो गया और रुस के बोलशेविक गवर्नमेन्ट की स्थापना हो गई। फ्रान्स्, इटलि, जर्मनि और भारत इत्यादि देशों के अतीत इतिहास में इसी प्रकार आत्मोत्सर्ग की अनेक गाथा देखने को मिलती है।

आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम् ।
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्तमिव सर्वतः ॥

महर्षि मनु महाराज ने प्रलय दशा में स्थित संसार का जो चित्र ऊपर के श्लोक में खींचा है, अब से कुछ समय पूर्व ठीक ऐसी ही दशा वैदिक धर्म और आर्य (हिन्दू) जाति तथा आर्य राष्ट्र (भारत) की थी। अविद्यान्धकार की घनघोर घटा, आर्य जाति और उसके चिर सहचर "वैदिक धर्म" कुछ इस प्रकार छाई हुई थी कि उस सूची भेद्यान्धकार में कुछ भी न सुझता था। चारों ओर शून्य ही शून्य था, धर्म और जाति के लक्षण, स्वरुप, गौरव, महत्व और मर्यादादि सब तमोभिभूत होकर विलीनता को प्राप्त हो रहे थे। इस

जाति और धर्म की दशा यद्यपि महाभारत के पीछे से ही बिगड़ने लगी थी, इस महारात्री का प्रदोष के और महा प्रलय का प्रारम्भ उसी समय आरम्भ हो चुका था, भारत लक्ष्मी और सरस्वती देवी तभी यहां से सदा के लिये अपने लट्टू पट्टू बान्ध कर चल खड़ी हुई थी, धर्मदेव अपना सब सामान पहले से ही पैक कर चुके थे। अंत में स्वयं ही चलते बने। काल रात्री के उस अन्धकारावृत्त आकाश में कभी-कभी चन्द्रालोक और तारों की चमक से कुछ प्रकाश दिखलाई देता रहा। कई बार समय समय पर वह इस तेजी से चमका कि दिन का धोखा होने लगा, किन्तु फिर इकबारगी ऐसा घटाटोप अन्धेरा छाया कि "गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः" के समान उसे किसी से भी उपमा नहीं दे सकते। वह अपनी मिसाल आप ही थे। विदेशी सभ्यता, संस्कृति, विभिन्न मतवाद जाति-वाद, कुसंस्कार से जकडे थे। दासता की जंजीरों से जकडे हुए किसी उद्धारक की खोज में थे। आर्य (हिन्दू) जाति धड़ाधड़ ईसाई, मुसलमान होते जा रहे थे। यहां पर अछूत जाति को पक्की हरी भरी खेती समझकर ईसाई, मुसल्मान काट रहे थे। ऐसे समय में भारत के भाग्याकाश में देवदूत सदृश महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ।

१६ वीं शताब्दी के इतिहास की ओर से ध्यान देने से पता चलता है कि उस शताब्दी का सब से ऊंचा और शिरोमणि नेता तथा देशोद्धारक महर्षि दयानन्द ही थे। जब ऋषि दयानन्द ने कार्य प्रारम्भ किया, भारत घोर निद्रा में सोया हुआ था। दयानन्द ने उस निद्रा से लोगों को जगाया, बहुत कम जागे, दूसरों ने जागने से इन्कार किया। दयानन्द ने उनको झंझोडा। सारा हिंदू समाज दयानन्द के विरुद्ध उठा, दयानन्द इस बात से प्रसन्न हुए कि ये निद्रा से तो उठे। दयानन्द ने गर्जना की। उस सिंह गर्जना को सुनकर रोम के भव्य मीनार गूंज उठा। लोग उस सिंह की गर्जना से भयभीत हुए। लोग उनको सुनने के लिये तैयार हुए, फिर भी उन्होंने दयानन्द का विरोध किया। परन्तु हृदय से वे दयानन्द की युक्तियों से प्रभावित हुए। दयानन्द ने भारत की

जड़ों तक हिलायी, जड़ों को नंगा कर दिखलाया और बतलाया कि जिनके आधारशिला पर तुम इतना अभिमान करते हो वह बोसीदा और सड़ी हुई है। दयानन्द ने उन जड़ों को हिला कर तोड़ दिया और फिर नये सिरे से वेद रूपी आधारशिला पर नव भारत का निर्माण किया। महर्षि दयानन्द सब से पूर्व देश-प्रेम और देशभक्ति का उपदेश दिया। जातिवाद, पाखण्ड तथा अविद्यान्धकार के विरुद्ध स्वरोत्तलन किया। जिस के फल स्वरूप पौराणिक पाण्डे, पुजारी, ईसाई, मौलवी तथा ब्रिटिश सरकार उनके विरुद्ध हो गये। सत्यार्थ के प्रकाश के लिये अनेक बार विषपान किये, उनके ऊपर पत्थर वर्षा हुई। अंत में विक्रमी १९४० दीपावली के सायं ६ बजे तदनुसार ३० अक्तूबर १८८३ को उत्कट विष पान तथा अंग्रेज सरकार के कुटनीति षड्यन्त्र के शिकार होकर "हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" कहते हुए इस संसार से सदा के लिये प्राण त्यागे।

महर्षि के बलि दान से प्रभावित होकर हजारों युवकों ने यौवन के सुखों की उपेक्षा कर समाज सेवा की दीक्षा ग्रहण की थी और आर्य विद्वान्, संन्यासी, वक्ता और लेखक बन समाज के कार्य को आगे बढाया था। पं० लेखराम, प० गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानंद हंसराज, लाला लाजपतराय, भगत सिंह विस्मिल, राजपाल, वीर सावरकर आदि जिन्होंने आर्य समाज की वाटिका को रक्त से सींचा था। साथ ही देश और समाज के लिये अपने अमूल्य जीवन को आत्मोत्सर्ग कर दिये थे।

आज प्रत्येक ऋषिभक्त तथा बुद्धिजीवी भारतीयों को इस दीपावली के पावन ऋषि बलीदान महोत्सव पर गम्भीरता से निरीक्षण करना चाहिये कि आज स्वतंत्रता के वाद पुनः भारतीय जीवन पर नैराश्य की घटायें मंडरा रही है। दीपावली के वलिदान से प्रेरणा लेकर महर्षि के पदचिन्हों पर चलते हुए वेदवाद का प्रचार प्रसार तथा स्वराज्य को स्थिर रखने के लिये अन्याय, नैतिकता एवं प्रांतियता, जातियता के विरुद्ध मोर्चा तैयार कर के गुरुड़म तथा पाखंड को समाप्त करने के लिये बिगुल बजाना चाहिये। □

महर्षि दयानन्द जी का जीवन चरित

जन्मस्थान

महर्षि श्री १०८ स्वामी दयानंद सरस्वती जी का जन्म सौराष्ट्र (काठियावाड़) के टंकारा ग्राम के जीवापुर मोहल्ला के एक समृद्ध परिवार में हुआ था ।

जीवापुर ग्राम को जीवामेहता ने बसाया था और स्वामी दयानंद के पिता के पिता श्री लाल जी विश्राम जी को भूमी दी थी। विश्राम जी लाल जी के पुत्र श्री कर्षण तिवाड़ी जी महर्षि दयानंद के पिता थे । जीवापुर ग्राम से टंकारा में आकर बस जाने से उस मोहल्ला का नाम जीवापुर हो गया । टंकारा में श्री कर्षण जी ने गाँव के बाहार नदी के किनारे कुबेर नाथ महादेव का मंदिर बनाया था जो आज भी विद्यमान है और सर्व लोक प्रसिद्ध है । जीवापुर ग्राम में भी कर्षण जी के पिता श्री लाल जी विश्राम जी ने भी गाँव के बाहर नदी के किनारे कुवेरनाथ महादेव का मंदिर बनाया था । उसी का अनुकरण उनके पुत्र श्री कर्षण जी ने किया । गुजुरात में दो नाम रखने का प्रथा है एक सूल नाम दूसरा प्रचलित नाम। कर्षण जी के पिता का सूल नाम विश्राम जी तथा प्रचलित नाम लाल जी था ।

टङ्कारा

सौराष्ट्र (काठिणावाड़) में टङ्कारा एक समृद्ध नगर था, उस की जन संख्या सात आठ सहस्त्र के लगभग थी यह डेमी नदी किनारे था । 'टंकारा' मोरवी राज्य में था, पर कुछ ऋण निर्यातन सम्वंध से सं १८६६ में मोरवी के ठाकुर साहव जियाजी

बाघ जी ने शिव जी को सौंप दिया था । इन श्रेष्ठी (सेठ)

ने सं० १८६८ में टङ्कारा गोपाल मेडेल नारायण भाऊ को दे दिया था । पिता श्री कर्षण जी १८६६ संवत् में भाऊ की ओर में टङ्कारा के मुख्य अधिकारी निर्भय शकर थे और कर्षण जी लाल तिवाड़ी उनके आधीन थे । नागर जी सं० १८६६ मियाणों से लड़ते हुए स्वर्गवासी हुए ।

सं० १८८१ से पूर्व से श्री कर्षण जी टंकारा के जीमेदार (वैभवदार) थे वे राजस्व उधाते थे और सब प्रकार के शासन व्यवस्था अभियोगों का निर्णय आदि भी करते थे । उनकी अपनी पैतृक जमिन्दारी भी पर्याप्त थी और लेनदेन का कार्य भी उच्चस्तर पर करते थे । वे एक एक वार में दश सहस्र मुद्रा ऋण दिया करते थे । वे पूर्ण निष्ठा बान् शैव थे । उनके पूर्वज उत्तर भारत से जाकर उधर वसे थे ।
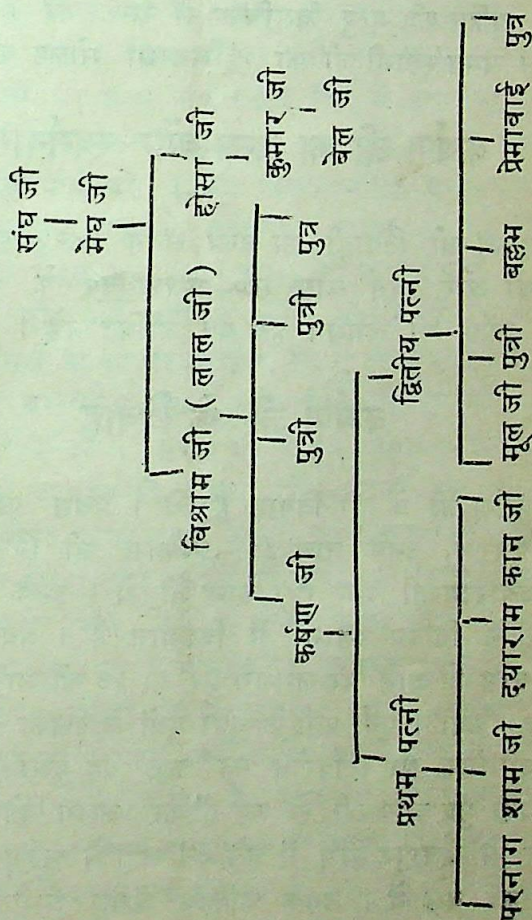
वंश परिचय

महर्षि के पिता दालभ्य गोत्रीय पञ्चप्रवर सामवेदि औदिच्य ब्राह्मण थे त्रिवेदी (तिवाड़ी) नाम से प्रसिद्ध थे।

कर्षण तिवाड़ी जी की दो बहिनें थी जिनका विवाह जामनगर राज्य के हड़ियाना ग्राम में हुआ था। कर्षण जी का एक छोटा भाई और था जिनकी दयानन्द सरस्वती जी के समक्ष मृत्यु हुई थी।

बहिन प्रेमबाई के वंश में लोग जीवित है। एक १४ वर्षीया बहिन की मृत्यु विसूचिका से उनके घर पर रहते हुए ही उस समय स्वामी जी का १६ अवस्था सोलह वर्ष की थी।

कर्षण जी का जन्म और स्वर्गवास

कर्षण जी तिवाड़ी का जन्म संवत् १८२५ के आसपास हुआ था और स्वर्ग वास सं० १६१४ वि० के अनन्तर इस प्रकार कर्षण जी लगभग ६० वर्ष जीवित रहे।

कर्षण जी के विवाह

कर्षण जी के दो विवाह हुए थे। प्रथम पत्नी से उनके चार पुत्र थे, उनके नाम (१) वरणाग जी (२) शाम जी (३) दयाराम जी और (४) कान्ह जी थे। इनके वंशज आज सौराष्ट्र के विविध स्थानों में विद्यमान है। प्रथम पत्नी के स्वर्ग वास हो जाने पर लगभग ५२ या ५३ की आयु में दूसरा विवाह किया। पूर्व पत्नी के युवा पुत्रों ने इसका विरोध किया जो स्वभाविक था। विरोध का फल यह हुआ कि पूर्व पत्नी के चारों पुत्र कर्षण जी से रुष्ट होकर अलग होगये और वे टङ्कारा से जिवापुर ग्राम में चले गये जहां से कर्षण जी टंकारा में आकर बसे थे। उनके कतिपय वंशज अभी भी जीवापुर ग्राम में है परन्तु वे सब निरक्षर भट्टाचार्य है। खेती बाड़ी

करते हैं । कर्षण जी की दूसरी पत्नी जिनका नाम श्रीमती १ यशोदा वाई था जिससे कर्षण जी के पांच सन्तानें हुई सबसे बडे पुत्र का नाम मूल जी दूसरा नाम दयानन्द जी था जिनका जन्म सं० १८८१ वि० फाल्गून बदी (कृष्णपक्ष) १० शनिवार अर्थात् १२-२-१८२५ ई० में मूलनक्षत्र में हुआ था। इस लिये नक्षत्र के नाम एक नाम मूल जी या मूलशंकर पड़ गया जो की पीछे स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम पर प्रसिद्ध हुए । मूल जी से छोटी एक कन्या का सं १८८४ वि० में जन्म हुआ जो हैजा से स्वामी जी सम्मुख ही मर गई थी। इस कन्या से छोटा एक भाई था, उसका नाम बल्लभ जी था, उसका विवाह कर्षण जी ने अपने पूर्वजों की निवास भूमि कच्छ में किया था । वल्लभ जी का पत्नी का नाम 'भोगीवाई' था । वल्लभ जी का जन्म सं० १८८६ वि० में हुआ था। बल्लभ जी से छोटी एक कन्या जिसका जन्म सं० १८८८ वि० में हुआ नाम प्रेमावाई था। इसका विवाह गोंडल नगर के समीपवर्त्ती 'गुन्दीमाड़ू' ग्राम के लीलाधर रावल के पुत्र 'मंगल' जी रावल के साथ हुआ था । कर्षण जी के पूर्व पत्नी के पुत्रों से रुष्ट होने और नई पत्नी के किसी वंशधर के शेष न रहने के कारण मंगल जी को घरजमाई के रूप में अपने पास टंकारा में ही रखलिया था और अपनी स्वोपार्जित टङ्कारा की सम्पत्ति मङ्गल जी को दे दी । मंगल जी के पुत्र बोधा रावल और बोधा जी के कल्याण जी रावल और उनके पुत्र प्रभाशंकर अपर नाम पोपट लाल हुए। इनसे आर्य जगत् परिचित है। और अनेकों ने मथुरा तथा टंकारा की ऋषि दयानंद जन्म शताब्दि के अवसर इनके दर्शन किये । पोपट लाल जी के छोटा भाई का नाम प्राणशङ्कर था । सम्पत्ति का बटवारा होने पर महर्षि का जन्म गृह प्राणशंकर जी के हस्तगत हुआ । उन्होंने उसे 'चक्कूभाई सुन्दर जी' नामक एक व्यक्ति को बेच दिया । पोपट लाल जी को सं० २००४ वि० में स्वर्गवास हो गया । उनके

१- आर्य मित्र दिनांक ८।६।५७ का अङ्क में श्री स्वामी स्वतन्त्रता नन्द जी के आधार पर ।

छः पुत्र हैं और वे सब वांकानेर में रहते हैं। प्रेमाबाई से छोटा पांचवा पुत्र जन्म १८६० से १८६१ में हुआ और अल्पायु ही सं० १८६८ वि० में इस कनिष्ट पुत्र का स्वर्गवास हो गया।

तेजा जी सुतार के प्रपितामह धन जी (तेजा जी के पिता जेठा जी, जेठा जी के पिता लाल जी, लाल जी के पिता धन जी अर्थात् धन जी तेजा जी के पर दादा थे) के समय 'हड़मतिया' में जो सड़क के मार्ग से टंकारा से आठ मील और पगादण्डी से ५ मील है, पेय जल का कष्ट था। धन जी उसका निवारण करने के लिये एक कूप खुदवाने का संकल्प किया। कुआं खोदने के लिये उत्तम स्थान (जहां से मिठा पिने योग्य पानी प्राप्त हो सके) देखने और मुहूर्त्त करने के लिये करसन जी तिवाड़ी जीवापुर से बुला कर लाये। करसन जी ने अपने पण्डिताई के कारण आसपास प्रसिद्ध थे। करसन जी ने आकर कूप के योग्य स्थान देखा और उसका मुहूर्त्त किया कूप का निर्माण सं० १८८५ में हुआ। करसन जी ने कूप के मुहूर्त्त के समय ही यहां शिवालय वनने योग की भी भविष्य वाणी की। काल वितता गया। किसी को करसन जी की भविष्य वाणी का विशेष ध्यान न रहा। किंतु सं० १६०५ में शिवालय का मुहूर्त्त करने के लिये पुनः कर्षण जी को बुलाया। बीच बीच में अनेक बाधायें आती रहने पर भी सं० १८१४ वि० में शिवालय पूर्ण हुआ और कर्षण जी के हाथ से ही मूर्ति प्रतिष्ठापित कराई गई।

शिवालय की दैनिक अर्चना के लिये कर्षण जी के बडे पुत्र वरणाग जी को धन जी जीवापुर से हड़मतिया ले गये। उन्होने मकान और दश एकड़ भूमि देकर वहां ही वसा दिया। यह मकान और भूमि आज भी वराणागजी के वंशधरों के पास है। वाराणग जी के पौत्र त्र्यम्बक लाल जी का पुत्र शिवार्चना करता है त्र्यम्बक लाल जी अभी जीवित है। और आयु लगभग ८० वर्ष की है।

परिचय

(क) रामेश्वर जी की पुत्री के पुत्र श्रीयुत नवलशङ्कर जी राजकोट के प्रसिद्ध वैद्य हैं।

(ख) ईश्वर लाल जी का सं० २००८ २००७ विक्रमी के मध्य अर्थात् आज से छवीस सताईस वर्ष पूर्व स्वर्ग वास हुआ है। इनकी पत्नी हड़मतिया ग्राम में अभी भी जीवित हैं. अति वृद्धा है। इनके घर में जो पुरानी पुस्तकें थी उन्हें जल समाधि दे दी गई।

(ग) हरकांत जी ईश्वर लाल के पौत्र दयाल के पुत्र स्कूल में माष्टर हैं, वाहर रहते हं।

(घ) केसर जी बडे उत्तम वैद्य है। ये बांकानेर से जो हड़मतिया से १२ बारह मील पर है, चले गये थे।

(ङ) नर्मदा शङ्कर भी वैद्य है धाट कपुर वम्बई ३६ में रहते हैं।

(च) त्र्यम्बक लाल जी अभी जीवित हैं, आयु इस समय लगभग ८० अस्सी वर्ष की है। अधिक तर हड़मतिया में रहते हैं।

(छ) दुर्गा शङ्कर जी वैद्य है; राजकोट के समीप वर्ती 'खोखरा' में रहते हैं।

(ज) कान जी के पुत्री कड़वी के पौत्र शिवशङ्कर जी नत्थूराम व्यास गोंडल में निवास करते हैं।

(झ) विश्वनाथ के पुत्र जीवापुर में रहते है।

(ञ) महर्षि दयानन्द के भ्रातुष्पौत्र श्री पं लाभशंकर शास्त्री। श्री प लाभशंकर जी शास्त्री महर्षि के वैमातृक (बड़ी-माता) सब से बडे भ्राता वाराणाग जी के कनिष्ट पुत्र महाशंकर जी के कनिष्ठ पुत्र हैं। श्री वरनाग जी अपने पिता कर्षण □त्रवाड़ी (तिवाड़ी)समान ही अच्छे विद्वान् थे। इस लिये उनके वंश में विद्या प्रेम अभी तक देखने में आता है। श्री शास्त्री जी सम्प्रति मोरवी के राजकीय उच्च विद्यालय में अध्यापन कार्य करते हैं। आपने

□गुजरात में तिवाड़ी को त्रवाड़ी कहते हैं।

काशी में लगभग बारह वर्ष रह कर व्याकरणाचार्य और वेदान्त-शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप अच्छे मिलन सार और उदार प्रकृति के व्यक्ति है।

आपका जन्म १४ अगस्त सन् १८१४ ई० में हड़मतिया ग्राम में हुआ था। आपके पिता श्री महाशंकर जी स्कूल में अध्यापक थे। आपने कई ग्रामों में अध्यापन कार्य किया। अंतिम दिनों में टङ्कारा के समीपवर्त्ती "एहिशालानेक" नाम ग्रामों में रहे। महाशंकर जी के तीन पुत्र हुए (१) हीर जी (२) लक्ष्मी-शङ्कर (३) लाभशङ्कर जी। श्री लाभशङ्कर जी अभी पांच छः वर्ष के ही थे कि उनके पिता जी का अल्पायु में ही स्वर्ग वास हो गया। सब से बडे पुत्र हीर जी स्कूल में मास्टर हो गये। परन्तु उन्होंने अपनी माता के निर्वाह की कुछ भी चिन्ता न की और लक्ष्मी शङ्कर जी विदेश चले गये। इस प्रकार हड़मतिया में लाभशङ्कर जी और उनकी माता दो ही जन शेष रहे। लाभशङ्कर जी ही गृहस्थों के वहां से आटा मांग कर लाते और कुछ छोटामोटा काम करते। इस प्रकार दोनों का निर्वाह चलता था। लाभशङ्कर जी को छोटी अवस्था में अपनी इस दरिद्र परिस्थिति और आटा मांगने से बड़ी ग्लानी हुई। और उनके मन में विद्याध्ययन की इच्छा उत्पन्न हुई। उन्होंने अपनी माता से निवेदन किया कि यदि आप आज्ञा दें तो मैं बाहर जाकर पढ़ूँ। जिससे हमारी यह दशा सुधरे। माता के पास उस समय लाभशङ्कर के अतिरिक्त कोई सहारा नहीं था और उनकी आयु भी उस समय १२ बारह वर्ष की थीं, परन्तु लाभशङ्कर की माता ने बडे प्रेम से बाहर जाकर विद्याध्ययन की अनुमति दी। लाभशङ्कर जी ने पूछा, माता जी! आपका निर्वाह कैसे होगा, इस समय तो मैं आटा मांगकर ले आता हूं कुछ काम कर लेता हूं। माता ने कहा मैं आटा पीस कर ररैया (चर्खा) चलाकर अपना निर्वाह कर लूंगी, तुम चिन्ता मत करो, प्रसन्नता पूर्वक जाओ तथा विद्याध्ययन कर अपने कुल के अनुरूप बनो।

शास्त्री जी घर से निकल कर दो वर्ष बम्बई में रहे परंतु वहां अभीष्ट सिद्धि होते दिखाई नहीं दी, तब आप काशी चले गये और अनेक प्रकार की कठिनाइयों को सहते हुए आपने

श्री पं० गणपति शास्त्री मोकाटे से विद्याध्ययन किया। काशी में वास करते हुये कुछ समय के पीछे ही शास्त्री जी की माता का स्वर्गवास हो गया। इस प्रकार शास्त्री जी माता जी की चिन्ता से मुक्त हो गये और शास्त्राध्ययन में दत्तचित हो कर लगे रहे।

सन् १९३७ में व्याकरण शास्त्री परीक्षा पास की। काशी में निरन्तर रहने के कारण रुग्न हो गये। इस प्रकार लगभग आठ वर्ष काशी रहकर व्याकरण शास्त्री परीक्षा दे कर अपने देश वापस आ गये, परन्तु व्याकरणाचार्य परीक्षा पास करने की मन में इच्छा बनी रही। अतः आप पुनः काशी गये। व्याकरणाचार्य की परीक्षा और वेदान्त शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात वापस स्वदेश लौटे। हड़मतिया छोटा ग्राम है, वहां रहना निरर्थक समझ कर आप १९४० ई० में मोरवी आ गये और तब से आप यहीं हैं।

श्री शास्त्री जी राजकीय उच्च विद्यालय में तो अध्यापन कार्य करते ही हैं, मोरवी में जो जैन साधु तथा साध्वियां चातुर्मास्य के लिये रहती हैं, उन्हें व्याकरण तथा जैन दर्शन भी पढाते रहते हैं। इस प्रकार मोरवी में आप का अच्छी प्रतिष्ठा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की बहिन का वंश

लीलाधर जी रावल

प्रेमाबाई + मङ्गल जी रावल

बोधा जी रावल

कल्याण जी रावल

प्रभाशङ्कर (पोपट लाल) — प्राणशङ्कर

प्राणशङ्कर: केशव लाल, अज्ञात

केशव लाल: अरविन्द

प्रभाशङ्कर: भानुशङ्कर, मुकुन्दराम, जयन्ती, हंसमुख, प्रविराम

महर्षि श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती

श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती श्री कर्षण जी तिवाड़ी जी की द्वितीय पत्नी श्रीमती यशोदाबाई से सं० १८८१ वि० फाल्गुन कृष्ण पक्ष १० दशमी तिथि शनिवार १२-२-१८८५ मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुये। आपका नाम मूल नक्षत्र में उत्पन्न होने से मूल शङ्कर, मूल जी तथा दूसरा नाम दयाल जी रखा गया। शिव भक्त कर्षण जी हर्षित हो टङ्कारा के बाहर नदी तट पर कुबेरनाथ महादेव का मन्दिर बनवाया। आप के जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्राशन, चूड़ा करण, कर्ण वेध संस्कार सब विधि पूर्वक किये गये।

पाँचवे वर्ष सं१८८६ वि० के बसन्त पञ्चमी में विद्यारम्भ हुआ और देवनागर अक्षरों का अभ्यास करया गया। अनेक धर्मशास्त्र के श्लोक और सूत्रादि कण्ठस्थ कराये जाने लगे।

आठवें वर्ष सं० १८८६ विं के वसन्तपञ्चमी में उपनयन और वेदारम्भ संस्कार हो कर गायत्री संन्ध्या आदि सिखाई गई। शिवभक्त पिता ने हस्तस्वर सहित यजुर्वेद पहले पढ़ाया।

कर्षण जी ने दशम वर्ष सं० १८९० विं० से पार्थिव पूजन प्रारम्भ करा दिया था।

चौदहवें वर्ष के प्रारम्भ सं० १८६४ वि० में शिवरात्रि आई (गुरुवार २२-२-१८३८ ई०)। वे इस समय तक सस्वर यजुर्वेद संहिता पूर्ण कर चुके थे। आपने कुल का वेद सामवेद तथा अन्य वेदों के भी कर्मकाण्डोपयोगो भाग पढ़ चुके थे। कुछ व्याकरण का भी अध्ययन हो चुका था। इस वार उन्होंने पिता की प्रवल प्रेरणा से शिवरात्रि का व्रत रखा और जागरण किया। यह जागरण पितृ निर्मित कुबेरनाथ महादेव के मन्दिर में हुआ। अर्ध रात्रि तक सब लोग सो गये थे. केवल मूल जी दयाल जी व्रतलोप के भय से जाग रहे थे। चूहों को शिवपिण्ड पर स्वेच्छा से दौड़ते और अक्षत आदि खाते देख पाषाण आदि निर्मित मूर्ति पूजा पर से आस्था सदा को जाती रही। पिता जी को जगाकर पुराण वर्णित क्या सच्चा शिव यही है प्रश्न

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य शताब्दी पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय वेद जयन्ति समारोह को सफल बनाइये

आर्य नेताओं की अपील

आर्यजगत् के लिये महान गौरव की बात है कि- सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा देहली के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्टान हैदराबाद द्वारा भारत की राजधानी देहली में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेद-भाष्य शताब्दी के सन्दर्भ में—

१५ दिसम्बर से १ जनवरी ७८ तक अन्तर्राष्ट्रीय वेद जयन्ती समारोह का आयोजन किया जा रहा है। वेद मानवीय संस्कृति सभ्यता के आदि स्रोत एव ज्ञान विज्ञान के पुंज एवं आर्य समाज के आधार है। साथ ही प्राणीमात्र के कल्याण की हितकारी योजना वेद ही प्रस्तुत करते हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का वेदभाष्य इस युग का सर्वश्रेष्ठ उपहार है। जिसका प्रभाव ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में बहुत गहरा पड़ा है। जहां हर भारतवासी वेद के प्रति अपार श्रद्धा रखता है वहाँ विश्व भर के विद्वान न केवल वेद ज्ञान से प्रभावित है अपितु इस सत्य निर्विवाद रूप से अङ्गीकार करते है कि विश्व पुस्तकालयों में सबसे प्राचीनतम पुस्तक वेद है।

परमात्मा के दिये इस पवित्र ज्ञान पर किए गये महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य शताब्दी को पूरे उत्साह के साथ मनाना हमारा परम एवं पवित्र कर्त्तव्य है। जिस प्रकार आर्य जगत् ने आर्यसमाज शताब्दी को सफल बनाने में उदारता का परिचय दिया था वैसे ही फिर एक बार हमें उदारता एवं अपार उत्साह से वेदभाष्य शताब्दी का यह पवित्र समारोह मनाना है।

इस अत्यन्त पवित्र समारोह के लिये हम वेद प्रेमी जनता से अनुरोध करते हैं कि इस समारोह के लिये दिल खोलकर दान दें।

हमें पूरा विश्वास है कि— वेद प्रेमी जनता दिल खोलकर इस कार्य के लिये दान देगी।

इस अवसर पर चारों वेदों का अखण्ड पारायण, १८ दिनों तक लगातार वैदिक विद्वद् गोष्ठी एवं एक सौ एक यज्ञ कुण्डों का एक विराट यज्ञ जातिगत भेदभाव के बिना प्रत्येक को स्वाहाकार का अवसर दिया जायेगा।

दिल खोल कर दान दीजिये और पुण्य के भागी बनिये। आशा है धर्म प्रेमी जनता हमारी प्रार्थना स्वीकार कर समारोह को तन मन धन से सहयोग देकर सफल बनाएगी।

हम हैं आप के विनीत

लाला रामगोपाल बानप्रस्थ
अध्यक्ष डा० सूरजभान, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
ओम् प्रकाश त्यागी, संसद सदस्य गजानंद आर्य, स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती
महामंत्री श्यामसुन्दर आर्य आचार्य बैद्यनाथ शास्त्री
सोमनाथ एडवोकेट उपाध्यक्ष स्वामी ओमानन्द सरस्वती
कोषाध्यक्ष सच्चिदानन्द शास्त्री किशन लाल पोद्दार
पं० वेद भूषण प्रचार मन्त्री आचार्य विरेन्द्र शास्त्री
संयोजक सत्य नारायण गुप्त आचार्य रमेश चंद्र विद्याभास्कर
सरदारी लाल वर्मा पी. सत्यनारायण जौहारी जगदेवसिंह सिद्धांती
सह संयोजक बहादुर मल गुप्त पं० आनन्द प्रिय

अन्तर्राष्ट्रीय वेद जयन्ती समारोह, कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

महत्त्वपूर्ण विज्ञप्ति

१— सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के तत्वाबधान में भारत की राजधानी देहली के रामलीला ग्राउण्ड में महर्षि

दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य शताब्दी के संदर्भ में अन्तर्राष्ट्रीय वेद जयन्ती समारोह का आयोजन १५ दिसम्बर से १ जनवरी ७८ तक किया जा रहा है। आप पत्र प्राप्ति के बारह दिन के भीतर अपने जिले के एक कर्मठ कर्मकर्त्ता का नाम अपनी अन्तरंग सभा द्वारा मनोनित करके भेजिए।

२— ऐसे प्रतिनिधि को समारोह में विशिष्ट स्थान प्राप्त होगा।

३ ऐसे प्रतिनिधि के लिये समारोह में ठहरने व साधारण शुल्क में भोजन व्यवस्था होगी।

४ ऐसे प्रतिनिधि पत्नी सहित एक सौ कुण्ड की यज्ञशाला में स्वाहाकार भी कर सकेंगा।

५ यह प्रतिनिधि अपने जिले में समारोह की सफलता के लिए सक्रिय प्रचार करेगा। अपने जिले से दिल्ली समारोह में भाग लेने के लिये धर्म प्रेमियों को प्रेरित करेगा तथा स्थानीय पत्रों में अपने वक्तव्य आदि देकर सक्रिय योग दान देगा।

६— ऐसे प्रतिनिधि को केवल एक सौ एक रुपये शुल्क देना होगा। यह शुल्क प्रतिनिधि स्वयं दे अथवा संस्था की ओर दिया जाय।

७ इस समारोह की स्वागत समिति का जिला प्रतिनिधि सदस्य माना जाएगा।

८— स्वागत समिति के अध्यक्ष के रूप में संयोजन समिति ने श्री लाल कृष्ण जी अडवानी 'सूचना एवं प्रसारण मंत्री' भारत सरकार एवं स्वागत मंत्री के लिये आचार्य बैद्यनाथ शास्त्री का नाम प्रस्तावित किया है।

हमें विश्वास है कि आप अपना अनुमोदन लिखित रूप में भेजेगें। यह अनुमोदन जिला आर्यसमाज द्वारा अथवा जिला संगठन की कार्यकारिणी द्वारा शीघ्र लौटती डाक से भेज दिया जाएगा। विलम्ब न करो।

आपसे स्थानीय पत्रों में और जिला आर्यसमाज द्वारा परिपत्र प्रकाशित कर जिले में बटवाइए।

हर आर्यसमाज को एक सौ एक रुपया इस समारोह में देने की प्रेरणा कीजिये एवं हर जिले से एक हजार एक रुपया जमा कर अपने जिला प्रतिनिधि द्वारा भिजवाइए।

आपके जिले में समारोह में कितने लोग पधारेंगे इसकी पूर्व सूचना दें साथ में गरम वस्त्र एवं ओड़ना लाने की विशेष सूचना दें।

संयोजन समिति
अन्तर्राष्ट्रीय वेद जयन्ती समारोह कार्यालय
१५ हनुमान रोड, नईदिल्ली

विशेष सूचना

१- समारोह की स्वागत समिति का सदस्यता शुल्क १०१-०० रुपया मात्र रखा गया है। कोई भी व्यक्ति रु० १०१-०० देकर सदस्य बन सकता है।

२- समारोह में साठ के लगभग वैदिक विद्वानों को विदेशों से भी आमन्त्रित किया है।

३- प्रत्येक वेदप्रेमी व्यक्ति से निवेदन है कि वह एक एक रुपया परिवार के प्रत्येक सदस्य के नाम से दान स्वरुप भेजे।

४- कोई भी संस्था एक सौ एक कुण्ड के एक मण्ड़प पर अपना नाम भी अंकित करा सकती है। इसके लिये संस्था की ओर से १० यजमान बनाने होंगे, जो यज्ञ के व्ययके रुप में प्रति यजमान एक सौ एक रुपया प्रदान करेंगे।

५- समारोह की अध्यक्षता के लिये नेपाल नरेश से प्रार्थना की गई है।

६- इस बात का प्रयत्न किया जा रहा है कि समारोह की फिल्म बनाई जाए तथा एक सौ एक कुण्ड के यज्ञ समारोह को टेलिविजन पर दिखाया जाए।

७. जो व्यक्ति इस समारोह में [illegible] दिसम्बर से १ जनवरी ७८ तक भाग लेना चाहें, वे अभी से कार्यालय को सूचना कर दें, जिससे ठहरने आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

महात्मा आनन्द स्वामी ज़ी का

देहावसान सार्वदेशिक सभा की शोक श्रद्धांजलि

दिल्ली, २४ अक्टूबर ७७,

आज १-३० वजे आर्य-जगत् के मूर्धन्य सन्यासी पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का दुःखद देहावसान हो गया। इस समाचार से ससूचे आर्यजगत् में शोक की लहर दौड़ गई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय तुरन्त बन्द कर दिया गया। सभा प्रधान श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने कहा कि पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के निधन से आर्य जगत् में एक उच्च कोटि के संन्यासी एवं नेता का स्थान रिक्त हो गया। पूज्य स्वामी जी महाराज ने जीवन पर्यन्त वैदिक धर्म, आर्य समाज, हिन्दू जाति एवं देश की मूल्यवान सेवा की थी। महात्मा हंसराज जी के दिवंगत होने के पश्चात वे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वर्षों प्रधान रहे। उन्हेंने अपनी भरी जवानी में असहायों एवं दुःखी की जो सेवा की है, वह शब्द द्वारा बतानी कठिन है। श्री शालवाले ने कहा की चमकता हुआ स्तम्भ आज गिर गया और हिंदू जाति अपने रक्षक से बञ्चित हो गई। अध्यात्मिक जगत् में उनकी साधना से देश-विदेश के अनेकों जन-मानस शांति प्राप्त करते थे। आज वह शांति का संदेश वाहक अन्त में विलीन हो गया। उनकी आत्मा को परमात्मा सद्गति प्रदान करे। और आर्य जन उनके बताये हुये मार्ग पर चलकर देश धर्म और जाति के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मंत्री

गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास की ओर से आनन्द स्वामी जी के देहावसान पर शोक श्रद्धांजलि

आज दि० ७-११-७७ को आर्य जगत् के त्यागी, तपस्वी मूर्धन्य संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का दुःखद देहावसान सुन कर समूचे आर्य जगत में शोक की लहर दौड गई। पुराने आर्य नेता, विद्वान् एक के बाद एक उठते जा रहे हैं, परन्तु उनके रिक्त स्थान की पूर्ति हो नहीं रहा है। यह आर्य जगत् के लिये चिन्ता की विषय है। पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी जीवन पर्यन्त देश विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार हिन्दू जाति के रक्षार्थ ही व्यतीत हुआ है। उन्होंने महात्मा हंसराज जी के पदचिन्हों पर चलते हुए निर्धन बच्चों के शिक्षा दीक्षा के लिये सहयोग सहानुभूति तथा शुद्धि प्रचार में हर समय सहयोग देते रहते थे। उड़ीसा में आर्य समाज के प्रचार, प्रसार तथा शुद्धि कार्य में हर समय प्रेरणा देते थे। उत्तर भारत के विभिन्न गुरुकुल में अध्ययन करने वाले उड़ीसा के विद्यार्थियों को हर समय प्रेरणा तथा आर्थिक सहयोग देते थे। आज वे हमारे बीच में नहीं हैं। शांति के संन्देश वाहक अंत में विलीन हो गये। भारत के सबसे अनुन्नत, निर्धन, असहाय उड़ीसा प्रान्त के प्रचारकों को प्रेरणा देने वाले प्रकाश स्तम्भ संत नहीं है। गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास के प्रचारक, अध्यापक छात्र तथा वनवासी परिवार की ओर से परम पिता परमात्मा को प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें एवं हमें उनके बताये हुए मार्ग पर चलने की शक्ति दें।

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी)

(गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव सम्पन्न)

१ तथा २ अक्टूबर १९७७ को वैदिक वाङ्मय के प्रकाण्ड विद्वान स्व० पूज्य श्री स्वामी समर्पणानन्द जी (प० बुद्धदेव विद्यालङ्कार) के करकमलों द्वारा स्थापित गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ का वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया।

इस शुभावसर पर उड़ीसा में वैदिक धर्म के संस्थापक एवं प्रचारक श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी का आश्रम की ओर से अभिनन्दन किया गया एवं उन्ही के करकमलों से यज्ञशाला का शिलान्यास भी कराया गया। इस अवसर पर प्रो० शेर सिंह जी रक्षा राज्य मन्त्री तथा अनेक सन्त महात्मा एवं विद्वानों का शुभागमन हुआ।

वर्षा होते हुये भी मेरठ नगर से तथा गावों से कई हजार लोग पधार कर आश्रम के प्रति अपनी अटूट श्रद्धा का परिचय दिये।

ब्रह्मचारियों का व्यायाम प्रदर्शन अंग्रेजी, हिन्दी एवं संस्कृत में भाषणादि कार्यक्रम जनता के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा। दानियों ने यज्ञशाला एवं भवन निर्माणार्थ दिल खोल कर दान दिया।

ब्र० सुरेन्द्र कुमार

महर्षि दयानन्द के प्रेरक वाक्य

- विश्व की विचित्र रचना ही उस विश्व के रचयिता को सिद्ध कर रही है।
- परोपकार और परहित करते समय अपने मानापमान और परायी निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है।
- जो-जो बातें सब के अनुकूल सब में सत्य है, उनको ग्रहण और जो विरुद्ध है उनका त्याग करें तो जगत् का पूर्ण हित हो।
- नैतिक, सामाजिक एवं मानसिक दासता से मुक्त हो।
- मतान्धता एवं अन्धविश्वासों से मानव-जाति का त्राण हों।
- दुष्ट व्यसनो में फंसने से मर जाना अच्छा है।
- सज्जनों का धन औरों के सुख के लिये और दुष्टो का धन औरों के दुःख के लिये व्यय होता।

—❀—

BANAWASI SANDESH NOVEMBER 1977 Regd. No. 618

प्रकाशक— स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा शान्ति आश्रम प्रेस, गुरुकुल
वैदिक आश्रम वेदव्यास, राउरकेला - ४ में मुद्रित ।।

★ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ★

वनवासी सांस्कृतिक समिति, वेदव्यासस्य,
मासिकं मुख-पत्रम्

वनवासी संदेश

संस्थापक :- स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती के बलिदान दिवस पर

मृत्यु से अभय

ओ३म् अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भूः रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः ।
तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम् ॥
अथर्व० १०।८।४४

भाषानुवाद :- (जीवात्मास्वभावतः) निष्काम, धीर, अमर अपने आप वर्त्तमान (परमात्मा के प्रेम) रस से तृप्त है और इसमें किसी प्रकार की न्यूनता नहीं है। इस से ही आत्मा को धीर, जरारहित तथा (नित्य) युवा जानता हुआ (मनुष्य) मृत्यु से भय नहीं करता।

संपादक
पं० आत्मानन्द शास्त्री

सह-संपादक
पं० देशबन्धु विद्यावचस्पति

महर्षि उवाच

१- जो जो पदार्थ बुद्धि का नाश करने वाले हैं, उनका सेवन कभी न करे ।

२- आजकल की छूतछात मूर्खों का बहकवा और अज्ञान है ।

३- मनुष्यों को योग्य है कि जो व्यक्ति राज्य की रक्षा करने में समर्थ न होवे, उसको राजा कभी न बनावे ।

४- परोपकार के बिना नर-जीवन मृग-जीवन से उच्च नहीं है ।

५- अर्थ (धन) वह है जो जो धर्म से ही प्राप्त किया जाए और जो अधर्म से सिद्ध होता- उसे अनर्थ कहते हैं ।

वनवासी–सन्देश

उत्कल जनता संस्कृति रक्षा बद्धकटिस्तमः स्तोमहतिदेशः
गुरुकुल सुपानपोषादुदयति वनवासी संदेशः ।।
यो भ्रष्ट ख्रीष्टमत दीक्षित मञ्जलोकम्
संस्कृत्य दूरयति तद्धृदयांधकारम् ।।
श्री वेदव्यास सुगुरो कुल सन्निवेशः
सम्पूर्वादेरुदयते वनवासी सन्देशः ।।

वर्ष ११ अंक १२	दिसम्वर १९७७	वार्षिक मूल्य ५ रु एक प्रति ५० पैसे

वेदोपदेश

वेद कहता है :–

जो दान नहीं देते है

वह समाज का शत्रु है

ओ३म् सं व्राधतो नहुषो दंसुजूतः शर्धस्तरो नरां गूर्त्तश्रवाः ।
विसृष्टरातिर्याति बाढसृत्वा विश्वासु पृत्सु सदमिच्छूरः ।
ऋग्वेद १।१२२।१०

अर्थः—

(सः) वह (व्राधतः) उपासक (नहुषः) मनुष्यों के (दंसुजूतः) तेजसे प्रदिप्त हुआ (शर्धस्तरः) अतिशय बलवान् (नरान्) मनुष्यों में (गूर्तश्रवाः) प्रसिद्ध यश वाला (विसृष्टरातिः) खुला दान देने वाला (शूर;) शूर (बाढसृत्वा) प्रबल वेगवान् होकर (विश्वासु) सभी (पृत्सु) युद्धों में (सदम्—इत्) सदा ही (याति) जाता है ।

वैदिक धर्म में दान का बहुत माहात्म्य है। दान न देने वाले कंजूस को वेद में अराति कहते हैं। लौकिक संस्कृत में अराति का अर्थ शत्रु है। सचमुच जो दान नही देता वह समाज का शत्रु है। दान यज्ञ का अंग हैं, धर्म का एक स्कन्ध है। जो धर्म का=सामाजिक नियम का उलंघन करता हैं वह सचमुच सामाजिक समता में आघात पहुंचाने के कारण समाज का शत्रु है।

दान के कई सोपान है। धन-दान, तन-दान, वाणी दान करने से यज्ञ की सफलता होती है। दान का अर्थ है - अपनी अधिकृत वस्तु पर से अपना अधिकार हटा कर दूसरे का अधिकार स्वीकार करना। मनुष्य सब कुछ दे सकता है, शरीर तक दूसरों के लिये उत्सर्ग कर सकता है, किन्तु अहंकार-ममकार त्यागना बहुत कठिन है। अहंकार=ममकार त्याग कर जब भक्त अपने आप को भगवान के अर्पण करता है। तब भगवान उस अपने उपासक को अपने तेज से तेजस्वी कर देता है। शास्त्र में उस तेज का नाम "ब्रह्मवर्चस्" है। वेद कहता है, दानी मनुष्य—बाधतो नहुषस्य दसुजूतः' उपासक मनुष्य के तेज से तेजस्वी होता है। अर्थात् निष्काम भाव से दान करने वाला, आत्म समर्पण करने वाले उपासक के समान तेजस्वी होता है। अतएव वह 'शधस्तर बलवत्तरः' अत्यन्त बलवान् होता है और 'नरां गूर्त्तश्रवाः'-मनुष्यों में उसकी कीर्ति की चर्चा होती हैं। ऐसे दानी के लिये वेद में उपदेश है कि वह 'उतापरीषु कृणुते सखायम (ऋ १०।११७।३) विपत्तियों के समय के लिये मित्र बना लेता है। दाता को मित्रों की कमी नहीं रहती और अतएव वह 'विसृष्टरातिर्याति वाढ़सृत्वा विश्वासु पृत्सु सदमिच्छूरः' यह दानी शूर महावेगवान् होकर सभी युद्धों में सदा जाता है अकेला वह ही नही, उसके साथी, मित्र, सहायक पर्याप्त हैं। अतः वह पूर्ण वेग से संग्रामों में घुस जाता है। जिसने अपना दान दे दिया उसे तो महान् सखा मिल गया है, उसे तो भय रहा ही नही इस महत्व को समझ कर दान करो।

स
म्पा
द
की
य

ओ राष्ट्र के कर्ण धार ?

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के अमर सेनानी
सर्व प्रथम अस्पृश्यता निवारक, दलितोद्धारक, प्राचीन गुरुकुल
संस्थापक, शुद्धि आन्दोलन के जन्मदाता

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

आर्यो (हिन्दुओं) अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस फिर से २३ दिसम्बर आ रहा है। आज पूरे ५४ वर्षों में प्रवेश कर रहा है। यदि हमें जीवित रहना है तो स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर प्रतिज्ञा करनी है कि क्या करना चाहिये। घर-घर—डगर-डगर और नगर-नगर में स्वामी श्रद्धानन्द जी का सन्देश गुंजाइये।

वे अपने जीवन की सुन्दर घड़ियों में प्राणों का तिल-तिल जला-कर अन्धकार और निराश से ग्रस्त राष्ट्र में प्रकाश और आशा की किरणें फैलायी थी।

वे ही थे जिसके कारण राष्ट्र के आबाल वृद्ध नर-नारी ने अपने अंतर का पावन तम स्नेह पूरी श्रद्धा के साथ अर्पित किया था। वह स्नेह जो माता पुत्र से करती है- वात्सल्यभरा ममत्व जन जन के अन्तर में तुम्हारे लिये बडे प्यार से संजोया था।

तुमने ही रोलेट एक्ट के विरोध में दिल्ली के चांदिनी चौक में हजारों सत्याग्रहों के साथ अंग्रेजी शासन को चुनौती दी और गोरे सिपाहियों की संगीनों की सामने अपने सीने खोल दिये थे। जलियानावाला बाग हत्याकांड के बाद अमृतसर में कांग्रेस का जो ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ, उसका स्वागताध्यक्ष आप ही थे। उस समय लोग कांग्रेस के मंच पर आने से घबराते थे। अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन कराने की जिम्मेदारी झेलने को कोई तैयार नहीं था। एसे समय में तुमने ही एक वीर नेता के रूप में सामने आये और अंग्रेजी शासन के अत्या-चारों को निर्भिकता के साथ भर्त्सना की।

तुमने ही हिन्दू मुसलीम सभी संप्रदाय को एक झंडे के नीचे खडे किये थे। जिसके फल स्वरुप मुसल्मानों के प्रसिद्ध इतिहास ज़ुमा-मस्जीद में वेद मन्त्रो के साथ व्याख्यान देने को सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

महर्षि दयानन्द जी वैदिक धर्म के प्रचार और राष्ट्र के उद्धार के लिये देश में गुरुकुल की शिक्षा प्रणालि का प्रचार करना चाहते थे, क्यो कि जब तक वेदों के अनुसार बालकों को शिक्षा नहीं दी जायेगी, तब तक देश को चरित्रवान धर्मात्मा और देशभक्त नागरिक प्राप्त नहीं हो सकते। तुमने ही इस उद्देश्य से गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की, जो आज एक आदर्श विश्व विद्यालय के रूप में राष्ट्र की सेवा कर रहा है। तुमने ही सबसे पहले अपने दोनों पुत्रों को गुरुकुल में प्रविष्ट किया। गुरुकुल कांगड़ी ने अवतक हजारो स्नातक उत्पन्न किया है, जो विविध क्षेत्रों में काम करते हुए राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति में संलग्न है।

तुमने सर्व प्रथम अस्पृश्यता निवारण का क्रान्तिकारी पग उठाए। आपके ही प्रयत्न से अस्पृश्य जातिओं के हजारों बालकों को उच्च शिक्षा प्राप्त हुई और हिन्दू समाज में उन्हें सम्मानित स्थान प्राप्त हुए।

तुमने ही जब हिन्दू जाति दल-दल में जांत-पांत के किचड़ों में फंसे थे। उस समय एक झँकझोर दिया। जिसके कारण यह दिवार गिर पड़ा एवं सर्व प्रथम आपने अपने पुत्र को जांत-पांत तोड़कर वैदिक सिद्धान्तानुसार विवाह संस्कार कराया।

तुमने ही अस्पृश्यता निवारण और दलितोद्धार के साथ-साथ शुद्धि का आन्दोलन भी चलाया और जो लोग किसी दवाव मे या लालच से हिन्दू धर्म का परित्याग कर विधर्मी बन गये थे, उन्हें फिर से शुद्ध कर हिन्दू धर्म में दीक्षित होने का अवसर दी। देश में यह जबरदस्त क्रान्ति थी और आपके प्रयत्नों से हजारों मलकाने अन्य लोग इसलाम संप्रदाय को छोड़कर पुनः हिन्दू समाज में वापस आ गए। खेद है कि आपके द्वारा संचालित यह शुद्धि आन्दोलन उसी गति से आगे नही बढ़ सका। यदि हिन्दू समाज ने आपके शुद्धि-स देश को यथार्थ रूप से ग्राह्य किया होता तो १९४७ में भारत का विभाजन न होता और पाकिस्तान का निर्माण नही होता।

सबल सम्राट, प्रतापी योद्धा, पुनीत देवता पता नही कितने हुए है और कितने होंगे, किन्तु सभी के हृदय का छलकता अटूट प्रेम पाने वाले तो तुम एकाकी ही थे।

आज तुम्हारे विना देश सुना-सुना सा है। रातें अजीब सीं अनुभव होती है—तुम्हारी नश्वर भी नही रहा—फिर भी पता नहीं क्यो मन यह नहीं विश्वास करता कि अब तुम नहीं हो।

तुम्हारा स्वप्न था स्वर्णिम भारत, संगठित भारत, सुखी भारत, शांति का संदेश वाहक भारत! आज तुम प्रेरणा दे

रहे हो कि हे भारतीयों ! उठो ! चेतों ! सजग हो जाओ त्रिशूल बज रहा है। यदि मेरे बताये मार्ग को भूल गये तो तुम्हारा सुनिश्चित मृत्यु हैं । अतः—

उठो हिन्दूओं (आर्यों)? संगठित हो जाओ ।
तुम्हारे ऊपर मृत्यु का बादल मंडरा रहा है ॥
ओ भोले मानव चेत एवं शुद्धि का शंखनाद फूंक ।
यही स्वामी श्रद्धानन्द का वास्तविक श्रद्धांजली है ॥

पूछा, पिता जी के उत्तर से उनके चित्त का समाधान न हुआ। पिता जी की आज्ञा ले कर घर आकर और भूख मिटाकर सो गये दूसरे दिन व्रतभंग का वृत्त ज्ञात होने पर पिता के क्रोधित होने पर माता और चाचा जी के समझाने से पिता जी ने पार्थिव पूजन से ही छुट्टी देदी। मूलशङ्कर जी ने निघण्टु निरुक्त मीमांसा आदि शास्त्र और कर्मकाण्ड पढ़े।

मूलशङ्कर जी ने सोलहवां वर्ष पूर्ण कर सं० १८९८ विं० के ग्रीष्म अपनी चतुर्दश वर्षिया भगिनी की विसूचिका से मृत्यु होती देखी। इस प्रथम मृत्यु दर्शन ने उनके मन में तीव्र वैराग्य उत्पन्न कर दिया। तीन वर्ष के पश्चात् सं० १९०१ वि० के ग्रीष्म में ही वात्सल्य अपने चाचा की मृत्यु ने इनके वैराग्य को चरम सीमा तक पहुँचा दिया।

मूल जी पितृ गृह में अश्वारोहन का उत्तम अभ्यास किया था। अपने पितृदेव के घोडे को जल पिलाने डेमी नदी पर वे स्वयं जाते थे। वे शस्त्रास्त्र विद्या में भी निपुण हो गये थे। एक बार उनकी भूमि पर पड़ोसियों ने अधिकार कर लिया। पिताजी से वृतान्त सून अकेले ही तलवार लेकर खेत पर पहुंच गये पड़ौसी खेतवाले भयभीत हो भाग गये।

मूल जी के वैराग्य को देख कर पिता ने जमींदारी के काम में लगाना चाहा पर, इन्होंने स्वीकार नहीं किया। इन के पिता आदि वीसवें वर्ष में विवाह करने को कटिबद्ध हो गये तो मूल जी ने बडे प्रयत्न से एक बर्ष के लिये विवाह कों रुकवाया।

ब्रह्मचारी मूलशङ्कर ने विद्याध्ययनार्थ काशी जाना चाहा पर आज्ञा न मिली। वीसवां वर्ष पूर्ण हो गया। टङ्कारा से तीन कोस पर पिताजी की जमीन्दारी के एक ग्राम में एक समर्थ पण्डित थे। पिता जी से आज्ञा लेकर वहां जाकर पढ़ने लगे। पूरा एक वर्ष भी न पढ़ पाये थे कि घर पर बुला लिये गये। घर आने पर इक्कीसवां वर्ष पूर्ण हो गया। (सं० १९०२ फाल्गुन वदी १०) एकमास में विवाह की तैयारी हो गई।

विवाह तिथि सन्निकट जान कर विवाह से छुटी पाने को एक दिन सायं घर से सं० १६०३ वि में भाग गये। इस समय तक सं० १६०३ वि० का पूरा एक सप्ताह भी न बिता था।

तपस्वी मूलशंकर घर से भागने पर योगियों को खोजते लगभग एक मास में सायला पहुंचे। वहां कुछ दिन योगाभ्यास करते रहे। यहां नैष्ठिक ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य बन गये। वहां से अनेक स्थानों पर घूमते कोठकंगरा गये। वहां चातुर्मास्य करके कार्तिक पूर्णिमा के मेले पर सिद्धपुर गये। एक परिचित वैरागी से समाचार पाकर उनके पिताजी ने कुछ सिपाहियों के साथ आकर उन्हें पकड़ लिया, पर चौथी रात ये पुनः भाग निकले। मुमुक्षु शुद्ध चैतन्य अनेक स्थानों पर विचरते हुए सं० १६०४ वि० के आरम्भ में नर्मदा तट पर चाणोद कर्णाली पहुंचे। इस प्रदेश में पर्याप्त समय रह कर अध्ययन और योगाभ्यास करते रहे। व्याकरण, वेद, दर्शन और योग ग्रन्थ यहां खूब पढ़े और योगभ्यास पारायण रहे। सं० १६०५ वि० आषाढ शुक्ल में श्री परमानन्द जी (पूर्णानन्द जी अपर नाम) सरस्वती से संन्यास की दीक्षा ली और दयानन्द सरस्वती नाम पाया। इस गुरु ने चाणोद में चातुर्मास्य किया था। इस समय दयानन्द उनके साथ रह कर पढ़ते और गुरु सेवा करते रहे। उनके प्रस्थान से पूर्व उनसे आदेश प्राप्त कर दण्ड विसर्जन कर दिया।

चाणोद में मुमुक्षु वर्य दयानन्द को दो उत्कृष्ट योगी सं० १६१० के प्रारम्भ में ज्वालानन्द पुरी और शिवानन्द गिरि मिले। वे इनको अधिकारी समझ अहमदाबाद बुला गये। दयानन्द उनके आदेशानुसार एक मास पश्चात् वहां पहुँचे। उन्होंने इन्हें योगक्रियाओं की उत्तम शिक्षा दी।

सं० १६११ वि० में दयानन्द आबू पर्वत पर गये वहां और भी ऊंचे योगतत्व प्राप्त हुए। यहां से जयपुर अलवर देहली मार्ग से हरिद्वार के कुम्भ पर चल पड़े। सं० १६११ वि० के अंत में हरिद्वार पहुंचे। यहां एक मास रहे और चण्डी पर्वत पर

योगाभ्यास करते रहे । कुम्भ समाप्त होने पर वहां से पर्वतयात्रा पर चले । सं० १६११ वि० चातुर्मास्य शिवपुरी में किया । तदनन्तर केदारनाथ की यात्रा की । योगियों का खोज मुख्य लक्ष्य था । बदरीनाथ जाते हुए ओखी मठ के समृद्ध महन्त ने अपनी लाखों की संपत्ति का प्रलोभन देते हुए चेला बनाना चाहा । निस्पृह दयानन्द वहां से चल दिये । सं० १६१२ वि० माघ शुक्ल के कुछ दिन ज्योर्तिमठ में रहे । वहां के मठाधीश शंकराचार्य हरिद्वार के श्री स्वामी पूर्णानन्द जी सरस्वती जो स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती के गुरु थे वे उनके गुरु थे । उन्होंने स्वामी दयानन्द जी को श्री स्वामी पूर्णानन्द जी से पढ़ने की सन्मति दी । वहां से बदरीनाथ गये और कुछ समय तक गायत्री का जपानुष्ठान किया । सर्वत्र घोर शीत में योगियों को खोजते रहे । कई स्थानों पर कुछ लाभ प्राप्त हुए, घोर तपस्या पूर्ण जीवन रहा । कष्टों की कोई सीमा न रही । एक वार हिमखण्डों से पूर्ण अलखनन्दा नदी पार करने में मृत्यु का सामना करना पडा मरते मरते बचे ।

अब वे उत्तरापथ से लौटे । रामनगर और काशीपुर होते हुए द्रोण सागर पहूंचे । वहां सं० १६१२ वि की शीत ऋतु में लगभग डेढ मास रहे । यहां से गढ़ मुक्तेश्वर पहुंचे । वहां गङ्गा में एक शव बहता देख खींच कर किनारे लाये और चाकू से काट कर हृदय आदि अङ्गों को नवीन योग के ग्रन्थों से मिलाया उन ग्रन्थों को भ्रम पूर्ण पाकर शव के साथ पुस्तकों को भी गंगा में बहा दी । वहां से हरिद्वार गये और कनखल के दक्षेश्वर महादेव के मन्दिर में श्री स्वामी पूर्णानन्द जी को पढ़ाने की प्रार्थना की। उस समय स्वामी पूर्णानन्द जी की अवस्था लगभग १०८ वर्ष की हो गई थी । शरीर पढ़ाने योग्य न था मौन धारण किये-हुए थे । उन्होंने लिखकर उत्तर दिया कि मथुरा में मेरा शिष्य श्री विरजानन्द जी से जा कर पढ़ो, तुम्हारी मनो कामना पूण होगी ।

मुमुक्षु वर्य स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को हृदय में विदुष्मती काशी नगरी देखने की इच्छा थी । वे गङ्गा के तटा-

नुतट देशाटन करते हुए सं० १९१३ वि० के आरम्भ में कानपुर पहुंचे। लगभग ५ पांच मास प्रयाग और कानपुर मध्यवर्त्ती क्षेत्र में विचरण किया। इस समय अंग्रेजों को देश से निकालने की तैयारियां आरम्भ हो गई थी। साधु संन्यासी विदेशियों के निष्कासन में पुरा काल में भी भाग लेते रहे हैं वे इस समय भी सहयोग कर रहे थे। मुमुक्षु वर्य दयानन्द को इस परिस्थिति का ज्ञान हो गया। सं० १९१३ वि० में वे बम्बई में वैदिक धर्म प्रचारार्थ गये। वहाँ वे नाना जी (धूँधूपन्त) के आदमी के रुप प्रसिद्ध थे। देश भक्त दयानन्द ने आन्दोलन और प्रचार में सहयोग दिया। उनका सं० १९१३ वि० के अन्त और सं० १९१४ वि० में राज नीतिक महान् उद्योग में प्रेरक, प्रवर्त्तक रुप में सहयोग दिया। दयानन्द का आरम्भिक १९१३ और १९१४ का नाना जी के सहयोग में बीता आन्दोलन विफल होने पर अगला तीन वर्ष भारत के उत्तर से दक्षिण और पश्चिम से पूर्व देशाटन में व्यतीत हुआ। कुछ समय उन्होंने काशी में व्याकरण और योग का अध्ययन भी किया। योगाभ्यास तो नैत्तिक चर्या थी। बीच बीच में योगियों और विद्वानों से सम्पर्क होता ही रहता था। उनका दण्डी विरजानन्द जी से अध्ययन का सङ्कल्प चिर पूर्व बन चुका था। किंतु देश की घोर अशांति की अवस्था में वे उधर मनोयोगी न हो सके थे।

सं० १९१७ वि० कार्त्तिक शु० २ बुध (१४-११-१८६० ई०) को श्री दण्डी स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती के पास अध्ययनार्थ दयानन्द को ऐसा गुरु न मिला और न विरजानन्द जी को ऐसा शिष्य ही मिला था। दयानन्द ने आदर्श गुरु की भक्ति भाव से सेवा करते हुए अढ़ाई वर्ष पर्यन्त अध्ययन किया। यहाँ उन्होंने शब्दानुशासन (अष्टाध्यायी) महाभाष्य वेदान्त दर्शन सम्भवतः निरुक्त पढ़ा। व्याकरण और वेदान्त पढ़ते हुए अन्य सब दर्शनों की समालोचना भी हुई। आदर्श गुरु शिष्य कई बार एकान्त में वार्त्तालाप करते थे। उस समय विरजानन्द के अन्य प्रियतम शिष्य भी न रह पाते थे। ऐसे अवसरों पर देश की राजनीतिक उद्धार सम्बन्धिनी चर्चा होती थी।

सं० १६१६ के अवसान के लगभग दयानन्द का अध्ययन समाप्त हुआ। देशभक्त आदर्श गुरु ने गुरुदक्षिणा के अवसर पर उनसे देश में फैले घोर अज्ञान को दूर करने की प्रतिज्ञा चाही। आदर्श शिष्य ने सहर्ष इस आदेश को शिरोधार्य किया। देश सेवा उनके जीवन का गौरव लक्ष्य प्रबल रूप में अवरत दश-वर्ष पूर्व ही बन चुका था, अब आत्मचिन्तन गौण और देश सेवा प्रधान लक्ष्य बन गया। आगरा में उनदिनों ग्रन्थों का कोई उत्तम भण्डागार था। दयानन्द स्वाध्यायार्थ लगभग पौने दो वर्ष आगरा में रहे। साधारण प्रचार, उपदेश और अध्यापन भी चलता था। योगाभ्यास नित्य चर्या थी ही, बीच बीच में गुरु दर्शनार्थ मथुरा भी जाते थे। वे पैंतीस मील तीन घण्टे में चल देते थे। देश भक्त विरजानन्द असन्तुष्ट थे कि दयानन्द देश के अज्ञान तिमिर को दूर नहीं कर रहे। दयानन्द ने उत्तर दिया। संपूर्ण वेदों के अध्ययन कर लेने पर ही यह कार्य सम्यक् निर्वाह हो सकेगा।

सं० १६२१ वि० के पौष में गवालियर गये। वहां के नरेश ने बडे सजधज से भागवत् सप्ताह बैठाया था। यहां से वैष्णव मत का खण्डन आरम्भ हुआ। भारत भर के सर्व-श्रेष्ठ भागवत पाठी एकत्र थे। सबको भागवत पर शास्त्रार्थ के लिये ललकारा और भागवत का तीव्र खण्डन किया। सं० १६२२ वि० में जयपुर गये। वहाँ शैव वैष्णव शास्त्रार्थ में शैवों की सहायता की। देहली के प्रसिद्ध पण्डित हरिश्चन्द्र को परास्त किया। जयपुरीय विद्वानों में व्याकरण में मुह की खाई। सं० १६२३ वि० में पुष्कर और अजमेर गये। अजमेर में शैव मत का खण्डन भी प्रारम्भ किया। अजमेर में ईसाई पादरियों को परास्त किया। राजस्थान के गवर्नर जनरल एजेंण्ट (A. G. G.) से गोरक्षा पर बात हुई। वहां वायस-राय का दरबार था। राजा महाराजा आये हुए थे। यहां पाखण्ड खण्डन (भागवत खण्डन) पुस्तक छपवा कर खूब बांटी। यहां मथुरा में गुरुजी के दर्शन करते हुए कुम्भ हरिद्वार सं० १६२४ में पहुंचे। पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा अपनी कुटिया

पर लगाई और भागवत और अन्य पुराणों का तीव्र खण्डन किया । विशुद्धानन्द सरस्वती से शास्त्रार्थ हुआ । महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के चरण कमलों से चर्चित इस स्थान को स्वामी जी के परम भक्त देहरादून निवासी श्री लाला-बलदेव सिंह प्रसिद्ध रईस सन् १६१२ ई० में श्री स्वामी प्रकाशा-नन्द जी सरस्वती और महात्मा हंसराज जी महाराज के सहयोग से खरीद कर बीस वर्षीय दिवंगत अपने पुत्र मोहन के नाम से एक ट्रष्ट्र भक्ति प्रचारिणी सभा के नाम से मोहन आश्रम की स्थापना कर दी और सन् १६१५ ई० के कुम्भ मेला के अवसर पर सर्व श्री महात्मा हंसराज जी, सेठ राधाकृष्ण, पं० आर्य मुनि जी पं. राजाराम जी आदि महानोंभावों द्वारा आश्रम में पाखण्ड खण्डिनी पताका पुनः गाडी गई और वैदिक धर्म का प्रचार किया गया । सन् १६२४ ई० के गंगा की बाढ़ में मोहनाश्रम के कच्चे मकान आदि बह गये जहां अब पक्के मकान आदि बनाये गये हैं । आश्रम में उसी महत्व पूर्ण स्थान पर २२ फीट ऊँचे लोह दण्ड पर पताका निर्माण कर के पाखण्ड खण्डिनी पताका का एक पक्का स्थायी स्मारक बना दिया गया है । दयानन्द जी जब सं० १६३७ वि. में देहरादून पधारे थे, तब उन्होंने दो मास से अधिक आश्विन सुदी ४ से मार्गशीर्ष वदी ८ तक लाला जी की कोठी में विश्राम किया था । लाला जी के परिवार वालों के विशेष आग्रह पर अपनी प्रत्याकृति उत-रवाना स्वीकार किया था । सिर पर पगड़ी, गला में दुपट्टा और कुर्सी पर बैठे हुए महर्षि दयानन्द जी की छवि लाला जी की कोठी में ही ली गई थी । महर्षि जी के दीर्घ सत्संग से वे इतने प्रभावित हुए कि अपना तन मन धन आदि सर्वस्व ईश्वर भक्ति और परोपकार ही में खर्च किया । देहरादून के निकट होने से प्रति सप्ताह सत्सग के लिये हरिद्वार में आया करते थे और चाहते थे कि जगत् गुरु महर्षि दयानन्द ने सं. १६२४ बि. के कुम्भ मेला में पाखण्ड खण्डिनी पताका गाड़ कर अपने चरणों के स्पर्श से जिस भूमि को पवित्र किया था उस महत्व पूर्ण भूमि को लेकर ईश्वर भक्ति और वैदिक धर्म प्रचारार्थ एक आश्रम बनाया गया । उसी का परिणाम स्वरुप मोहनलालाश्रम की स्थापना है ।

हरिद्वार १९२४ वि० के कुम्भ मेला के बाद ऋषि ने पुस्तक वस्त्रादि सर्वस्व त्याग दिया और शरीर पर भस्म लगानी आरम्भ की । वह सं० १९३१ बम्बई जाने तक लगाते रहे । कौपीन धारी ऋषि निर्द्वन्द हो गंगा तट पर घूमते हुए प्रचार करने लगे । सं० १९२४ वि० आषाढ़ शुक्ल में रामघाट पहुंचे । वहाँ कृष्णानन्द से शास्त्रार्थ हुआ । इसके पश्चात् कर्णवास में पं० अम्बादत्त से शास्त्रार्थ हुआ । उन्होंने स्वीकार कर लिया "मूर्ति पूजा अवैदिक और त्याज्य" है । ऋषि कर्णवास में मार्गशीर्ष में पुनः आये । तब छः दिनों तक पण्डित हिरावल्लभ से शास्त्रार्थ हुआ, अन्त में हिरावल्लभ ने अपनी मूर्तियां गंगार्पित कर दीं । ऋषि दयानन्द इस प्रकार गंगा तट पर विचरते हुये संध्या अग्निहोत्र यज्ञोपवीत गायत्री का प्रचार करते रहे । वे एक कौपीन से अधिक अपने पास कुछ न रखते थे । एकान्त स्थान में स्नान करके कौपीन सुखाने डाल देते थे और ध्यान में मग्न हो जाते थे । सुखी हुई कौपीन को पहन कर निवास स्थान पर आ जाते और उपदेश करने लगते थे । निवास सदा ग्राम के बाहर होता था स्त्रियों को आने की आज्ञा न थी । रात में गंगा तट पर ही रेत में सो जाते थे । ईंट या रेत का सिरहाना होता था, ओढ़ते कुछ भी न थे । कोई भक्त कम्बल डाल जाते थे तो जब करवट बदलते थे तो उसे उतार कर परे कर देते थे । जहां योग्य छात्र मिलते उनको गुरु विरिजा नन्द जी के पास पढ़ने के लिये मथुरा भेज देते थे । इसी प्रकार विचरते सं० १९२५ वि० के ज्येष्ठ में पुनः कर्णवास पहुंचे । यहां बरौली के रावकर्णसिंह ने क्रुद्ध हो कर उनपर खड्ग का प्रहार किया । ऋषि ने तलवार छिन कर तोड दी । यहां से वे सोरों पहुंचे । यहां बदरिया के पण्डित अंगदराम से मूर्त्ति पूजा और भागवत पर शास्त्रार्थ हुआ । उन्होंने इन सब की सदोषता स्वीकार की और ऋषि के अनुगत हो गये । इस महान् विद्वान ने अनेक ग्रन्थ रचे हैं उनमें एक राष्ट्र विप्लव काव्य भी है ।

पीलीभीत के अहंकारी पं० अंगदरा भी सोरों आये थे वे स्वामी दयानन्द से शास्त्रार्थ के इच्छुक हुए उनको बदरिया

के पं० अंगदराम ने परास्त कर दिया । धर्मान्ध अन्धविश्वासी लोग ऋषि के प्राण हरण का स्थान स्थान पर उद्योग करते थे, पर भगवत् की दया से वे दुष्ट लोग सफल न हो सके।

कर्कोडे के कार्तिक गंगा स्नान के मेले पर पं० उमादत्त से शास्त्रार्थ हुआ । ऋषि उनके उच्चारण विशुद्धि से प्रसन्न हुए। यहां अंग्रेज पादरी और कलेक्टर से भी बात हुई। कायमगंज में पादरी अनलान हरप्रसाद आदि परास्त हुए। सं० १९२५ वि पौष में ऋषि फर्रुखाबाद पहुंचे । वहां पण्डित श्री गोपाल से मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ हुआ । वे परास्त हुए। कृष्णलाल वणिक् ने व्यय करके मूर्त्ति पूजा के पक्ष में काशी के पण्डितों की व्ययस्था मङ्गवाई । कृष्णलाल ने उसे ऋषि दयानन्द को दिखलाया । वे उस असम्बद्ध प्रलाप को देख कर बहुत हंसे । फर्रुखाबाद में ऋषि ने संस्कृत पाठ शाला स्थापित की और अपने सतीर्थ पं० व्रजकिशोर को अध्यापक नियुक्त किया। फर्रुखाबाद सं० १९२६ वि ज्येष्ठ शु० १० शनिवार (१९-६-१८६६ ई०) को अगले दिन प्रसिद्ध विद्वान् हलधर ओझा से शास्त्राथ हुआ । वे परास्त होने पर मूर्छित से हो गये ।

आषाढ़ मास में पं० हरिशंकर से शास्त्रार्थ हुआ । उन्होंने पराजय स्वीकार कर संन्यास दीक्षा की प्रार्थना कीं। ऋषि ने कहा हार जित की प्रतिज्ञा पर संन्यास लेना उचित नहीं । सन्यास वैराग्य से होता है ।

ऋषि यहां से कानपुर पधारे । वहां हलधर ओझा से श्रावण कृष्ण ८ (३१-७-१८६९) को पुनः शास्त्रार्थ हुआ । असिस्टेण्ड कलक्टर वेन संस्कृतज्ञ सभापति बने । उन्होंने निर्णय दिया कि स्वामी दयानन्द विजयी रहे । इस अवसर अन्य भी कुछ अंग्रेज उपस्थित थे । बहुत लोगों ने मूर्त्तियां गंगा में फेंक दी ।

कानपुर से ऋषि प्रयाग में प्रचार करते काशी पहुंचे । सं० १९२६ वि कार्तिक शुक्ला १२ भौम वार (१६-११-१८६९ ई०) को काशी नरेश के सभापतित्व में आनन्दबाग में शास्त्रार्थ हुआ । सम्पूर्ण काशी के पण्डितों का घोर पराजय हुआ ।

यहां से स्वामी जी डुमराँव, आरा होते हुए पटना में एक मास, मुंगेर में पन्द्रह दिन और भागलपुर में दो मास शास्त्रार्थ प्रचार करते हुए पौष कृ० १ सं० १९२९ वि को भागलपुर से कलकत्ता की ओर बढ़ गये। महर्षि कलकत्ता में लगभग चार मास ठहरे। यहाँपर "ब्रह्म समाज" के प्रवर्त्तक राजा राममोहन राय नेता देवेन्द्र नाथ कुठार, नवविधान समाज के प्रवर्त्तक डा० श्री केशवचन्द्र सेन, हेमचन्द्र चक्रवर्ती, पं० तारानाथ तर्कवाचस्पति, पं० महेशचन्द्र, हुगली में वर्तमान वंग साहित्य के जन्मदाता और निर्माता अक्षय कुमार घोष, पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और राजनाथ बसु आदि का संपर्क रहा। ब्रह्म समाज और महर्षि के सिद्धान्त कई अंशों में मिलते थे, मुख्य भेद यही था कि वे लोग महर्षि के समान वेदों को ईश्वर कृत तथा आवागमन के सिद्धांत नहीं मानते थे। आर्य संस्कृति से उनका संम्बन्ध बना हुआ था। इन्हीं दिनों अंग्रेजी के ओजस्वी और प्रगल्भ वक्ता बाबू केशवचन्द्र सेन का ब्रह्म समाज से मतभेद होने से नवविधान समाज की स्थापना की थी। केशव चन्द्र सेन का झुकाव ईसाइयत की ओर अधिक था। वे अपने आपको ईश्वर से प्रेरित तथा प्रेषित व्यक्ति मानते थे। आरम्भ में ब्रह्म समाज के पण्डित हेमचन्द्र चक्रवर्त्ती से आपका वार्त्तालाप हुआ। संतुष्ट होने पर इन्होंने अष्टांग योग का विधि भी महर्षि से सीखी। आप महर्षि के अनुयायी बने। उपनिषदों का अध्ययन लगातार करते रहे। फर्रुखाबाद में यह पाठ समाप्त हुआ। कलकत्ता में स्वामी जी के अनेक व्याख्यान हुए। काशी राज के राज पण्डित पं० ताराचरण जी कलकत्ता में तो महर्षि से बचते रहे पर हुगली भट पल्ली (भाट-पाड़ा) में अपने प्रति वासी वृन्दावन बाबू के आग्रह से शास्त्रार्थ हुआ। बाबू भूदेव मुख्योपाध्याय मध्यस्थ रहे। तर्करत्न महोदय ने सरलता पूर्वक मूर्त्ति पूजा के मिथ्यात्व को स्वीकार किया और स्वयं मूर्त्ति पूजा के खण्डन करने लगे। कलकत्ते में ऋषि को पता चला कि उनके संस्कृत उपदेश का देशभाषा में अनुवाद सुनाते समय पण्डितगण उलटी बातें कह देते हैं। अतः उन्होंने हिन्दी में व्याख्यान देने का विचार

किया । हिन्दी बोलने का अभ्यास न था, कुछ अभ्यास हो जाने पर पहला व्याख्यान सं० १६३० वि में काशी में दिया । अब वे केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से वस्त्र भी पहनने लगे थे क्योंकि स्त्रियों के सामने होना पड़ता था । काशी में महर्षि के भक्त और मित्र राजा जय किशन दास सी. एस. आई. ड़िप्टि कलेक्टर की प्रेरणा से अपने विचारों का लेख बद्ध करना स्वीकार किया । राजा साहब का परामर्श केवल सिद्धांत रुप में ही नहीं रहा उसको क्रिया रूप में परिणत करने के लिये स्वामी जी के लेखों के मुद्रण एवं प्रकाशन का व्यय भार भी अपने उपर लिया । उनके उपदेशों का यह प्रथम संग्रह "सत्यार्थ-प्रकाश" का पहला संस्करण जो सं० १६३२ वि में प्रकाशित हुआ । जिसका द्वितीय संस्करण सं० १६४० वि में किया गया । ऋषि की दूसरी प्रसिद्ध पुस्तक ऋग्वेदादि भूमिका सं० १६३३ वि भाद्रमास शुक्ल पक्ष प्रतिपद रविवार को, तीसरी संस्कार विधि सं० १६३४ विं कार्त्तिक अमावास्या शनिवार को आरम्भ हुआ । इसी तरह व्यवहार भानु १६३६ वि० में, आर्याभिविनय, गोकरुणा निधि, आर्योद्देश्य रत्नमाला आदि अनेक छोटे मोटे ग्रन्थ ऋषि ने निर्माण किये । वेदभाष्य का भी कार्य हाथ में लिया जिसमें एक यजुर्वेद का भाष्य पूरा हुआ । ऋग्वेद अधूरा रह गया शेष सामवेद और अथर्व वेद को भी नहीं कर कर सके ।

ऋषि ने वैदिक पाठशालाओं से अपने उद्देश्य की पूर्त्ति न देखकर कासगंज काशी आदि की पाठशालायें तोड़ दी और आर्य समाज की स्थापना में प्रवृत्त हो गये । चैत्र शुक्ल ५ सं० १६३२ वि तदनुसार १० अप्रिल १८७५ ई० को गिरगाँव रोड पर स्थित डा० माणिक जी की बागवाड़ी में सायंकाल $5\frac{1}{2}$ आर्य समाज की नियम पूर्वक स्थापना कर दी । यह प्रथम आर्य समाज है जिसका स्थापना दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपद को प्रतिवर्ष मनाया जाता है ।

सेठ मथुरादास हौजी, सेवकलाल करसन दास, गिरिधारी लाल, दयाल दास कोठरी बी. ए. एल. एल. बी., आदि सज्जनों

ने इस शुभ कार्य में पूरे उद्योग और लगन से कार्य किया। इनके साथ पौराणिकों की ओर से नाना अत्याचार भी हुए, सर्व साधारण में निंदा भी की गई, परन्तु ये अपने शुभ संकल्प पर दृढ़ रहे और समाज की उन्नति में सदा तत्पर रहे। इस समय आर्य समाज के सभासदों की संख्या लगभग सौ थी। साप्ताहिक अधिवेशन का समय प्रारम्भ में प्रति शनिवार सायं काल निश्चित हुआ। पीछे सभासदों की अनुकूलता के अनुसार रविवार का समय निश्चित किया गया। जो सर्वत्र अब तक प्रचलित है।

बम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना के समय आर्य समाज के अट्ठाइस नियम स्वीकृत हुए।

इसके पश्चात् ज्येष्ठ शुक्ल १३ सं० १९३४ वि (२४ जून सं० १८७७ ई० को डाक्टर रहीमखां की कोठी में लाहौर आर्य समाज की स्थापना हुई। ईश्वरोपासन और हवन के पश्चात् विधिवत् आर्य समाज जी स्थापना का कार्य महर्षि के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ। बम्बई में आर्य समाज के अट्ठाइस नियम बनाये गये थे, अनुभव के आधार पर महर्षिने उनमें से उद्देश्य और मन्तव्य परक नियमों को पृथक कर उनको संशोधित रुप में बना दिया जो लाहौर आर्य समाज की स्थापना के साथ महर्षि द्वारा प्रचारित दश नियम ही आजतक स्वीकृत नियम चलेआते हैं। अब स्वामी जी स्थान स्थान पर आर्य समाज की स्थापना के साथ व्याख्यान शास्त्रार्थ ग्रन्थ परिणयन आदि भी करते रहे। ग्रन्थों के छपाने के लिये स्वकीय यन्त्रालय की स्थापना कर दी। जो काशी प्रयाग आदि स्थानों में परिवर्त्तन होता हुआ अजमेर में निश्चित हो गया।

स्वामी जी ने पञ्जाब में रावल पिण्डी मुलतान, उत्तर प्रदेश विहार में दानापुर आदि सौराष्ट्र बंगाल आदि प्रान्तो में अनेक आर्य समाज स्थापित किये। राष्ट्रभाषा, गोरक्षा, मातृ शक्ति से मानव उन्नति, विधवाओं का उद्धार, अछूतोद्धार

आन्ध्र प्रदेश तथा तामिलनाडु प्रदेश में समुद्री तूफ़ान की भयानक विनाशलीला

प्रादेशिक सभा द्वारा विशाल स्तर पर सहायता कार्य प्रारम्भ

जैसा कि आपको विदित्त ही है कि आन्ध्र प्रदेश तथा तामिलनाडु प्रदेश के समुद्र तटीय भागों में समुद्र तूफान से भयानक विनाशकारी दृश्य उपस्थित हो गया है। इस तूफान से लगभग दस लाख व्यक्तियों, पशुओं तथा कृषि की हानि होने का अनुमान लगाया गया है। इन क्षेत्रों के आज लाखों लोग दाने-दाने को मोहताज होकर भुख से पीड़ित, सर छुपाने के लिए इधर-उधर भटक रहे हैं।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, देश के किसी भी भाग पर आई विपत्ति का सामना करने के लिये सदैव तत्पर रही है। सभा ने अपनी प्राचीन गौरव मयी परम्परानुनार प्रत्येक आपत्तिकाल में तन-मन तथा धन से मानव मात्र की सेवा की है। सभा ने ईस समुद्री तूफानों से पीड़ितों के सहायताथ अपने सहायता शिविर केन्द्र, प्रिंसिपल देवराज गुप्ता दयानन्द कालेज, शोलापुर, के सुसंचालन में शोलापुर तथा अन्य पीड़ित स्थानों में प्रारम्भ कर दिए हैं।

इसके अतिरिक्त सभाने २५० अनाथ बालक बालिकाओं को अपने फिरोजपुर स्थित, आर्य अनाथालय में पालन पोषण तथा उन्हें सुशिक्षित बनाने के लिये प्रधान मंत्री भारत सरकार, मुख्य मंत्री आन्ध्र प्रदेश व तामिल नाडु तथा अन्य संबन्धित अधिकारीयों को तार भेज कर तूफ़ान से पीड़ित अनाथ हुए बच्चों को, भोजने की प्रार्थना की है।

भारत भर की समस्त आर्य समाजों, स्त्री समाजों, डी.ए.वी. संस्थाओं तथा अन्य आर्य शिक्षण संस्थाओं से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य में सहायता सामग्री जैसे वस्त्र, औषधियां तथा बिस्कुट एवं नकद धनराशि एकत्रित करके ड्राफ्ट. चेक

अथवा मनीआर्डर द्वारा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१, के पते पर भेजने की कृपा कर, इस विपत्ति का सामना करने में भरपुर सहयोग दें।

भवदीय

सूरज भान
प्रधान

रामनाथ सहगल
मन्त्री

शोक सभा

आज दिनांक ३० अक्टूबर, १९७७ को आर्यसमाज कलकत्ता के हॉल में कलकत्ता के सभी आर्यसमाजों के सदस्यों एवं गणमान्य सज्जनों द्वारा आयोजित शोक सभा डा० हीरालाल चोपड़ा की अध्यक्षता में उपस्थित सभी आर्य जन आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी विद्वान् महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती के निधन, "जो कि दिल्ली में गत सोमवार दिनांक २४ अक्टूबर, १९७७ को ९६ वर्ष की आयु में हो गया है," पर हार्दिक शोक प्रकट करते हैं। स्वामी जी के निधन से आर्य जगत् की अपूर्णनीय क्षति हुई है। वैदिक धर्म के प्रचार में महात्मा आनन्द स्वामी ने सम्पूर्ण जीवन लगाया।

समस्त आर्य जगत् उनके निधन से शोक संतप्त है। सभी आर्य जन परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सत्गति प्रदान करें।

गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास की ओर से पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री जी के आकस्मिक निधन पर शोक श्रद्धांजलि

आज दि० १०-११-७७ को प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता और संसद सदस्य अद्वितीय वक्तृत्व शक्ति के प्रतीक तीव्रबुद्धि एवं महान व्यक्तित्व के मालिक पूज्य पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री की आकस्मिक दुःखद निधन सूचना पाकर समस्त आर्य जगत् स्तम्भित सा रह गया। उनके सुरलोक प्रयाण से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है।

हम गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यासस्थ अन्तेवासी तथा वन-वासी परिवार की ओर से शोक सन्तप्त हृदय से उन्हें श्रद्धांजलि

अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को सत्गति तथा विरहाकुल पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें ।

गुरुकुल वैदिकाश्रम वेद्व्यास की अपार क्षति

गुरुकुल वैदिकाश्रम वेदव्यास के कुलमाता यशस्वीनी समाज-सेवी, आर्य समाज प्रचारिका, हर समय उठते, बैठते सोते जागते गुरुकुल के उन्नति के शुभ चिन्तिका, जमशेदपुर के गलि-गलि में आश्रम के लिये घूम-घूम कर अर्थ संग्रह करने वाली श्री मती मयादेवी कोच्छर के आकस्मिक निधन से अधीर यह समस्त कुलवासियों की वृहत सभा अपने कुलमाता कीं गुण गौरव गाथा मात्र शेष स्वरुप सोच-सोच कर जिस अंतल-स्पर्शी शोक सागर में निमग्न हैं, उससे उन्मग्न न हो सकने के कारण जो असह्य वेदना हो रहा है, उसका चित्रण चतुर चित्रकार भी न कर पायेगा । परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति दे और उनके असह्य वियोग से व्याकुल कुलवासियों तथा उनके परिवारों को असह्य शोक सहन की शक्ति तथा गुरुकुलों की उनकी अपूरणीय क्षति की पूर्त्ति का वरदान दे ।

प्रकाशक— स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा शान्ति आश्रम प्रेस, गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास, राउरकेला - ४ में मुद्रित ॥